सोशल मीडिया से जुड़ें
Parivehan_Vishesh

RNI No :- DELHIN/2023/86499
DCP Licensing Number :
F.2 (P-2) Press/2023

www.newsparivahan.com

परिवहन विशेष

वर्ष 03, अंक 192, नई दिल्ली, शुक्रवार 19 सितंबर 2025, मूल्य ₹ 5, पेज 8

देश का पहला ट्रांसपोर्ट दैनिक समाचार पत्र

आज का सुविचार

किसी भी जीवन में आपका एकमात्र दायित्व स्वयं के प्रति सच्चा होना है।

03 *चार इंजन की भाजपा सरकार निकम्मी, सड़कों पर बह रहा सीवर का गंदा पानी -
06 महाराजा अग्रसेन का जीवन
08 एक शाम गौमाता के नाम जागरण 23 को

प्रधानमंत्री जन्मदिवस पर वृद्धा पेंशन योजना राजनीतिक स्टंट या कुछ खास लोगों को फायदा पहुंचाने का प्रयास

संजय बाटला

नई दिल्ली। यह सच है की कोई भी योजना शुरू करना एक सरकारी तंत्र है पर क्या उसमे कुछ खास लोगों या गिनती के लोगों को फायदा पहुंचाना एक सही प्रक्रिया का प्रतीक है।

प्रधानमंत्री जन्मदिवस पर घोषित वृद्धा पेंशन योजना भी इसी कटघरे मे आती हैं क्योंकि भारत सरकार जब भी कोई इस प्रकार की घोषणा करती हैं तो उसके लिए आधार कार्ड अनिवार्य रहता है।

यहां कुछ महत्वपूर्ण सवाल है क्या इसके जवाब भारत सरकार द्वारा जनता के समक्ष प्रस्तुत करेगा

1. क्या भारत देश में 60 साल या उससे अधिक उम्र के भारतवासियों का पूर्ण ब्यौरा भारत सरकार के पास उपलब्ध नहीं हैं ?
2. क्या आधार कार्ड, पेन कार्ड, बैंक खाता आपस मे जुड़े हुए नही है ?
3. क्या भारत सरकार का मानना है की कुल जनता में से मात्र 80000 लॉग ही इस योजना से फायदा चाहते है ?
4. क्या भारत सरकार बता सकती हैं की यह 80000 लोग किस श्रेणी से संबंधित है जिन्हें इस योजना का फायदा देना उद्देश्य रखा गया है ?
5. क्या आप जानते है वृद्धाश्रम में सबसे अधिक वृद्ध अमीर श्रेणी के परिवार से संबंधित होते हैं पर वृद्धाश्रमों में जीने को मोहताज है क्या उनको इस योजना का फायदा नही मिलना चाहिए ?
6. क्या इन सब हालातों को मद्देनजर रखते हुए सबसे पहला हक वृद्धा पेंशन योजना पर इनके नहीं बनता जो दुनिया की नजर में अमीर है पर अंदर से अपनो के कारण मजबूर ?
7. क्या गरीब तबके के वृद्ध को इस वृद्धा पेंशन योजना का फायदा नहीं मिलना चाहिए जो ऑनलाइन आवेदन तक करने के लिए किसी और पर आश्रित है ?
8. क्या भारत सरकार जानती है की जिन भारतीयों को इस प्रकार की योजनाओं की सबसे अधिक जरूरत है उनमें से कितने लोगो की पेंशन इस योजना के अंतर्गत शुरू हुई ?

सवाल तो बहुत से और भी उठ जाएंगे और वो भी सिर्फ इस योजना पर नही अन्यों पर भी पर हल सिर्फ एक है भारत सरकार या राज्य सरकार जा भी जनहित का नाम लेकर कोई योजना/ स्कीम घोषित करे तो उसके लिए आवेदन प्रक्रिया की जगह सीधा डाटा बेस के आधार पर लागू कर जनता को सूचित करे की अपने बैंक में जहां खाता है वहां पर अपनी स्कीम से संबंधित जो दस्तावेज आनलाइन उपलब्ध नहीं है जमा करवाकर योजना/ स्कीम का फायदा उठाएं।

जनहित में जारी

टेंपल आफ लिबरलाइजेशन एंड वेलफेयर अलाइड ट्रस्ट (पंजीकृत)

मानव अधिकार : स्वास्थ्य का अधिकार

पिंकी कुंडू, महासचिव टोलवा ट्रस्ट
सदस्य बंगाली प्रकोष्ठ दिल्ली प्रदेश भाजपा

हर इंसान का मौलिक मानव अधिकार माना गया है। संयुक्त राष्ट्र के यूंडीएचआर (Universal Declaration of Human Rights) (1948) और आईसीई और सीआर (International Covenant on Economic, Social and Cultural Rights) (1966) में स्पष्ट किया गया है कि हर व्यक्ति को शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य का सर्वोच्च स्तर पाने का अधिकार है।

विवाद और चुनौतियाँ

1. कानूनी मान्यता में भिन्नता – कई देशों में स्वास्थ्य को मौलिक अधिकार के रूप में मान्यता मिली है, लेकिन कई जगह यह केवल नीति-निर्देशक सिद्धांतों तक सीमित है।
2. स्वास्थ्य सेवाओं की असमानता – शहरी और ग्रामीण क्षेत्रों में स्वास्थ्य सुविधाओं में बड़ा अंतर है।
3. निजीकरण और खर्च – निजी अस्पतालों की महंगाई, दवाइयों की कीमतें और सरकारी अस्पतालों की कमी विवाद को और गहरा करते हैं।
4. गुणवत्ता बनाम उपलब्धता – केवल स्वास्थ्य सुविधा का होना काफी नहीं है, उसकी गुणवत्ता और सबको बराबर पहुँच सबसे बड़ी चुनौती है।

भारत की स्थिति

1. भारत में संविधान में स्वास्थ्य को मौलिक अधिकार नहीं कहा गया है, लेकिन अनुच्छेद 21 (जीवन का अधिकार) के दायरे में सुप्रीम कोर्ट ने इसे शामिल किया है।
2. अनुच्छेद 47 – राज्य पर यह जिम्मेदारी डालता है कि लोगों का स्वास्थ्य स्तर सुधारे।
3. राष्ट्रीय स्वास्थ्य नीति 2017 और आयुष्मान भारत योजना जैसे कदम उठाए गए हैं।

वास्तविकता – आज भी ग्रामीण इलाकों में डॉक्टरों की कमी, दवाइयों की अनुपलब्धता और सरकारी अस्पतालों की लचर हालत आम समस्या है।

पड़ोसी देशों की स्थिति

नेपाल – संविधान में स्वास्थ्य को मौलिक अधिकार घोषित किया गया है।

भूटान – नागरिकों को मुफ्त स्वास्थ्य सेवा उपलब्ध कराने का दावा करता है।

श्रीलंका – लंबे समय से मुफ्त स्वास्थ्य सेवाओं की व्यवस्था है, लेकिन संसाधनों की कमी है।

पाकिस्तान और बांग्लादेश – दोनों देशों में स्वास्थ्य सेवाएँ सीमित हैं, और बड़े पैमाने पर गरीबी व भ्रष्टाचार इन सेवाओं को प्रभावित करते हैं।

मालदीव – छोटा देश होने के बावजूद, बेहतर स्वास्थ्य ढाँचे पर काम कर रहा है, लेकिन आयातित दवाइयों पर निर्भर है।

कानून बनाम वास्तविकता

कानून – कागज़ों पर स्वास्थ्य सभी का अधिकार है और सरकारों की ज़िम्मेदारी है कि इसे समान रूप से उपलब्ध कराएँ।

वास्तविकता – स्वास्थ्य सेवाएँ अक्सर अमीर-गरीब, ग्रामीण-शहरी और निजी-सरकारी के बीच बंटी रहती हैं। महामारी (जैसे कोविड-19) ने यह दिखा दिया कि कानून और नीतियाँ पर्याप्त नहीं हैं, बल्कि स्वास्थ्य ढाँचे, संसाधन और राजनीतिक इच्छाशक्ति सबसे ज़रूरी हैं।

संक्षेप में कहा जाए तो स्वास्थ्य का अधिकार कानून में है, लेकिन वास्तविकता में यह अब भी अधूरा सपना है। जब तक हर व्यक्ति, उसकी आर्थिक स्थिति और भौगोलिक स्थान की परवाह किए बिना, गुणवत्तापूर्ण स्वास्थ्य सेवाओं का लाभ नहीं ले पाता, तब तक यह अधिकार अधूरा ही रहेगा।

टोलवा ट्रस्ट पंजीकृत
tolwaindia@gmail.com

रजिस्ट्रार के आदेश को ठेंगा दिखाकर 21 को कानपुर में चुनाव कराएगा यूपी एम टी ए

सुनील बाजपेई

कानपुर। यहां के डिप्टी रजिस्ट्रार द्वारा संस्था को उसके ही संविधान के नियमों के खिलाफ गैरकानूनी और औचित्यहीन घोषित किए जाने के बाद भी उत्तर प्रदेश मोटर्स ट्रांसपोर्ट एसोसिएशन (यूपी एम टी ए) 21 सितंबर को अपना चुनाव जबरन कराने पर तुला हुआ है। जिसके फलस्वरूप विवाद की स्थिति पैदा होने से कोई भी अप्रिय घटना की प्रबल संभावना को लेकर ट्रांसपोर्टर भी चिंतित हैं। उन्होंने इस मामले में जिलाधिकारी और रजिस्ट्रार से भी से भी हस्तक्षेप करके अनुचित तरीके से नियम के विरुद्ध कराए जा रहे यूपीएमटीए के चुनाव पर रोक लगाने की मांग की है।

इसके खिलाफ ट्रांसपोर्टर व्यापारियों के हित को देखते हुए एक महत्वपूर्ण बैठक में रजिस्ट्रार द्वारा संस्था और उसके पदाधिकारियों को कालातीत घोषित किए जाने के बाद भी जबरन चुनाव कराये जाने का प्रबल विरोध भी किया गया।

याद रहे कि डिप्टी रजिस्टार फण्डस सोसाइटी एवं चिटस द्वारा जारी एक आदेश निर्देश में साफ लिखा गया है कि संस्था के निर्वाचन दिनांक 26/27 जून 2022 को लेकर विवाद की स्थिति नहीं है। जिसका 02 वर्षीय कार्यकाल समाप्त हो चुका है। ऐसी स्थिति में संस्था की प्रबन्ध समिति सो० रजि० अधि० 1860 की धारा 25 (2) के अन्तर्गत कालातीत हो गयी है। संस्था के अध्यक्ष पद से अजय कुमार कपूर द्वारा संस्था की नियमावली में संशोधन हेतु अपना आवेदन पत्र दिनांक 04.07.2025 प्रस्तुत किया गया है। जिसके साथ नियमावली संशोधन कार्यवाही साधारण सभा दिनांक 08.03.2025 के साथ संशोधित नियमावली पंजीकृत किये जाने के अनुरोध के साथ प्रस्तुत की गयी है। इस सम्बन्ध में उल्लेखनीय है कि उपरोक्त कार्यवाही दिनांक 08.03.2025 संस्था की प्रबन्ध समिति के कालातीत हो जाने के उपरान्त सम्पन्न दर्शायी गयी है। जिसे स्वीकार किया जाना विधिक रूप से औचित्यपूर्ण नहीं है। यह भी उल्लेखनीय है कि कालातीत प्रबन्ध समिति का निर्वाचन सम्पन्न कराया जाना सो० रजि० अधि 1860 की धारा 25 (2) के प्रावधानो के अन्तर्गत अधोहस्ताक्षरी के क्षेत्राधिकार - का विषय है। ऐसी स्थिति में किसी अन्य निर्वाचन का कोई विधिक औचित्य नहीं है।

इस जारी आदेश में आगे यह भी लिखा गया है कि उपरोक्त तथ्यो एवं उनकी विवेचना के आधार पर मनीष कटारिया तत्कालीन महामंत्री एवं अजय कुमार कपूर तत्कालीन अध्यक्ष के संस्था के नियमावली संशोधन सम्बन्धी दावों / प्रपत्रों को अमान्य किया जाता है तथा संस्था की प्रबन्ध समिति को सो० रजि० अधि 1860 की धारा 25 (2) के अन्तर्गत कालातीत घोषित किया जाता है।

उप निबंधक द्वारा जारी इस आदेश में यह भी कहा गया है कि संस्था के कालातीत अध्यक्ष अजय कुमार कपूर व कालातीत महामंत्री श्री मनीष कटारिया को सदस्यों की सूची मय साक्ष्यों सहित 02 माह में कार्यालय में प्रस्तुत करें। आदेश में मा.उच्च न्यायालय इलाहाबाद द्वारा रिट याचिका के अनुपालन में ही प्रकरण को विस्तारित किए जाने की भी बात कही गई है। जहां तक चुनाव को लेकर अप ता की सक्रियता का सवाल है। इस बारे में महामंत्री मनीष कठेरिया द्वारा 21 सितंबर को चुनाव कराए जाने से संबंधित भेजे जा रहे संदेश भी ट्रांसपोर्टरों में चर्चा का विषय बने हुए हैं।

फिलहाल सरकारी तौर पर रजिस्टर कार्यालय द्वारा जारी किए गए आदेश के अनुरूप काम किया जाएगा या फिर उसके विरुद्ध नियम कानून और संविधान को ठेंगा दिखाकर यूपी एम टी ए चुनाव कराया जाएगा। इस सवाल का जवाब आने वाला वक्त ही बताएगा।

टेंपल आफ लिबरलाइजेशन एंड वेलफेयर अलाइड ट्रस्ट पंजीकृत के सदस्य बनने के लिए नीचे दिए गए गूगल फार्म पर क्लिक करें और भरकर जमा करे, पिंकी कुंडू, महासचिव टोलवा ट्रस्ट (पंजीकृत अंडर सेक्शन 60), नीति आयोग भारत सरकार द्वारा मान्यता प्राप्त, एमएसएमई में पंजीकृत
https://forms.gle/VEThcFgMcknGFc1u9

TEMPLE OF LIBERALIZATION AND SOCIAL WELFARE ALLIED TRUST REGT.
MEMBERSHIP FORM FOR TOLWA TRUST
transportvisheshcontent@gmail.com Switch account
The name, email, and photo associated with your Google account will be recorded when you upload files and submit this form
* Indicates required question
How you got aware about TOLWA trust *
Social Media
News Paper
Personal connection
Youtube
Social Function/ RTO/friends/family

टेंपल्स ऑफ लिबरलाइजेशन एंड वेलफेयर एलाइड ट्रस्ट (पंजीकृत)
TOLWA
website : www.tolwa.in
Email : tolwadelhi@gmail.com
bathlasanjaybathla@gmail.com
रजिस्टर्ड अंडर सैक्शन 60 विद रजिस्ट्रेशन नंबर (152/02-03-2020), एमएसएमई रजिस्ट्रेशन नंबर उद्यम -डीएल - 0026470, नीति आयोग रजिस्ट्रेशन नंबर वीओ/एनजीओ/0303274/25-01-2022 दर्पण
रजिस्टर्ड कार्यालय :- 3, प्रियदर्शिनी अपार्टमेंट, ए -4 पश्चिम विहार, न्यू दिल्ली 110063
कॉरपोरेट कार्यालय :- 529, समयपुर, मैन बवाना रोड, नियर बैंक ऑफ़ बड़ौदा दिल्ली 110042

स्टॉल प्रस्ताव :
सिंगल साइड ओपन स्टोल : 2000
कॉर्नर साइड स्टोल : 3500
तीन साइड ओपन स्टोल : 4500
सिर्फ एक टेबल : 1000
सिर्फ दो टेबल : 1250

कार्यक्रम विवरण :
रक्षा गरबा-डांडिया और दुर्गा पूजा महोत्सव
स्थान : डीडीए ग्राउंड, रामलीला ग्राउंड के सामने, स्टेट ट्रांसपोर्ट अथॉरिटी के बगल में, PNB बैंक के पीछे, सेक्टर 10, द्वारका, नई दिल्ली 110075

तारीखें : 22 सितंबर से 2 अक्टूबर 2025
* दुकान का आकार : 10 फीट x 10 फीट
* शामिल सुविधाएँ :
* 2 कुर्सियाँ * 2 टेबल
*लाइट व चार्जिंग प्वाइंट

भुगतान की शर्तें :
* अग्रिम भुगतान आवश्यक
* बुकिंग के समय 50% भुगतान
* कब्जे के समय 50% भुगतान

संपर्क : इंदु राजपूत
मोबाइल : 9210210071

विशेष सूचना
नवरात्रि में मातारानी की खंडित मूर्तियाँ, टूटे हुए फ़ोटो, पुरानी चुनरियाँ और नवरात्रि में बोए गए जवारों का विसर्जन
● दशहरे के दूसरे दिन
● दिनांक : 3 अक्टूबर की सुबह
● स्थान : रक्षा नवरात्रि गरबा एवं दुर्गा पूजा ग्राउंड
स्थान विवरण :
रामलीला मैदान के सामने,
आरटीओ ऑथोरिटी के पास,
सेक्टर 10 डीडीए ग्राउंड, नई दिल्ली
संपर्क सूत्र : इंदु राजपूत, मोबाइल : 9210210071
सभी श्रद्धालुओं से निवेदन है कि इस पावन विसर्जन में सहभागी बनें।

रक्षा द सेवियर एवं टेंपल्स ऑफ लिबरलाइजेशन एंड वेलफेयर एलाइड ट्रस्ट (पंजीकृत) की ओर से

गरबा महोत्सव में विशेष अपील
हमारी रक्षा द सेवियर एवं टेंपल्स ऑफ लिबरलाइजेशन एंड वेलफेयर एलाइड ट्रस्ट (पंजीकृत) की ओर से रक्षा गरबा डांडिया एवं दुर्गा पूजा महोत्सव में आने वाले सभी लोगों से विनम्र निवेदन है–
इस नवरात्रि एक सेवा ड्राइव चलाई जा रही है

आप अपने घर से लाएँ और दान करें:
● पुराने कपड़े
● पुराने कंबल
● पुराने जूते-चप्पल
● बच्चों के लिए बैग
● किताबें
आपका छोटा-सा योगदान किसी ज़रूरतमंद के जीवन में बड़ा बदलाव ला सकता है
स्थान : रक्षा गरबा डांडिया एवं दुर्गा पूजा महोत्सव
रामलीला मैदान के सामने, आरटीओ ऑथोरिटी के पास
सेक्टर 10 डीडीए ग्राउंड, नई दिल्ली
इंदु राजपूत – 9210210071,
अभिषेक राजपूत 83928 02013,
पिंकी कुंडू 7053533169

रामकथा में महादेव का दिव्य ज्ञान: जब-जब धर्म की हानि, तब-तब प्रभु का अवतार !

सुखी भारती

हे पार्वती ! वेद-शास्त्रों ने अनादि काल से ही भगवान विष्णु के चरित्रों का गान किया है। वे चरित्र शीतल चन्द्रकिरणों के समान निर्मल, जीवनदायिनी और परमार्थ को आलोकित करने वाले हैं। श्रीहरि का अवतरण क्यों होता है, इसका एक मात्र कारण बताना सम्भव नहीं।

भगवान शंकर, जो स्वयं अद्वितीय महादेव हैं, जिनके मस्तक पर गंगाधारा शोभित है, जिनके कंठ में हलाहल का विष अलंकृत है, और जिनकी जटाओं में अनन्त ब्रह्माण्डों की ध्वनियाँ गूँजती रहती हैं—वे ही आज अपने पावन श्रीमुख से जगतपावनी श्रीरामकथा का अमृतपान करवाते हैं। उनकी दिव्यवाणी से ऐसा प्रतीत होता है मानो किसी आकाशगंगा से अमृत के निर्झर फूट रहे हों, और जगतजननी पार्वती उसी अमृत को श्रद्धापूर्वक, आदरभाव से, घूँट-घूँट पी रही हों।

भोलेनाथ जब कथा का आरम्भ करते हैं, तो उनके अधरों से वेदवाणी समान पवित्र चौपाई प्रस्फुटित होती है—

"सुनु गिरिजा हरिचरित सुहाए।
बिपुल बिसद निगमागम गाए।।
हरि अवतार हेतु जेहि होई।
इदमित्थं कहि जाइ न सोई।।''

हे पार्वती ! वेद-शास्त्रों ने अनादि काल से ही भगवान विष्णु के चरित्रों का गान किया है। वे चरित्र शीतल चन्द्रकिरणों के समान निर्मल, जीवनदायिनी और परमार्थ को आलोकित करने वाले हैं। श्रीहरि का अवतरण क्यों होता है, इसका एक मात्र कारण बताना सम्भव नहीं। प्रभु के अवतारों के अनन्त कारण हो सकते हैं, जिन्हें सीमित बुद्धि वाला कोई प्राणी पूर्ण रूप से जान ही नहीं सकता।

जगद्गुरु शंकर आगे समझाते हैं कि जो लोग यह दावा करते हैं कि ईश्वर के अवतरण का केवल एक ही कारण है, वे वस्तुतः उसी प्रकार हैं जैसे कोई अज्ञानी व्यक्ति महासागर की एक बूँद को हथेली पर रखकर यह कह दे कि उसने सागर की सम्पूर्ण गहराई नाप ली। यह मूर्खता और अल्पज्ञान का ही परिचायक है। सागर की तरह ईश्वर की महिमा भी अगाध है, उसकी प्रत्येक बूँद में नूतन रहस्य और गूढ़ तत्त्व छिपे हैं।

यद्यपि भगवान शंकर स्वयं सर्वज्ञ, सर्वव्यापक और साक्षात ईश्वर हैं, तथापि विनम्रता उनका अलंकार है। वे अपनी विराटता का बखान करने में तनिक भी संकोच न रखते हुए भी, पार्वती से बड़े विनीत भाव से कहते हैं—

"तस मैं सुमुखि सुनावउँ तोही।
समुझि परइ जस कारन मोही।।
जब जब होई धरम कै हानी।
बाढ़हिं असुर अधम अभिमानी।।
करहिं अनीति जाइ नहिं बरनी।
सीदहिं बिप्र धेनु सुर धरनी।।
तब तब प्रभु धरि बिबिध सरीरा।
हरहिं कृपानिधि सज्जन पीरा।।''

अर्थात्—हे सुमुखि ! मुझे जो कारण समझ में आता है, वही मैं तुम्हें सुनाता हूँ। जब-जब धर्म की हानि होती है और अधम, अभिमानी असुर अत्याचारों से भर उठते हैं; जब-जब वे अपने अन्याय और दुष्टकर्मों से ब्राह्मणों, गौओं, देवताओं और धरती माता को पीड़ा पहुँचाते हैं, तब-तब कृपानिधान भगवान विविध प्रकार के दिव्य अवतार धारण करके सज्जनों की रक्षा करते हैं।

देवी पार्वती शंकर की वाणी सुनकर गहन चिन्तन में पड़ जाती हैं। उनके अंतर्मन में प्रश्न उठता है—"आख़िर दुष्ट जन पाप करने के लिए विवश क्यों होते हैं? वे भी तो भक्तों की तरह शान्तिपूर्वक, सौहार्द्र से, सबके साथ मिलकर क्यों नहीं रहते? यदि वे सहजता और भलाई का मार्ग अपनाएँ तो समस्त चराचर को सुख मिल सकता है।"

तब वे समझती हैं कि यह प्रश्न भी स्वयं स्वभाव और संस्कार के बन्धन में उलझा है। प्रत्येक प्राणी अपने स्वभाव, गुण और कर्म से बँधा होता है। जैसे अग्नि का स्वभाव जलाना है और जल का स्वभाव शीतलता देना, वैसे ही दुष्टों का स्वभाव कष्ट पहुँचाना ही होता है। स्वभाव परिवर्तन दुर्लभ है, क्योंकि वह अनादि कर्मों का परिणाम है।

यद्यपि प्रत्येक प्राणी को अपने मतानुसार जीने का अधिकार है, किन्तु जब किसी का स्वभाव समाज की शान्ति और धर्म की मर्यादा पर चोट करने लगता है, जब उसका आचरण निर्दोष जीवों को आँसुओं में डुबो देता है, तब उसका निवारण अनिवार्य हो जाता है। यही धर्म का न्याय है।

यदि कोई साधारण पुरुष दुष्टों के अत्याचार का प्रतिकार करता है तो वह समाजसेवी कहलाता है। परन्तु उसकी सामर्थ्य सीमित होती है, क्योंकि मनुष्य सीमाओं से बँधा है। किन्तु जब वही कार्य स्वयं परमेश्वर करते हैं, जब वे मानव रूप धारण कर सज्जनों की रक्षा और दुष्टों का संहार करते हैं, तब उस दिव्य प्राकट्य को "अवतार" कहा जाता है।

रामावतार भी इसी सनातन धर्म का मूर्तिमान रूप है। मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम का अवतरण केवल रावण वध तक सीमित नहीं था। उनके जीवन की प्रत्येक लीला में आदर्श, कर्तव्यपरायणता और धर्म का संदेश निहित है। वे पुत्रधर्म का निर्वाह करने वाले, भ्रातृप्रेम के प्रतिमान, मित्रता के सच्चे अनुयायी, प्रजावत्सल राजा और करुणासागर भगवान हैं। उनके चरणों में सम्पूर्ण मानवता के लिए आचरण का सजीव मार्गदर्शन है।

इसीलिए भगवान शंकर बार-बार यह संकेत देते हैं कि ईश्वर के अवतार का एकमात्र कारण खोजना व्यर्थ है। कारण अनेक हैं, जो अनन्त हैं, और जिन्हें केवल वही जान सकता है जो सर्वज्ञ है।

पार्वती अब समझने लगती हैं कि संसार का संचालन केवल कर्म और फल के न्याय से नहीं, बल्कि ईश्वर की करुणा से भी होता है। जब दुष्टों की अन्यायपूर्ण प्रवृत्ति असह्य हो जाती है और सज्जन प्राणी आश्रु बहाने लगते हैं, तब प्रभु का अवतरण निश्चित हो जाता है। यही उनकी अनुकम्पा का नियम है।

रामकथा केवल युद्ध और वध की कथा नहीं है, यह धर्म और मर्यादा की कथा है। यह कथा सिखाती है कि अन्याय के विरुद्ध खड़ा होना भी उतना ही आवश्यक है जितना कि करुणा और प्रेम का पालन करना।

अवतार का रहस्य इतना गहन है कि शंकर जैसे सर्वज्ञ देवता भी केवल एक अंश का ही वर्णन कर पाते हैं। यह वही रहस्य है जिसे सुनकर जगतजननी पार्वती भी समाधि में लीन हो जाती हैं।

अवतार का यह अद्भुत रहस्य अगले प्रसंग में और अधिक प्रकाश में आएगा—

क्रमशः...

मैग्नीशियम की कमी के 5 चेतावनी संकेत जिन्हें आपको नज़रअंदाज़ नहीं करना चाहिए

300 से ज़्यादा शारीरिक प्रक्रियाओं के लिए ज़रूरी होने के बावजूद, मैग्नीशियम एक ऐसा पोषक तत्व है जिसकी कमी अक्सर देखी जाती है। यकीन मानिए या नहीं, आँकड़े बताते हैं कि लगभग 80 प्रतिशत अमेरिकी आबादी में मैग्नीशियम की कमी है। दुर्भाग्य से, इस पोषक तत्व की कमी कई अप्रिय लक्षणों का कारण बनती है, इसलिए इसका समय पर इलाज ज़रूरी है। शरीर में मैग्नीशियम के प्रमुख कार्यों के बारे में और जानने के लिए लेख पढ़ते रहें...

शरीर में मैग्नीशियम की प्रमुख भूमिकाएँ

मांसपेशियों और तंत्रिकाओं का सक्रियण

एटीपी के सक्रियण के माध्यम से शरीर को ऊर्जा प्रदान करना

डीएनए और आरएनए के संश्लेषण के लिए एक निर्माण खंड सेरोटोनिन और अन्य महत्वपूर्ण न्यूरोट्रांसमीटर के लिए एक महत्वपूर्ण अग्रदूत

प्रोटीन, कार्बोहाइड्रेट और वसा के पाचन को बढ़ाता है हृदय स्वास्थ्य के लिए आवश्यक मैग्नीशियम की कमी बढ़ रही है

आज मैग्नीशियम से भरपूर विभिन्न प्रकार के खाद्य पदार्थों की बढ़ती उपलब्धता के बावजूद, लोगों में अक्सर मैग्नीशियम की कमी का निदान किया जाता है। तो, ऐसा क्यों हो रहा है? विशेषज्ञों का मानना है कि इसका कारण आधुनिक कृषि तकनीकों के कारण मिट्टी से मैग्नीशियम की कमी है। यानी, लगभग सौ साल पहले, एक औसत व्यक्ति अपने आहार से लगभग 500 मिलीग्राम मैग्नीशियम प्राप्त करता था, जबकि आज यह संख्या घटकर 200 मिलीग्राम रह गई है।

परिणामस्वरूप; हममें से बहुत से लोगों को अनुशंसित दैनिक मात्रा प्राप्त करने के लिए मैग्नीशियम सप्लीमेंट का सहारा लेना पड़ता है। आपको समय पर यह पहचानने में मदद करने के लिए कि क्या आपके शरीर में मैग्नीशियम की कमी है, हम आपको ऐसे 5 प्रमुख लक्षण बताएँगे जिन्हें कभी भी नज़रअंदाज़ नहीं करना चाहिए। अगर आप इन्हें देखते हैं, तो सप्लीमेंट के बारे में अपने डॉक्टर से सलाह लें और इस महत्वपूर्ण खनिज से भरपूर खाद्य पदार्थों का सेवन बढ़ाएँ।

एज़ोइक

मैग्नीशियम की कमी के 5 मुख्य लक्षण

थकान और कमजोर मांसपेशियां

थकान एक ऐसी स्थिति है जो मानसिक और शारीरिक कमज़ोरी के रूप में प्रकट होती है और जो लंबे समय तक बनी रहती है, और मैग्नीशियम की कमी का संकेत हो सकती है। हालाँकि कभी-कभार थकान होना सभी में आम है और आमतौर पर नींद और आराम से दूर हो जाती है, लेकिन गंभीर थकान किसी स्वास्थ्य समस्या का संकेत हो सकती है जिसका समाधान ज़रूरी है। मैग्नीशियम की कमी वाले व्यक्तियों में मांसपेशियों में कमज़ोरी भी हो सकती है। ऐसा माना जाता है कि यह मांसपेशियों की कोशिकाओं में पोटेशियम की कमी का परिणाम है, जो मैग्नीशियम की कमी से जुड़ी एक स्थिति है।

2. मरोड़ और ऐंठन

मैग्नीशियम की कमी के कारण मांसपेशियों में ऐंठन, मरोड़ या कंपन हो सकता है। गंभीर मामलों में, इसकी कमी से दौरे भी पड़ सकते हैं। ऐसा माना जाता है कि ऐसा तंत्रिका कोशिकाओं में कैल्शियम के प्रवाह में वृद्धि के कारण होता है, जो मांसपेशियों की तंत्रिकाओं को अत्यधिक उत्तेजित करता है।

एज़ोइक

3. ऑस्टियोपोरोसिस

यह स्वास्थ्य समस्या कमज़ोर हड्डियों और हड्डियों के टूटने के बढ़ते जोखिम से प्रकट होती है। ऑस्टियोपोरोसिस के मुख्य कारणों में अपर्याप्त व्यायाम, विटामिन डी और के का निम्न स्तर और मैग्नीशियम की कमी शामिल है। मैग्नीशियम की कमी सीधे हड्डियों को कमज़ोर करती है और कैल्शियम के स्तर को कम करती है, जबकि कैल्शियम हड्डियों का एक मुख्य निर्माण खंड है।

4. उच्च रक्तचाप

मैग्नीशियम की कमी से रक्तचाप बढ़ सकता है और उच्च रक्तचाप हो सकता है, जो हृदय रोग का एक प्रमुख जोखिम कारक है। मैग्नीशियम की खुराक रक्तचाप को कम करने में सहायक हो सकती है और परिणामस्वरूप, हृदय रोग के जोखिम को कम कर सकती है।

एज़ोइक

5. अनियमित दिल की धड़कन

अतालता (एरिद्मिया) के नाम से भी जानी जाने वाली यह स्वास्थ्य समस्या शरीर में मैग्नीशियम के अपर्याप्त स्तर के कारण हो सकती है। कुछ लोगों को दिल की धड़कन तेज़ हो सकती है। अतालता के अन्य लक्षणों में साँस लेने में तकलीफ़, चक्कर आना और सीने में दर्द शामिल हैं। इसे हृदय की मांसपेशियों की कोशिकाओं के बाहर और अंदर पोटेशियम के असंतुलन का परिणाम माना जाता है, जो मैग्नीशियम की कमी से जुड़ी एक स्थिति है।

मंगला गौरी व्रत कथा का पाठ करने से पूरी होती हैं हर मनोकामना, खुशहाल रहेगा वैवाहिक जीवन

अनन्या मिश्रा

मंगला गौरी व्रत भगवान शिव और मां पार्वती को समर्पित होता है। यह व्रत वैवाहिक सुख और मनचाहे वर की प्राप्ति के लिए रखा जाता है। बता दें कि मंगला गौरी व्रत के दौरान इसकी कथा का पाठ करना महत्वपूर्ण माना जाता है।

मंगला गौरी व्रत भगवान शिव और मां पार्वती को समर्पित होता है। यह व्रत वैवाहिक सुख और मनचाहे वर की प्राप्ति के लिए रखा जाता है। बता दें कि मंगला गौरी व्रत के दौरान इसकी कथा का पाठ करना महत्वपूर्ण माना जाता है। माना जाता है कि यह व्रत करने वाले जातक की सभी मनोकामनाएं पूरी होती हैं। ऐसे में जो भी लोग मंगला गौरी व्रत करते हैं, उन लोगों को इसकी व्रत कथा का पाठ जरूर करना चाहिए। वहीं इस व्रत को करने वाली महिलाओं को अखंड सौभाग्यवती का वरदान प्राप्त होता है। ऐसे में आज इस आर्टिकल के जरिए हम आपको यहां पर मंगला गौरी व्रत कथा के बारे में बताने जा रहे हैं।

मंगला गौरी व्रत कथा

एक समय की बात है कि शहर में धर्मपाल नामक एक व्यापारी रहा करता था। धर्मपाल की पत्नी बहुत ज्यादा खूबसूरत थी और उसके पास काफी ज्यादा संपत्ति थी। लेकिन उनकी कोई संतान नहीं थी। जिस कारण वह काफी ज्यादा दुखी रहा करते थे। हालांकि भगवान की कृपा से उनको एक पुत्र की प्राप्ति हुई, जिसका नाम सोमप्रकाश रखा लेकिन वह अल्पायु था। क्योंकि उनके पुत्र को यह श्राप मिला था कि 16 साल की आयु में सांप काटने से बच्चें की मौत हो जाएगी।

संयोगवश धर्मपाल के बेटे सोमप्रकाश की शादी 16 साल की उम्र से पहले सुमति नामक युवती से हुई। सुमति की मां मंगला गौरी व्रत करती थी और उसने अपनी बेटी सुमति को भी यह व्रत करना सिखाया। शादी के बाद सुमति ने पूरी श्रद्धा और विश्वास से मंगला गौरी का व्रत किया और मां पार्वती से अपने पति की रक्षा के लिए प्रार्थना की। माता मंगला गौरी सुमति की भक्ति से प्रसन्न हुईं और सोमप्रकाश की अकाल मृत्यु को टाल दिया। ऐसे में माता मंगला की कृपा से सोमप्रकाश दीर्घायु और स्वस्थ जीवन जीने लगा। साथ ही सुमति की भक्ति और व्रत के प्रभाव से उनका वैवाहिक जीवन भी सुखी रहा।

इस व्रत के प्रभाव से सोमप्रकाश की आयु 100 साल हुई। जो भी नवविवाहित महिलाएं मंगला गौरी व्रत करती हैं और पूरे श्रद्धा और विश्वास से पूजा करती हैं। उनका वैवाहिक जीवन सुखमय होता है और हर मनोकामना पूरी होती हैं।

नवरात्रि में करें मां दुर्गा के इन चमत्कारी धाम के दर्शन, पाएं अद्भुत शांति का एहसास

अनन्या मिश्रा

देश में देवी दुर्गा के कई ऐसे मंदिर हैं, जहां पर हर नवरात्रि में लाखों की संख्या में भक्त आशीर्वाद प्राप्त करने पहुंचते हैं। ऐसे में अगर इस नवरात्रि आप भी देवी दुर्गा के मंदिरों में दर्शन की योजना बना रहे हैं, तो आज हम आपको भारत के कुछ फेमस मंदिरों के बारे में बताने जा रहे हैं।

भारत देश आस्था, दिव्यता और परंपरा की भूमि है। यहां पर मौजूद हर मंदिर की अपनी अनूठी कहानी है, जो न सिर्फ भक्तों को धार्मिक बल्कि सांस्कृतिक अनुभव भी प्रदान करती है। वहीं देश में नवरात्रि का पर्व बड़ी धूमधाम और हर्षोल्लास के साथ मनाया जाता है। देश में देवी दुर्गा के कई ऐसे मंदिर हैं, जहां पर हर नवरात्रि में लाखों की संख्या में भक्त आशीर्वाद प्राप्त करने पहुंचते हैं। कुछ मंदिर सदियों पुरानी गुफाओं में तो कुछ मंदिर पहाड़ियों की ऊंचाइयों पर स्थित हैं। ऐसे में इस नवरात्रि आप भी देवी दुर्गा के मंदिरों में दर्शन की योजना बना रहे हैं, तो आज इस आर्टिकल के जरिए हम आपको भारत के कुछ फेमस मंदिरों के बारे में बताने जा रहे हैं।

वैष्णो देवी मंदिर

उत्तर भारत का सबसे फेमस तीर्थ स्थल वैष्णों देवी मंदिर त्रिकुटा पर्वत की गुफा में स्थित है। यहां तक पहुंचने के लिए भक्तों को करीब 12 किमी की चढ़ाई करनी होती है। गुफा के अंदर मां वैष्णों के तीन पिंडी के रूप में दर्शन होते हैं। यहां का वातावरण 'जय माता दी' के नारों से गूंजता है।

कामाख्या मंदिर

असम के गुवाहाटी में स्थित कामाख्या मंदिर शक्तिपीठ है। जोकि मां दुर्गा के कामाख्या को समर्पित है। यह मंदिर स्त्री ऊर्जा का प्रतीक मानी जाती है और हर साल यहां पर अम्बुबाची मेला का विशेष रूप से आयोजन होता है। इस मंदिर की वास्तुकला और इसकी आध्यात्मिक महिमा इसको मां दुर्गा के उपासकों के लिए प्रमुख केंद्र बनाती है।

ज्वाला देवी मंदिर

हिमाचल के कांगड़ा जिले में स्थित ज्वाला देवी मंदिर में देवी की कोई मूर्ति नहीं बल्कि एक चमत्कारी अग्नि प्रज्वलित रहती है। इस ज्वाला को दिव्य ज्वाला माना जाता है। ज्वाला देवी मंदिर भारत के सबसे रहस्यमय मंदिरों में से एक है। बताया जाता है कि यहां पर प्राचीन काल से अग्नि ज्योतियां प्रज्वलित रहती हैं। इसको देवी का प्रत्यक्ष स्वरूप माना जाता है।

चामुंडेश्वरी मंदिर

मैसूर की चामुडी पहाड़ियों पर स्थित चामुंडेश्वरी मंदिर भी काफी फेमस है। यह मां दुर्गा का एक उग्र रूप है। यहां तक पहुंचने के लिए भक्तों को 1,000 सीढ़ियां चढ़नी पड़ती हैं। मंदिर के गर्भगृह में जैसे ही श्रद्धालु प्रवेश करते हैं, उनको असीम और अद्भुत आध्यात्मिक शांति का अनुभव होता है। नवरात्रि और खासकर दशहरे के मौके पर यहां भव्य आयोजन होते हैं।

कालीघाट मंदिर

कोलकाता में स्थित कालीघाट मंदिर मां काली को समर्पित है। जिसे मां दुर्गा का एक स्वरूप माना जाता है। कालीघाट मंदिर भारत के प्रमुख शक्तिपीठों में से एक है। जहां पर मां सती के शरीर का एक हिस्सा गिरा था। इस मंदिर का वातावरण हमेशा श्रद्धालुओं की भक्ति और आस्था से भरा रहता है। नवरात्रि के मौके पर इस मंदिर का माहौल अत्यंत दिव्य और उल्लासपूर्ण हो जाता है।

रिश्ता तार-तार किया...!

नशे में धुत पिता बच्चे के दुश्मन हो रहें,
पत्नी का गुस्सा बेटे पर उतारते खो रहें।
दो वर्षीय हर्षित को पटक के मार डाला,
अपनी पत्नी की गोद को उजाड़ डाला।

जुगलाल अक्सर पीता रहता था शराब,
पीके यूं उसकी बुद्धि हो रहीं थी खराब।
पत्नी से कहा हर्षित बिन जी न पाएगा,
स्वयं को दोराहे पे खड़ा देख न पायेगा।

जब दरिंदगी सिर पर हो गई थी सवार,
अपने बेटे पर किया खुद जमकर वार।
फोन कर कहा-"तेरे बेटे को मार दिया
देख रहीं दुनिया रिश्ता तार-तार किया।
(संदर्भ-सरगुजा में नशे में पिता ने बेटे को मार डाला)

संजय एम तराणेकर

जीवन में जीत का अर्थ लड़ाइयाँ केवल लड़ना ही नहीं, बल्कि उन से बचना है। कुशलतापूर्वक पीछे हटना भी अपने आप में एक जीत है....

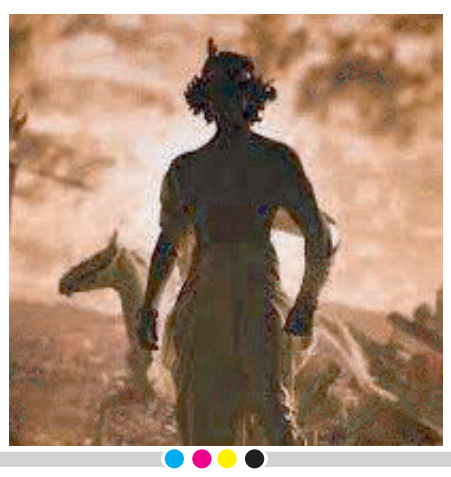

हम अपने भीतर ऐसी शक्ति पैदा करें कि हमें संज्ञान हो सके कि कब हमें लड़ना है, कब केवल सुरक्षात्मक होना है और कब हमें पीछे हटना है। किसी शक्ति का ₹अभिमान₹ हमें ₹शैतान₹ बना सकती है और ₹नम्रता₹ किसी को भी ₹फ़रिश्ता₹ बना देती है। ध्यान रहे कि सफल होते ही दुनिया हमारे भीतर अनेक योग्यता ढूँढ लेती है और असफल होते ही हज़ार कमियाँ, लेकिन संघर्ष के अंधेरे से अपने हौंसले कमजोर न होने दें क्योंकि वक्त का ग्रहण तो सूरज और चांद भी झेलते है।

संकटमोचन हनुमान को चढ़ाएं सरसों का तेल, खत्म होंगी हर समस्याएं...

हनुमान जी को सरसों का तेल चढ़ाने से शनिदेव की भी कृपा मिलती है और बुरे प्रभावों को कम करते हैं। ऐसे में आज इस आर्टिकल के जरिए हम आपको बताने जा रहे हैं कि हनुमान जी को सरसों का तेल कब और कैसे अर्पित करना चाहिए।

हनुमान जी की पूजा में चमेली के तेल और सिंदूर का प्रयोग किया जाता है। लेकिन क्या आप जानते हैं कि शनिदेव की तरह हनुमान जी को भी सरसों का तेल अर्पित किया जाता है। बता दें कि हनुमान जी को सरसों का तेल चढ़ाने का विशेष महत्व होता है। यह उपाय उन लोगों के लिए अधिक फायदेमंद होता है, जो शनि की साढ़ेसाती या ढैय्या से परेशान हैं। माना जाता है कि हनुमान जी को सरसों का तेल चढ़ाने से शनिदेव की भी कृपा मिलती है और बुरे प्रभावों को कम करते हैं। ऐसे में आज इस आर्टिकल के जरिए हम आपको बताने जा रहे हैं कि हनुमान जी को सरसों का तेल कब और कैसे अर्पित करना चाहिए।

कब और कैसे चढ़ाएं सरसों का तेल

मंगलवार और शनिवार को हनुमान जी को सरसों का तेल चढ़ाना सबसे उत्तम माना जाता है। क्योंकि मंगलवार का दिन हनुमान जी का है और शनिवार का दिन शनिदेव का है। ऐसे में इस दिन हनुमान जी को सरसों का तेल अर्पित करने से शनि की पीड़ा और जीवन में आने वाली अन्य समस्याओं का अंत होता है।

मंगलवार या शनिवार के दिन सबसे पहले सुबह स्नान आदि करने के बाद साफ कपड़े पहनें। फिर पूजा के लिए हनुमान जी की मूर्ति लें और एक दीपक में सरसों का तेल लें। अगर संभव हो तो दीपक मिट्टी का ले लें। इसके अलावा थोड़ा सा तेल हनुमान जी के शरीर पर लगाएं। इस दौरान आप 'ॐ श्री हनुमते नमः' और 'ॐ हनुमते नमः' मंत्र का जाप करें। हनुमान जी को तेल अर्पित करने के बाद सुंदरकांड, बजरंग बाण या हनुमान चालीसा का पाठ करें। वहीं पूजा समाप्त होने के बाद चने और गुड़ का प्रसाद हनुमान जी को अर्पित करें।

हनुमान जी को सरसों का तेल चढ़ाने के लाभ

बता दें कि हनुमान जी को सरसों का तेल चढ़ाने के कई लाभ मिल सकते हैं। यह उपाय उन लोगों के लिए विशेषरूप से फायदेमंद साबित हो सकता है, जो शनि की महादशा, साढ़ेसाती या फिर ढैय्या से पीड़ित हैं। ऐसे में इस उपाय को करने से शनिदेव की क्रूर दृष्टि शांत होती है।

वहीं यह उपाय जीवन में आने वाले दुखों, बाधाओं और परेशानियों को भी दूर करता है। माना जाता है कि हनुमान जी को सरसों का तेल अर्पित करने से निगेटिव एनर्जी दूर होती है और जातक को सफलता, शक्ति और साहस मिलता है।

चालक दिवस एवं विश्वकर्मा पूजा पर राष्ट्रीय ड्राइवर संयुक्त मोर्चा समिति एवं औल दिल्ली ऑटो टैक्सी ट्रांसपोर्ट कां० यूनियन द्वारा दिल्ली द्वारिका स्थित नजदीक सूर्य ग्रीन बैंक्विट हॉल मनाया गया

परिवहन विशेष न्यूज

नई दिल्ली। चालक दिवस एवं विश्वकर्मा पूजा पर राष्ट्रीय ड्राइवर संयुक्त मोर्चा समिति एवं औल दिल्ली ऑटो टैक्सी ट्रांसपोर्ट कां० यूनियन द्वारा दिल्ली द्वारिका स्थित नजदीक सूर्य ग्रीन बैंक्विट हॉल मनाया गया जिसमें 51 यूनिट ब्लड डोनेट किया गया सैकड़ो चालकों की आंखों की जांच की गई

दिल्ली ट्रैफिक द्वारा चालकों को जागृत किया गया

इस अवसर पर दिल्ली NCR एवं गुजरात एवं पंजाब एवं राजस्थान एवं अन्य देश के राज्यों से भी दिल्ली पहुंचे

इस अवसर पर तमाम दिल्ली NCR के संगठन भी एकजुट होकर चालक दिवस बड़े हर्ष और उल्लास से मनाया

कार्यक्रम में उपस्थिति रही करनाल हिमांशु जी (सहकार टैक्स)

राजेंद्र प्रजापति जी , आर के शर्मा जी,

श्यामसुंदर जी, किशन वर्मा जी ,बाबा जी,

अरुण कुमार जी, अनिल कुमार जी,

बलवीर जी , अरविंद कुमार जी, राज अरोड़ा सामाजिक कार्यकर्ता, हीरा वाजपेई , देवेश जी गोला टोप, अशोक चौहान जी, जगदीश जी, दयानंद जी स्पेशल स्टाफ, पवन जी ,सुमित जी , अमन मेहंदी रत्ता जी, नरेश कुमार मीडिया, करनजीत गुड़गांव,मिथुन एवं उनके सभी सहयोगी, सोनू, जीतू , विकास शर्मा, रामवीर भाई, शैलेंद्र भाई, मोनू, विजय ,राजपाल, मंडल, संजीव, नवीन, एवं सभी संगठन के पदाधिकारी एवं उन सभी के सहयोगी उपस्थित रहे

विश्वकर्मा भगवान की पूजा से दिन की शुरुआत हुई 10:00 बजे और शाम को 4:00 बजे महाकार रेली के साथ समापन किया गया सभी चालक भाइयों ने हर्ष और उल्लास से ड्राइवर दिवस मनाया तमाम देश के 28 राज्य 9 केंद्र शासित प्रदेशों में राष्ट्रीय ड्राइवर संयुक्त मोर्चा के सहयोगी साथियों संगठनों ने चालक दिवस बड़े धूमधाम से मनाया

संस्थापक :- सुमेर अम्बावता
महासचिव रवि राठौर
राष्ट्रीय ड्राइवर संयुक्त मोर्चा समिति

सावरकर -- मिथक और वास्तविकता

(आलेख : सवेरा, अनुवाद : संजय पराते)

इस वर्ष स्वतंत्रता दिवस पर, पेट्रोलियम एवं प्राकृतिक गैस मंत्रालय द्वारा सोशल मीडिया पर पोस्ट की गई एक पोस्ट ने पूरे देश में आक्रोश और घृणा की लहर पैदा कर दी। 'स्वतंत्रता दिवस की शुभकामना' शीर्षक के अंतर्गत, इसमें चार चेहरे दिखाए गए थे -- वी. डी. सावरकर, महात्मा गांधी, नेताजी सुभाष चंद्र बोस और शहीद भगत सिंह। नीचे नारा लिखा था - 'स्वतंत्रता उनका उपहार है/भविष्य को आकार देना हमारा मिशन है'। आक्रोश स्वाभाविक था। सावरकर अंडमान द्वीप समूह की सेलुलर जेल में कैद रहते हुए ब्रिटिश औपनिवेशिक सरकार से बार-बार अत्यंत कायरतापूर्ण शब्दों में क्षमादान की गुहार लगाने के लिए जाने जाते हैं। बाद में, उन्हें 1948 में महात्मा गांधी की हत्या के मामले में आरोपित किया गया और अदालत ने सबूतों के अभाव में उन्हें बरी कर दिया, लेकिन एक जाँच आयोग ने उन्हें ज़िम्मेदार ठहराया था। अंग्रेजों के एक सहयोगी और महात्मा गांधी की हत्या में शामिल एक षड्यंत्रकारी को भारत के गौरवशाली स्वतंत्रता संग्राम की तीन सबसे प्रसिद्ध हस्तियों के समकक्ष रखना इतिहास का त्रासद मज़ाक उड़ाना था।

संघ परिवार की लंबे समय से निरंतर सुनियोजित कोशिश रही है कि सावरकर की प्रशंसा की जाएं और उसे एक प्रमुख स्वतंत्रता सेनानी के रूप में स्थापित किया जाएं। अटल बिहारी वाजपेयी के नेतृत्व वाली एनडीए सरकार के दौरान २००३ में संसद में उनका पोर्ट्रेट स्थापित किया गया था और पोर्ट ब्लेयर हवाई अड्डे का नाम बदलकर वीर सावरकर हवाई अड्डा कर दिया गया था। प्रधानमंत्री मोदी और उनके मंत्री तथा भाजपा नेता नियमित रूप से सावरकर की प्रशंसा करते रहे हैं। हाल ही में, सावरकर की जयंती पर, मोदी ने उन्हें "भारत माता का सच्चा सपूत" कहा था। सावरकर के प्रति संघ परिवार की यह प्रशंसा मुसलमानों के प्रति शत्रुता के उस जहरीले और भड़काऊ दर्शन से उपजी है, जिसका समर्थन सावरकर ने किया था, और जो स्वयं आरएसएस की विचारधारा का आधार है।

सावरकर के इस निरंतर महिमा मंडन और मुख्य धारा के मीडिया और सोशल मीडिया के कुछ हिस्सों द्वारा इसे उत्सुकतापूर्वक मदद मिलने को देखते हुए, उनके बारे में झूठ को उजागर करना और सच्चाई को दोहराना आवश्यक है।

सावरकर के जीवन का सबसे महत्वपूर्ण तथ्य यह है कि उनके जीवन के दो अलग-अलग पड़ाव हैं। पहला अंडमान में उनकी कैद से पहले का है और दूसरा उनकी रिहाई के बाद का। पहले दौर में वे मुख्यधारा के राष्ट्रीय आंदोलन के एक ऐसे अधीर युवा थे, जो शहादत जैसे त्वरित निर्णायक कदमों की आकांक्षा रखते थे। उन्होंने प्रथम स्वतंत्रता संग्राम (1857) का इतिहास लिखा और हिंदू समाज में व्याप्त जातिगत विभाजन के खिलाफ आवाज उठाई। वे मित्र मेला नामक एक गुप्त संस्था में शामिल हुए और बाद में, उन्होंने अपना गुप्त संगठन अभिनव भारत ('नया भारत') बनाया, जो ब्रिटिश शासकों को उखाड़ फेंकने के लिए हिंसक तरीकों में विश्वास करता था।

प्रारंभिक वर्ष

पुणे के फर्ग्यूसन कॉलेज से स्नातक होने के बाद, सावरकर कानून की पढ़ाई के लिए लंदन चले गए। वे मैज़िनी और गैरीबाल्डी जैसे उग्र इतालवी राष्ट्रवादियों से प्रभावित थे। 1909 में लंदन में उन्होंने एक भारतीय युवा छात्र मदन लाल ढींगरा को भारत राज्य के सचिव के सहयोगी विलियम हट कर्जन वायली की हत्या करने के लिए प्रोत्साहित किया। इसके लिए अंग्रेजों ने ढींगरा को फांसी पर लटका दिया। पहले से ही निगरानी में होने के कारण, सावरकर संदेह के घेरे में आ गए थे, लेकिन कोई ठोस सबूत नहीं मिल सका। इस बीच, सावरकर के भाई गणेश, जो अभिनव भारत के सदस्य थे, को बम एकत्रित करने के आरोप में भारत में गिरफ्तार कर लिया गया। उन्हें आजीवन निर्वासन की सजा सुनाई गई। इसका बदला लेने के लिए, अभिनव भारत के एक अन्य सदस्य अनंत कन्हेरे ने नासिक के जिला मजिस्ट्रेट की गोली मारकर हत्या कर दी। कन्हेरे और अन्य को गिरफ्तार कर लिया गया और उनके सामान से सावरकर के कई पत्र और लंदन से उनके द्वारा भेजे गए कई रिवॉल्वर भी मिले। पुलिस ने टेलीग्राम द्वारा गिरफ्तारी का वारंट लंदन भेजा, जहाँ सावरकर ने 13 मार्च, 1910 को आत्मसमर्पण कर दिया। भारत लाते समय, जहाज के मार्सिले बंदरगाह पर लंगर डालने पर वे भाग निकले। उन्हें गिरफ्तार कर लिया गया और इस मामले ने फ्रांस और इंग्लैंड में काफ़ी हंगामा मचा दिया। सावरकर की याचिकाएँ अंततः खारिज कर दी गईं और उन्हें भारत वापस लाया गया, 50 साल की जेल की सजा सुनाई गई और 1911 में अंडमान द्वीप समूह की कुख्यात जेल में भेज दिया गया। सावरकर के जीवन का यही वह हिस्सा है, जिसे स्कूली बच्चों को पढ़ाया जाता है और स्वतंत्रता संग्राम में उनके योगदान के रूप में प्रचारित किया जाता है।

एक क्रांतिकारी से अंग्रेज समर्थक

लगभग तुरंत ही, सावरकर ने ब्रिटिश शासकों से क्षमादान की याचिकाएँ दायर करनी शुरू कर दीं। 1911 की उनकी पहली याचिका अब गुम हो चुकी है, लेकिन 14 नवंबर, 1913 को भारत सरकार के गृह मंत्री को संबोधित उनकी दूसरी याचिका में उसका उल्लेख मिलता है। जेल में अपनी मुश्किलों को गिनाने के बाद, सावरकर अंत में लिखते हैं :

इसलिए यदि सरकार अपनी असीम कृपा और दया से मुझे रिहा कर दे, तो मैं संवैधानिक प्रगति और अंग्रेज सरकार के प्रति निष्ठा का प्रबल समर्थक बन सकता हूं, जो कि प्रगति की सर्वोपरि शर्त है। जब तक हम जेलों में हैं, भारत में महामहिम की वफ़ादार प्रजा के सैकड़ों-हज़ारों घरों में सच्ची खुशी और आनंद नहीं आ सकता, क्योंकि खून पानी से ज़्यादा गाढ़ा होता है ; लेकिन अगर हमें रिहा कर दिया गया, तो लोग सहज ही सरकार के प्रति खुशी और कृतज्ञता का जयकारा लगाएँगे, जो दंड देने और बदला लेने से ज़्यादा क्षमा करना और सुधारना जानती है। इसके अलावा, संवैधानिक मार्ग अपनाने से भारत और विदेशों में वे सभी गुमराह युवा वापस आ जाएँगे, जो कभी मुझे अपना मार्गदर्शक मानते थे। मैं सरकार की अपनी किसी भी क्षमता में सेवा करने के लिए तैयार हूँ, क्योंकि मेरा रूपांतरण कर्तव्यनिष्ठ है, इसलिए मुझे आशा है कि मेरे भविष्य का आचरण भी ऐसा ही होगा। मुझे जेल में रखकर जो कुछ भी हासिल किया जा सकता है, उसकी तुलना में नगण्य ही होगा। केवल सर्वशक्तिमान ही दयालु हो सकता है और इसलिए उद्दंड पुत्र सरकार के पैतृक द्वार के अलावा और कहां लौट सकता है ?

उपरोक्त उद्धरण उस याचिका से लिया गया है, जिसे प्रख्यात राष्ट्रवादी इतिहासकार आर. सी. मजूमदार की पुस्तक 'अंडमान में दंडात्मक बस्तियाँ' में प्रतिलिपि के रूप में प्रस्तुत किया गया है। यह पुस्तक 1975 में तत्कालीन संस्कृति विभाग, शिक्षा एवं समाज कल्याण मंत्रालय, भारत सरकार के गजेटियर्स यूनिट द्वारा प्रकाशित की गई थी। पुस्तक के प्रासंगिक पृष्ठ (पृष्ठ २११-२१४) हाल ही में संस्कृति एवं पर्यटन मंत्री (स्वतंत्र प्रभार) प्रह्लाद सिंह पटेल द्वारा २३ मार्च २०२० को लोकसभा में एक अतारांकित प्रश्न के उत्तर के अनुलग्नक के रूप में प्रसारित किए गए थे।

गौर कीजिए कि सावरकर खुद को किस तरह से पेश करते हैं — "संवैधानिक प्रगति के प्रबल समर्थक" और "अंग्रेज सरकार के प्रति वफ़ादार"। यह भी गौर कीजिए कि वे यह आश्वासन दे रहे हैं कि उनके सभी अनुयायी जेल से उनकी रिहाई पर "खुशी और कृतज्ञता से जयकार करेंगे" और यह "भारत और विदेशों में उन सभी गुमराह युवाओं को वापस लाएगा, जो कभी मुझे अपना मार्गदर्शक मानते थे।" वे क्रूर ब्रिटिश शासकों को फिर से आश्वस्त करते हैं कि वे "सरकार की किसी भी क्षमता में सेवा करने के लिए तैयार हैं"। वे खुद को "सरकार के पैतृक द्वार" पर लौटने वाला "उद्दंड पुत्र" घोषित करते हैं। संक्षेप में, सावरकर अपनी आत्मा — और अपने अनुयायियों को भी — औपनिवेशिक आकाओं को उनकी क्षमादान के बदले में बेचने को तैयार हैं।

जैसा कि हुआ, 1920 में भारत स्थानांतरित होने और पुणे की यरवदा जेल में बंद होने तक सावरकर अंग्रेजों से लगातार गुहार लगाते रहे। अंततः उन्हें 1923 में इस शर्त पर रिहा किया गया कि वे महाराष्ट्र के तटीय रत्नागिरी जिले में ही रहेंगे और किसी भी राजनीतिक गतिविधि से दूर रहेंगे।

अंडमान जेल में अपने लंबे प्रवास के दौरान, सावरकर को कठोर श्रम करना पड़ा, उन्हें यातनाएँ दी गईं और आम तौर पर उस कुख्यात जगह के सभी कैदियों की तरह उनके साथ भी बुरा व्यवहार किया गया। अन्य लोगों ने उन भयावह परिस्थितियों का वर्णन किया है, जिनमें कैदी रहते थे और अक्सर मर जाते थे। ऐसा प्रतीत होता है कि वह बाहर निकलना चाहते थे — जो स्वाभाविक है — लेकिन उन सैकड़ों अन्य स्वतंत्रता सेनानियों के विपरीत, जिन्होंने ब्रिटिश जेलरों के हाथों कष्ट सहे, वह बाहर निकलने के लिए अपने नैतिक, वैचारिक और राष्ट्रवादी व्यक्तित्व को दांव पर लगाने को तैयार थे।

निस्संदेह, भगत सिंह इन वीर पुरुषों और महिलाओं में सबसे प्रतिभाशाली हैं। उन्होंने भी औपनिवेशिक शासकों के विरुद्ध हिंसक विरोध का रास्ता अपनाया। उन्हें भी अपने साथियों के साथ जेल में डाला गया। उन्होंने भी कई किताबें, लेख, पर्चे आदि लिखे। लेकिन उन्होंने हमेशा अंग्रेजों के खिलाफ संघर्ष में सभी शोषित लोगों के हितों का समर्थन किया। उन्होंने कभी क्षमा दान या जेल से रिहाई की माँग नहीं की। उन्हें 1931 में २३ वर्ष की अल्पायु में फाँसी दे दी गई।

हिंदुत्व विचारधारा का उभार

यरवदा जेल और फिर रत्नागिरी ज़िले में बिताए अपने वर्षों के दौरान सावरकर ने नाटक, निबंध, कविताएँ आदि विपुल मात्रा में लिखे, लेकिन उनमें ब्रिटिश शासकों की आलोचना और उन्हें उखाड़ फेंकने की महत्वाकांक्षा दोनों ही गायब थीं। उनकी पुस्तक 'हिंदुत्व' 1923 में 'मराठा' छद्म नाम से प्रकाशित हुई थी। इसमें हम हिंदुत्व की उभरती विचारधारा को देखते हैं, जिसे वे हिंदूवाद को एक विदेशी शब्द के रूप में इस्तेमाल करने की निंदा करते हुए, तरजीह देते हैं। यहीं पर सावरकर के कुछ मौलिक विचार मूर्त रूप लेते हैं। वे भारतीय इतिहास की व्याख्या मुसलमानों और हिंदुओं के बीच एक लंबे युद्ध के रूप में करते हैं। इसी युद्ध के दौरान, जैसा कि वे कहते हैं, "हमारे लोग स्वयं को हिंदू मानने के प्रति अत्यधिक जागरूक हो गए और एक ऐसे राष्ट्र में विलीन हो गए, जो हमारे इतिहास में पहले कभी नहीं देखा गया था।" उनके उग्र-राष्ट्रवादी यूरोपीय विचार एक हिंदू राष्ट्र के रूप में प्रकट होते हैं, जो अपनी पहचान बनाने के लिए प्रयासरत है। उन्होंने तर्क दिया कि हिंदू एक ही रक्त से बंधे हैं, और हिंदू "अपनी महान सभ्यता - हमारी हिंदू संस्कृति - की एक साझा विरासत के बंधन से" एकजुट हैं। उन्होंने ज़ोर देकर कहा कि हिंदू और मुसलमान दो राष्ट्र हैं और ये कभी एक साथ नहीं रह सकते। उन्होंने हिंदू पहचान को एकजुट करने और साकार करने के साधन के रूप में हिंसा -- विशेष रूप से मुसलमानों के खिलाफ -- का महिमामंडन भी किया। यह पुस्तक, जिसका बाद में 1928 में विस्तार हुआ और जिसका शीर्षक था "हिंदुत्व : हिंदू कौन है ?", आरएसएस के संस्थापक के.बी. हेडगेवार सहित कई लोगों के लिए वैचारिक स्रोत बन गई। आरएसएस के दूसरे सरसंघचालक एम.एस. गोलवलकर ने अपने लेखन में इन विचारों का भरपूर उपयोग किया।

1937 में, रत्नागिरी में उनकी नज़रबंदी हटा ली गई और वे हिंदू महासभा के अध्यक्ष बन गए। उनके मार्गदर्शन में ही महासभा ने अंग्रेजों के प्रति नरम रुख अपनाया, उन्हें खुश करने के लिए मध्य प्रांत और बंगाल की सरकारों में भाग लिया और बाद में हिंदुओं को द्वितीय विश्व युद्ध में लड़ने के लिए ब्रिटिश सेना में शामिल होने के लिए प्रोत्साहित किया, इस तर्क के साथ कि इससे हिंदुओं को आग्नेयास्त्रों के उपयोग का आवश्यक प्रशिक्षण मिलेगा। उन्होंने यह सुनिश्चित किया कि महासभा न केवल भारत छोड़ो आंदोलन से दूर रहे, बल्कि अंग्रेजों को इसे दबाने में भी मदद करे। महासभा के श्यामा प्रसाद मुखर्जी (जिन्होंने बाद में भारतीय जनसंघ की स्थापना की) भारत छोड़ो आंदोलन के दौरान बंगाल में फजलुल हक मंत्रिमंडल में मंत्री थे। उत्तर-पश्चिम सीमांत प्रांत और सिंध में, महासभा ने मुस्लिम लीग के साथ गठबंधन करके मंत्रालय बनाए। यह नए सावरकर थे : एक हिंदुत्व कट्टरपंथी और अंग्रेजों का सहयोगी।

महात्मा गांधी की हत्या

जनवरी 1948 में महात्मा गांधी की हत्या की साजिश में शामिल होने के संदेह में सावरकर को गिरफ्तार कर लिया गया। गृह मंत्री सरदार पटेल ने प्रधानमंत्री नेहरू को लिखा, "यह सावरकर के अधीन हिंदू महासभा की एक कट्टरपंथी शाखा थी, जिसने यह साजिश रची और उसे अंजाम तक पहुँचाया।" (दुर्गा दास, सरदार पटेल पत्राचार, 1945-50, खंड VI, पृष्ठ 56)

बाद में, पटेल ने मुखर्जी को लिखा, "...हम इस तथ्य से आँखें नहीं मूंद सकते कि महासभा के सदस्यों की एक बड़ी संख्या ने इस त्रासदी पर खुशी मनाई और मिठाइयाँ बाँटीं...। इसके अलावा, जिस उग्र सांप्रदायिकता का प्रचार कुछ महीने पहले तक महासभा के कई प्रवक्ताओं, जिनमें महंत दिग्विजय नाथ, प्रो. राम सिंह और देशपांडे जैसे लोग शामिल थे, द्वारा किया जा रहा था, उसे सार्वजनिक सुरक्षा के लिए ख़तरा ही माना जा सकता था। यही बात आरएसएस पर भी लागू होती है, जहाँ सैन्य या अर्ध-सैन्य आधार पर गुप्त रूप से संचालित संगठन में अतिरिक्त ख़तरा निहित होता है।" (वही, खंड VI, पृष्ठ 66)

महाराष्ट्र के बारे में बात करते हुए, बॉम्बे के मुख्यमंत्री बी जी खेर ने पटेल को लिखा, "हिंदू महासभा द्वारा कांग्रेस और महात्मा गांधी के खिलाफ नफरत का माहौल बनाने की कोशिश की गई, जिसकी परिणति कुछ महाराष्ट्रियों के हाथों महात्मा गांधी की हत्या के रूप में हुई।" (ibid., खंड VI, पृ. 77-78.)

यद्यपि गांधी हत्याकांड के मुकदमे में सावरकर को दोषी नहीं ठहराया जा सका, क्योंकि सरकारी गवाही की पुष्टि करने वाले स्वतंत्र साक्ष्य उपलब्ध नहीं थे, फिर भी 1965 में न्यायमूर्ति जीवन लाल कपूर की अध्यक्षता में गठित जाँच आयोग ने सावरकर के दो निकट सहयोगियों, ए.पी. कसार और जी.वी. दामले, जिन्होंने मुकदमे में गवाही नहीं दी थी, की गवाही सुनी। उन्होंने सरकारी गवाह के बयानों की पुष्टि की। आयोग सरदार पटेल के निष्कर्ष से काफी मिलते-जुलते निष्कर्ष पर पहुँचा : "इन सभी तथ्यों को एक साथ मिलाकर देखा जाएं, तो ये सभी तथ्य सावरकर और उनके समूह द्वारा हत्या की साजिश के अलावा किसी भी अन्य सिद्धांत को ध्वस्त कर देते हैं"। (महात्मा गांधी की हत्या की साजिश की जाँच आयोग की रिपोर्ट, 1970, पृष्ठ 303, अनुच्छेद २५.106)

छह गौरवशाली युग

बरी होने के बावजूद, सावरकर गांधी हत्याकांड के दाग़ से अपूरणीय रूप से कलंकित थे। हिंदू महासभा ने खुद को भंग कर लिया था। उन्होंने मुकदमे के दौरान ही अन्य षड्यंत्रकारियों से खुद को अलग कर लिया था, शायद उन्हें फिर से जेल जाने का डर था। उन्होंने अपने अंतिम वर्ष गुमनामी में अपनी महान कृति "भारतीय इतिहास के छह गौरवशाली युग" पर काम करते हुए बिताए। यह पुस्तक 1963 में प्रकाशित हुई थी, यानी उनके अन्न-जल त्यागकर आत्महत्या करने से ठीक तीन साल पहले।

छह युग उन कालखंडों का उल्लेख करते हैं, जब हिंदू राष्ट्र ने खुद को "विदेशी प्रभुत्व की बेड़ियों" से मुक्त किया। यह पुस्तक "विदेशी" धर्मों के विरुद्ध एक कटु आलोचना तो है ही, साथ ही सावरकर के अनुसार यह उस सौम्य और शांत हिंदू समाज की भी तीखी आलोचना करती है, जिसने खुद को गुलाम बनने दिया। सावरकर हिंदू शासकों और सेनाओं की इस बात के लिए आलोचना करते हैं कि उन्होंने पराजित मुस्लिम महिलाओं के साथ बलात्कार नहीं किया, मुसलमानों का नरसंहार नहीं किया, उनकी मस्जिदों को नहीं तोड़ा, आदि। वे इस मार्ग पर चलने वाले कुछ वीर पुरुषों और महिलाओं की महिमा का बखान करते हैं और हिंदू राष्ट्र के गौरव को पुनः प्रज्वलित करने के लिए इसी तरह का मार्ग अपनाने पर ज़ोर देते हैं।

इस पुस्तक में सावरकर ने एक भयावह और बर्बर नैतिकता प्रस्तुत की है : क्या पुण्य है या क्या नहीं, यह इस बात से तय होता है कि वह हिंदू राष्ट्र के लिए अच्छा है या नहीं। इसलिए मुस्लिम महिलाओं का बलात्कार करना और उन्हें अपने धर्म में शामिल करना अच्छा है, क्योंकि इससे हिंदू जनसंख्या बढ़ती है। दरअसल, आज भी, आरएसएस के कार्यकर्ता सावरकर के कार्यों को यह कहकर उचित ठहराते हैं कि उन्होंने हिंदुओं के साथ विश्वासघात नहीं किया।

इस पुस्तक में सावरकर के चिंतन का सार निहित है, जो आज के हिंदुत्व ब्रिगेड को गहराई से प्रभावित करता है। हिंदू राष्ट्र का पुनरुत्थान, हिंदू सिद्धांतों पर आधारित एक गौरवशाली अखंड भारत की स्थापना, योद्धा जैसा आचरण और एक श्रेष्ठ जाति का उदाहरण, ये सभी स्वप्न सावरकर से ही उत्पन्न हुए थे। उनके जीवन और कार्यों का स्वतंत्रता संग्राम की भावना या उसके विभिन्न पहलुओं से कोई संबंध नहीं है, क्योंकि वे वास्तव में अपने जीवन के अधिकांश समय अंग्रेजों के साथ रहे थे। और, वे संविधान की धर्मनिरपेक्षता, सांप्रदायिक सौहार्द्र और लोकतंत्र की भावना के भी विरोधी थे।

(लेखक शोध अध्येता हैं। अनुवादक अखिल भारतीय किसान सभा से संबद्ध छत्तीसगढ़ किसान सभा के उपाध्यक्ष हैं।

आस्था और व्यवस्था में संतुलन जरूरी

धीतेन्द्र कुमार शर्मा

ब्लर्ब........ यहां पर्वों के उत्साहपूर्ण आयोजनों को संकुचित करने अथवा बांधने का सुझाव देने की मंशा कतई नहीं है। ना ही आम रास्तों के अवरुद्ध होने से जूझती जिन्दगी को सरल बनाने के लिए उत्सवों के महत्व को नकारने का दुस्साहस है। लेकिन, संतुलन की बात तो अवश्य करनी होगी। आस्था और व्यवस्था का संतुलन ! यह संतुलन बनाना अब वक्त की मांग है ! कुशल और प्रगतिशील शासन की कटिबद्धता मतांध श्रद्धा के आगे नतमस्तक होकर आमजन को उसके हाल पर छोडना नहीं, आस्था और व्यवस्था दोनों को कानून के दो पलड़ों में साधकर लोककल्याण करना है !

सनातन संस्कृति की विरासत को सहेजे और गंगा- जमुनी परंपराओं का वाहक होने के चलते हिमालय की गोद में बसा पुण्यधरा हमारा भारतवर्ष कश्मीर से कन्याकुमारी तक और द्वारका से जगन्नाथ पुरी और सुदूर पूर्वोत्तर अरुणाचल की वादियों तक शताब्दियों से धार्मिक-आस्था का बड़ा केन्द्र है। हर धार्मिक उत्सव को यह पवित्रता और अप्रतिम उल्लास से आलिंगन करता दिखता है। हाल ही गणपति उत्सव की धूम रही। हर गांव-शहर, महानगर क्षेत्र में सैकड़ों-हजारों पांडाल में गणपति बप्पा को विराजित किए श्रद्धालु भक्ति से सराबोर रहे। पंडालों के अलावा गली-मोहल्लों में बप्पा की प्रतिष्ठा हुई है सो अलग। हर कोई बुद्धि-प्रदाता की भक्ति में डूबा। नित्य-प्रति संकीर्तन हुए। जगह-जगह मेले लगे। यह आस्थाजन्य एक पहलू रहा है।

लेकिन, दूसरा पहलू भी कम महत्वपूर्ण नहीं था। हर चंद कदम दूरी पर पांडाल आम रास्तों को अवरुद्ध किए रहे। कई मोहल्लों में रास्ते रोक कर गणपति विराजित किए गए। ज्यादातर स्थानों पर चौराहों का उपयोग हुआ और नित्य-प्रति होता रहता है। रोज शाम को जाम जैसे हालात बन जाते हैं। इनमें कई मुख्य मार्ग तक शामिल हैं। गणपति उत्सव कोई एक दिन का नहीं। दस दिन बाद बप्पा की विदाई हुई। ऐसे में रोजमर्रा की जिन्दगी यातायात अवरोध से जूझती रही।

और यहां, बात सिर्फ गणपति उत्सव की नहीं है। अब त्योहारी सत्र चल पड़ा है। आगामी तीन माह तक त्योहारों की धूम रहेगी। अनन्त चतुर्दशी पर बप्पा की विदाई के बाद शक्ति-आराधना पर्व नवरात्र दस्तक दे रहे हैं। प्रतिवर्ष की भांति पुनः देवी मां के पांडाल सजने हैं। पूरे नौ दिन देवी आराधक जागरणों से सड़कें सराबोर रहेंगी। इन्हीं स्थानों पर देवी पांडाल सज जाएंगे अपितु और अधिक संख्या में ! फिर उसके बाद दशहरा मेला आ रहा है। कई स्थानों पर दशहरा मेला भी पखवाड़े भर का लगने लगा है। फिर, दीपावली, देव उठनी एकादशी, कार्तिक पूर्णिमा मेले आदि- आदि ! इस सबके अलावा विभिन्न सामुदायिक धार्मिक-पर्वों पर सडक़ों पर सजने वाला कथित अस्थाई लेकिन लगभग स्थाई हो चुका बाजार गति-शक्ति में बाधक बनता है। क्या इस दिशा में प्रशासन और राष्ट्र-राज्य सत्ता में बैठे जिम्मेदार लोगों को नहीं सोचना चाहिए।

यहां इन पर्वों के उत्साहपूर्ण आयोजनों को संकुचित करने अथवा सीमाओं में बांधने का सुझाव देने की मंशा कतई नहीं है। ना ही आम रास्तों के अवरुद्ध होने से जूझती जिन्दगी को सरल बनाने के लिए उत्सवों के महत्व को नकारने का दुस्साहस है। लेकिन, संतुलन की बात तो अवश्य करनी होगी। आस्था और व्यवस्था का संतुलन ! संविधान स्वीकृत सर्व नगरिक अधिकारों और धार्मिक स्वतंत्रता का संतुलन !

मुद्दे की बात यह कि जब प्रतिवर्ष तय कैलेण्डर की भांति से सब आयोजन होने ही हैं तो इन्हें आमजन जीवन की गति में बाधा पहुंचाए बिना इसी उत्साह से सम्पन्न कराने की कोशिशें क्यों नहीं होती ! खासकर तब, जबकि पिछले एक दशक में राजनीति में भाग्य आजमाने के आकांक्षी युवाओं के लिए ऐसे अयोजन और पांडाल ‡प्रथम पाठशाला‡ के रूप में लगभग स्थापित हो चुके हैं। और, यही लालसा ऐसे आयोजनों- पांडालों की संख्या में उत्तरोत्तर गुणात्मक वृद्धि ला रही है !

चार इंजन की भाजपा सरकार निकम्मी, सड़कों पर बह रहा सीवर का गंदा पानी - अंकुश नारंग

मुख्य संवाददाता

नई दिल्ली : दिल्ली में भाजपा की चार इंजन की सरकार दिल्लीवालों की उम्मीदों पर खरा नहीं उतर पा रही है। दिल्ली में जगह-जगह सीवर ओवफ्लो हो रहे हैं और गंदा पानी सड़कों और गलियों में बह रहा है। इससे न सिर्फ आने जाने वाले लोगों को परेशानी हो रही है, बल्कि स्थानीय लोग गंदे पानी की बदबू से खासे परेशान हैं। आम आदमी पार्टी के एमसीडी में नेता प्रतिपक्ष अंकुश नारंग ने राजेंद्र नगर विधानसभा में ओवरफ्लो हो रहे एक नाले का दौरा करने के दौरान ये बातें कही। उन्होंने कहा कि चार इंजन की भाजपा सरकार निकम्मी है। राजेंद्र नगर में सीवर का पानी सड़कों पर बहने से वाहन चालकों और स्थानीय लोगों को भारी दिक्कत हो रही है। इससे बीमारियों का खतरा बढ़ गया है। सीएम रेखा गुप्ता, जल मंत्री प्रवेश वर्मा और क्षेत्रीय विधायक उमंग बजाज से अपील है कि सीवर ओवरफ्लो की समस्या को तत्काल ठीक कराएं।

एमसीडी में आम आदमी पार्टी के नेता प्रतिपक्ष अंकुश नारंग ने गुरुवार को राजेंद्र नगर विधानसभा का जायजा लिया। इस दौरान उन्होंने पीडब्ल्यूडी की सड़क पर एक सीवर दिखाते हुए कहा कि जब से भाजपा की चार इंजन वाली सरकार आई है, दिल्ली के हर गली-मोहल्ले व पीडब्ल्यूडी की सड़कों पर सीवर बहते नजर आ रहे हैं। इससे न सिर्फ सड़क पर चलने वाले परेशान हैं, बल्कि सड़क पर एक बहुत बड़ा गड्ढा भी बन गया है, जो हादसे को दावत दे रहा है। गोल चक्कर पर रोज सीवर का पानी बहता है। इससे स्थानीय लोग बहुत परेशान हैं। यह गंदा पानी पूरे इलाके में फैलता है।

अंकुश नारंग ने कहा कि मुख्यमंत्री रेखा गुप्ता की भाजपा सरकार पूरी तरह निकम्मी है। चार इंजन की सरकार है, मगर दिल्ली को सीवर के पानी से भर दिया है। भाजपा सरकार को शर्म आनी चाहिए। सीवर का पानी गलियों व सड़कों पर बह रहा है। पूरा इलाका प्रदूषित है। उन्होंने मुख्यमंत्री रेखा गुप्ता, जल मंत्री मंत्री प्रवेश वर्मा और स्थानीय भाजपा विधायक उमंग बजाज से कहा कि इस सीवर को तुरंत ठीक करवाएं, नहीं तो इससे बीमारियां फैलेंगी। लोग बता रहे हैं कि जब से भाजपा की सरकार आई है, यह सीवर लगातार बह रहा है। दिल्ली की जनता ने भाजपा को बड़ी उम्मीदों के साथ 48 विधानसभा सीटें दीं, सातों सांसद दिए, एमसीडी में भी सत्ता दी। अब क्या दिक्कत है ? इस सीवर को तुरंत ठीक करवाएं।

आर्टेमिस हॉस्पिटल ने लॉन्च किया उत्तर भारत का प्रीमियर हार्ट एंड लंग ट्रांसप्लांट सेंटर

मुख्य संवाददाता

गुरुग्राम : आर्टेमिस हॉस्पिटल ने आज अपने आधुनिक हार्ट एंड लंग ट्रांसप्लांट सेंटर (हृदय एवं फेफड़ा प्रत्यारोपण केंद्र) का उद्घाटन किया। हैदराबाद के केआईएमएस हॉस्पिटल्स में थोरेसिक ऑर्गन ट्रांसप्लांट्स एंड मैकेनिकल सर्कुलेटरी सपोर्ट के फाउंडर-डायरेक्टर एवं चेयरपर्सन डॉ. संदीप अतवार इस सेंटर की जिम्मेदारी संभालेंगे। इस सेंटर के माध्यम से उत्तर भारत में थोरेसिक ट्रांसप्लांट और मैकेनिकल सपोर्ट की पूरी रेंज उपलब्ध कराई जाएगी। इससे गुरुग्राम और आसपास के लोगों को दक्षिण भारत तक जाए बिना ही हाई क्वालिटी ट्रांसप्लांट केयर मिल पाएगी। इस सेंटर के माध्यम से आर्टेमिस का लक्ष्य हरियाणा, दिल्ली एनसीआर, पंजाब, राजस्थान और उत्तर प्रदेश के ऐसे मरीजों को जांच से लेकर लॉन्ग-टर्म रिकवरी तक के पूरे एडवांस्ड केयर का सिंगल पॉइंट विकल्प देना है, जिन्हें ट्रांसप्लांट की जरूरत है।

आर्टेमिस हॉस्पिटल्स के चेयरमैन श्री ओंकार एस. कंवर ने कहा, 'आर्टेमिस ने हमेशा से इस बात में विश्वास किया है कि एडवांस्ड हेल्थकेयर को सभी मरीजों की पहुंच में और सार्थक होना चाहिए। गुरुग्राम में हार्ट एंड लंग ट्रांसप्लांट सेंटर की स्थापना करते हुए हम सुनिश्चित कर रहे हैं कि उत्तर भारत के परिवारों को ट्रांसप्लांट के लिए लंबे सफर की परेशानियों का सामना न करना पड़े। सबसे अहम बात, हमारा लक्ष्य केवल सर्वाइवल तक सीमित नहीं है, हम सम्मान, उम्मीद और जीवन की गुणवत्ता के लिए प्रयास करते हैं।'

सेंटर के उद्घाटन के दौरान उपस्थित आर्टेमिस हॉस्पिटल्स की मैनेजिंग डायरेक्टर डॉ. देवलीना चक्रवर्ती ने कहा, 'उत्तर भारत में ट्रांसप्लांट के मामले में इस स्तर की विशेषज्ञता की पेशकश करते हुए आर्टेमिस हॉस्पिटल को खुशी हो रही है। हमें भरोसा है कि यह केंद्र हरियाणा, उत्तर प्रदेश, दिल्ली एनसीआर और आसपास के राज्यों के लोगों के लिए जीवनरक्षक बनकर सामने आएगा। अभी ऐसे मरीजों को हार्ट एवं लंग ट्रांसप्लांट केयर के लिए बहुत दूर जाना पड़ता है।'

इसलिए है महत्वपूर्ण

उत्तर और उत्तर पश्चिम भारत के जिन मरीजों को हार्ट या लंग ट्रांसप्लांट की जरूरत होती है, उन्हें इलाज के लिए दक्षिण भारत के कुछ प्रमुख केंद्रों तक जाना पड़ता है। आर्टेमिस हॉस्पिटल के इस नए सेंटर से अब उनके लिए कम सफर और कम लागत में एक्सपर्ट केयर पाना संभव होगा। अब उनके लिए फॉलो-अप भी आसान होगा। यह सेंटर इस मामले में भी अनूठा है कि मरीज एक साथ दो राज्यों में रजिस्टर कर सकते हैं। इससे डोनर्स के लिए भी मरीजों तक पहुंच आसान होगी और सही समय पर ट्रांसप्लांट की संभावना बढ़ जाएगी।

डॉ. संदीप अतवार ने कहा, 'अब तक एंड स्टेज हार्ट या लंग डिसीज का सामना कर रहे उत्तर भारत के बहुत से मरीजों के पास स्थानीय स्तर पर बहुत कम विकल्प थे। आर्टेमिस हॉस्पिटल में हम दिल्ली से गुरुग्राम की नजदीकी और यहां के इन्फ्रास्ट्रक्चर के लॉजिस्टिकल, जियोग्राफिकल और इंस्टीट्यूशनल एडवांटेज के साथ फुल ट्रांसप्लांट प्रोग्राम उपलब्ध कराएंगे, जिससे देरी नहीं होगी, ट्रैवल का दबाव कम होगा और नतीजे बेहतर होंगे।'

डॉ. संदीप अतवार के पास पूरे भारत में हार्ट एवं लंग ट्रांसप्लांट प्रोग्राम को स्थापित एवं संचालित करने का एक दशक से अधिक का अनुभव है। केआईएमएस हैदराबाद में उनकी टीम ने 650 से ज्यादा थोरेसिक ऑर्गन ट्रांसप्लांट किए हैं, जिनमें करीब 479 डबल-लंग ट्रांसप्लांट, 127 हार्ट ट्रांसप्लांट और 58 कम्बाइंड हार्ट-लंग ट्रांसप्लांट शामिल हैं। उन्होंने 58 एलवीएडी इम्प्लांट भी किए हैं। ग्लोबल ट्रांसप्लांट सोसायटी में उनके नेतृत्व और उनकी सक्रिय भूमिका को देखते हुए यह नया केंद्र बेहतर नतीजे देने और इस क्षेत्र में ट्रांसप्लांट को लेकर जागरूकता बढ़ाने में सक्षम होगा।

भारत में ट्रांसप्लांट की स्थिति

पिछले कुछ दशक में भारत ने थोरेसिक ट्रांसप्लांट के मामले में सतत प्रगति की है। इंडियन हार्ट एंड लंग ट्रांसप्लांट रजिस्ट्री ने मार्च, २०२३ तक 1,३२8 हार्ट ट्रांसप्लांट और 475 लंग ट्रांसप्लांट के मामले दर्ज किए थे। देशभर में 70 से ज्यादा प्रमाणित केंद्र हैं, जो इन ट्रांसप्लांट में सहयोग करते हैं। २०२३ में १२९ लंग और 10२ हार्ट ट्रांसप्लांट के साथ कुल २३१ हार्ट एवं लंग ट्रांसप्लांट किए गए। २०२४ में यह संख्या और बढ़ गई। हार्ट ट्रांसप्लांट के 85 प्रतिशत मरीजों में और लंग ट्रांसप्लांट के 85 प्रतिशत मरीजों में 1 साल से अधिक का सर्वाइवल देखा गया है। लिविंग डोनर प्रोग्राम्स के मामले में उत्तर भारत ने अच्छा काम किया है, जो यहां बेहतर इन्फ्रास्ट्रक्चर की मौजूदगी दिखाता है। हालांकि दक्षिण एवं पश्चिम भारत की तुलना में डिसीज्ड डोनेशन (मृतकों के अंगदान) के मामले में अभी उत्तर भारत पीछे है।

आर्टेमिस हॉस्पिटल के केंद्र से क्या सुविधाएं मिलेंगी

आर्टेमिस हार्ट एंड लंग ट्रांसप्लांट सेंटर में हार्ट, लंग और हार्ट-लंग ट्रांसप्लांट जैसी एडवांस्ड सर्विसेज की पूरी रेंज उपलब्ध होगी। यहां ट्रांसप्लांट होने तक अस्थायी समाधान के तौर पर या लॉन्ग टर्म ट्रीटमेंट के तौर पर ईसीएमओ और एलवीएडी डिवाइसेज जैसे मैकेनिकल सर्कुलेटरी सपोर्ट की सुविधा भी उपलब्ध होगी। मरीजों को एडवांस्ड हार्ट फेल्योर और टर्मिनल लंग डिसीज के मामले में प्री-ट्रांसप्लांट इवैल्यूएशन और ट्रांसप्लांट के बाद रीहैबिलिटेशन व लंबी अवधि के फॉलो अप समेत पूरी केयर मिलेगी। इससे ट्रांसप्लांट के बाद सुगम जीवन संभव होगा।

इस सेंटर में मल्टी-स्टेट ट्रांसप्लांट लिस्टिंग, मरीजों एवं उनके परिवारों को समझाने और ट्रांसप्लांट के लिए समन्वय स्थापित करने के लिए हफ्ते में सातों दिन २४ घंटे सहायता प्रदान की जाएगी। यह सेंटर अपने पहले साल में ही दहाई अंकों में ट्रांसप्लांट करते हुए उत्तर भारत के टॉप रीजनल हब के रूप में स्वयं को स्थापित करना और ग्लोबल स्टैंडर्ड एवं रिजल्ट के लिए स्थानीय विकल्प बनना चाहता है।

सेवा पखवाड़ा के अंतर्गत तुगलकाबाद गॉंव में जिला स्तर पर किया गया रक्तदान शिविर का आयोजन..

स्वतंत्र सिंह भुल्लर नई दिल्ली

नई दिल्ली: प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के 75वें जन्मदिवस 17 सितंबर से प्रारंभ सेवा पखवाड़ा के तहत दूसरे दिन दक्षिणी दिल्ली लोक सभा के पूर्व सांसद श्री रमेश बिधूड़ी ने जिला स्तर पर तुगलकाबाद गॉंव स्थित प्राचीन शिव मन्दिर में रक्तदान शिविर का आयोजन करवाया। जिसमें दक्षिणी दिल्ली लोक सभा क्षेत्र की 6 विधान सभाओं बदरपुर, तुगलकाबाद, कालकाजी, संगम विहार, देवली व अम्बेड़कर नगर क्षेत्र से लगभग 300 युवा रक्तदाताओं ने भागीदारी की। इस अवसर पर बिधूड़ी ने शिविर का शुभारंभ कर रक्तदान प्रक्रिया प्रारंभ करवाई। जिसके बाद उन्होंने रक्तदाताओं से भेंट कर उनका उत्साहवर्धन किया और रक्तदान कर चुके नौजवानों को

प्रमाण-पत्र प्रदान कर सम्मानित किया। उन्होंने युवाओं के लिए कहा कि रक्तदान जैसा पवित्र कार्य न केवल जीवनदान है बल्कि समाज में मानवता और सहयोग की भावना को भी जीवित रखता है, मुझे खुशी है कि माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी जिनका संपूर्ण जीवन अनुशासन, कुशल प्रबंधन और समाज सेवा को समर्पित रहा है उनके जन्मदिवस अवसर पर क्षेत्र के युवा सेवा कार्यों में पूर्ण उत्साह के साथ भाग ले रहे हैं।

इस अवसर पर भाजपा दिल्ली प्रदेश प्रवक्ता विक्रम बिधूड़ी, दक्षिण जिला महामंत्री बलबीर सिंह, निगम पार्षद रविन्द्र गुड्डी चैधरी, पूर्व निगम पार्षद नीरज गुप्ता, राजपाल पोसवाल, पूर्व मंडल अध्यक्ष श्री मनीष बिधूड़ी सहित भाजपा कार्यकर्ता एवं क्षेत्र के सम्मानित निवासी मौजूद रहे।

कीटों की घटती प्रजातियां: इको-सिस्टम को खतरा !

हाल ही में एक प्रतिष्ठित हिंदी दैनिक में एक खबर पढ़ी ।खबर थी कि-'पिछले 150 वर्षों में लाखों कीट प्रजातियां लुप्त हो चुकी है और हर साल शेष कीट बायोमास का 1% से 2.5% तक नष्ट हो रहा है ।' बड़ी बात यह है कि इन कीटों का पतन सिर्फ और सिर्फ महाद्वीपों तक ही सीमित नहीं है, बल्कि पृथ्वी के सबसे दूर बसे द्वीप भी इसकी चपेट में हैं ।बहरहाल, यह बहुत गंभीर और चिंताजनक पर्यावरणीय मुद्दा है कि आज दुनिया भर में चींटियाँ, मधुमक्खियाँ, तितलियाँ और अन्य परागण करने वाले कीट (पालीनेटर) कम हो रहे हैं। दूसरे शब्दों में कहें तो आज दुनिया भर में कीटों का संसार खतरे में है। उल्लेखनीय है कि महाद्वीपों और द्वीपों पर कीटों के पतन को वैज्ञानिक 'इनसेक्ट एपोकलिप्स' यानी 'कीट प्रलय' के नाम से जानते हैं। वास्तव में, इनके घटने के कई कारण हैं। मसलन, इनमें क्रमशः खेती में कीटनाशकों का अंधाधुंध और अवैज्ञानिक प्रयोग, कीटों के प्राकृतिक आवासों (हेबिटेट) का लगातार नष्ट होना, जलवायु परिवर्तन, बढ़ता पर्यावरणीय प्रदूषण (मिट्टी,जल, वायु), बीमारियाँ और परजीवी आदि को शामिल किया जा सकता है। यहां तक कि प्रकाश और ध्वनि प्रदूषण भी कीटों की विलुप्ति का एक बड़ा कारण बनकर उभरा है ।कहना ग़लत नहीं होगा कि खेतों में उपयोग किए जाने वाले रसायनों से मधुमक्खियों और तितलियों की मृत्यु हो रही है। यहां तक कि चींटियाँ भी इन जहरीले पदार्थों के संपर्क में आकर मर जाती हैं ।जंगलों की लगातार व अंधाधुंध कटाई, शहरों का विस्तार(शहरीकरण), अंधाधुंध विकास कार्य और खेतों का एकल फसलीकरण (मोनोकल्चर) इनके प्राकृतिक निवास स्थान(नेचुरल हेबिटेट) को खत्म कर रहा है ।तापमान में बदलाव, बारिश के पैटर्न में असंतुलन, और सूखा जैसी समस्याएँ कीटों के जीवन चक्र को प्रभावित कर रही हैं। आज वायरस और फंगल संक्रमण मधुमक्खियों और अन्य कीटों की जनसंख्या को तेजी से कम कर रहे हैं। वास्तव में कीटों को आज बचाने की, इनका संरक्षण करने की आवश्यकता है, क्यों कि ये जहां एक ओर परागण में भूमिका निभाते हैं, वहीं दूसरी ओर कीट जैव विविधता के संतुलन को बनाए रखने के साथ ही साथ पर्यावरणीय स्वास्थ्य को बनाए रखते हैं। पाठक जानते होंगे कि मधुमक्खियाँ, तितलियाँ और अन्य कीट पौधों को परागित करते हैं। इससे फल, सब्ज़ियाँ और अनाज उत्पन्न होते हैं। इनके बिना खाद्य श्रृंखला(फूड चेन) प्रभावित हो सकती है। पाठकों को बताता चलूं कि चींटियाँ और अन्य कीट मिट्टी को समृद्ध बनाने, पोषक तत्वों के चक्र में मदद करने और अन्य जीवों के लिए भोजन का स्रोत हैं। इनके घटने से पारिस्थितिकी तंत्र(इको सिस्टम) असंतुलित(इमबेलेंस) हो सकता है, जिससे अन्य जीवों पर भी बुरा असर पड़ सकता है। यहां कहना ग़लत नहीं होगा कि धरती पर कीट प्रलय यानी कीटों (जैसे – मधुमक्खियाँ, तितलियाँ, भृंग, चींटियाँ, मक्खियाँ आदि) की संख्या में बहुत बड़े पैमाने पर गिरावट या समाप्ति से गंभीर पर्यावरणीय, आर्थिक और सामाजिक परिणाम हो सकते हैं, इसलिए कीटों को बचाना बहुत ही महत्वपूर्ण और अहम्है। धरती पर हर जीव,हर कीट, हर वनस्पतियां महत्वपूर्ण हैं। पर्यावरण का अपना एक सिस्टम है और पर्यावरण के किसी भी घटक को नुकसान पहुंचने से पर्यावरण, पारिस्थितिकी तंत्र, मानव स्वास्थ्य को हर हाल में नुकसान पहुंचेगा ।कीट नहीं होंगे तो परागण संकट पैदा हो जाएगा। दरअसल, फसलों का परागण मुख्य रूप से मधुमक्खियों और तितलियों द्वारा ही होता है। इनके कम होने से फल, सब्जियाँ, बीज, और अनाज की पैदावार घटेगी। खाद्य सुरक्षा संकट उत्पन्न होगा और कीमतें बढ़ सकती हैं ।कीट अनेक जीवों का भोजन हैं जैसे कि पक्षी, छिपकली, मेंढक, चमगादड़ आदि और यदि कीट नहीं होंगे तो इन जीवों के समक्ष जीवन का खतरा पैदा हो जाएगा ।सच तो यह है कि कीट घटने से पूरी की पूरी खाद्य श्रृंखला प्रभावित होगी, जिससे जैव-विविधता का नुकसान होगा ।कई पौधों के प्रजनन के लिए कीट आवश्यक हैं ।कीट नहीं होंगे तो वनस्पति भी कहीं न कहीं अवश्य ही प्रभावित होगी। तथ्य यह है कि इनके बिना जंगलों और प्राकृतिक पारिस्थितिक तंत्र का विस्तार रुक जाएगा। हमें यह बात अपने जेहन में रखनी चाहिए कि कुछ कीट रोग फैलाते हैं, लेकिन कई उपयोगी कीट रोग नियंत्रित भी करते हैं। कीट नहीं होंगे तो मानव स्वास्थ्य भी प्रभावित होगा, जैसा कि संतुलन बिगड़ने से रोगों का प्रसार बढ़ सकता है। कीटों के नहीं होने से आर्थिक नुकसान पहुंचेगा और कृषि पर आधारित अर्थव्यवस्था प्रभावित होगी। कहना ग़लत नहीं होगा कि किसानों की आय घटेगी, खाद्यान्न संकट बढ़ेगा और सामाजिक असमानता भी बढ़ सकती है। कीटों की आबादी कम होने से प्राकृतिक पुनर्चक्रण रुक जाएगा, जैसा कि कई कीट मृत जीवों को विघटित कर पोषक तत्वों को मिट्टी में लौटाते हैं। सच तो यह है कि इनके बिना जैविक कचरा बढ़ेगा और मिट्टी की गुणवत्ता खराब होगी। इतना ही नहीं, जलवायु और पर्यावरण पर भी दीर्घकालिक प्रभाव पड़ेंगे। वनस्पति और पारिस्थितिकी पर असर पड़ने से कार्बन अवशोषण कम होगा। यहां तक कि जलवायु परिवर्तन की प्रक्रिया और तेज़ हो सकती है। बहरहाल, प्रतिष्ठित हिंदी दैनिक ने यह लिखा है कि जापान के ओकिनावा इंस्टीट्यूट ऑफ साइंस एंड टेक्नोलॉजी के एन्टोमोलॉजिस्ट इवान इकोनोमो ने फिजी द्वीपसमूह की चींटी प्रजातियों के जीनोम विश्लेषण से बताया है कि यहां स्वदेशी चींटी प्रजातियां 79% घट गई हैं। गिरावट इंसानों के द्वीपों पर करीब 3,000 साल पहले आगमन के साथ शुरू हुई और पिछले 300 वर्षों में यूरोपीय संपर्क, वैश्विक व्यापार और आधुनिक कृषि के फैलाव के साथ तेज हो गई। यह शोध जर्नल साइंस में प्रकाशित हुआ है। यहां पाठकों को जानकारी देना चाहूंगा कि (वैज्ञानिकों के अनुसार), पृथ्वी पर लगभग 5.5 मिलियन कीट प्रजातियाँ हो सकती हैं, जिनमें से लगभग 1 मिलियन को ही अब तक वैज्ञानिकों ने पहचाना और नामित किया है। इसका अर्थ यह है कि लगभग 80% कीट प्रजातियाँ अभी भी अज्ञात हैं, जो जैविक अनुसंधान के लिए एक बड़ा क्षेत्र प्रस्तुत करती हैं। अंतर्राष्ट्रीय प्रकृति संरक्षण संघ (आईयूसीएन) के अनुसार, जुलाई 2016 तक 58 कीट प्रजातियाँ पूरी तरह से विलुप्त हो चुकी हैं, जबकि 46 प्रजातियाँ विलुप्त होने की कगार पर हैं और एक प्रजाति केवल वन्यजीवों में ही विलुप्त हो चुकी है। यहां यदि हम कीटों की विलुप्ति दर की बात करें तो वैश्विक स्तर पर, पिछले 150 वर्षों में कीटों की लगभग 5% से 10% प्रजातियाँ विलुप्त हो चुकी हैं, जो लगभग 250,000 से 500,000 प्रजातियों के बराबर है। गौरतलब है कि जर्मनी में 63 नेचर रिजर्व्स में उड़ने वाले कीट 30 वर्षों में 75% तक घट गए। इतना ही नहीं, अमरीका में बीटल की संख्या 45 वर्षों में 83% घटी और तितलियों की कई प्रजातियां संकट में हैं। यूरोप की घासभूमि में तितलियों की आबादी केवल एक दशक में 36% घटी है ।कीट प्रलय का असर भारत में भी दिख रहा है ।एक उपलब्ध जानकारी के अनुसार मेलघाट, महाराष्ट्र में प्रकाश प्रदूषण ने मेफ़्लाई और अन्य कीटों की संख्या को लगभग 2% प्रति वर्ष की दर से घटा दिया है। जंगलों के पास बने रिसॉर्ट्स और उनकी तेज रोशनी कीटों के प्राकृतिक चक्र को तोड़ रही है। भारत के हिमालय प्रदेश में मधुमक्खियों और तितलियों जैसे परागणकर्ता की संख्या और विविधता लगातार घटती चली जा रही है ।पश्चिमी घाट, जिसे भारत का जैव विविधता हॉटस्पॉट माना जाता है, में कीटों की संख्या में गिरावट एक गंभीर चिंता का विषय बन चुकी है। यह क्षेत्र 6,000 से अधिक कीट प्रजातियों का घर है, जिनमें से कई प्रजातियाँ केवल यहीं पाई जाती हैं। एक उपलब्ध जानकारी के अनुसार दक्षिणी पश्चिमी घाट में तापमान में लगभग 0.8°C की वृद्धि दर्ज की गई है, जो कीटों की विविधता और संख्या में गिरावट का कारण बन रही है। आंकड़े बताते हैं कि पुणे जिले में आठ ड्रैगनफ्लाई प्रजातियाँ स्थानीय रूप से विलुप्त हो गई हैं, जबकि 27 नई प्रजातियाँ पाई गई हैं, जो पर्यावरणीय बदलावों का संकेत देती हैं। इतना ही नहीं, पश्चिमी घाट की बात करें तो जूलॉजिकल सर्वे ऑफ इंडिया की रिसर्च बताती है कि सुरक्षित जंगलों में मूल चींटी प्रजातियां फल-फूल रही हैं, लेकिन कॉफी, चाय और रबर के बागानों में आक्रामक प्रजातियां हावी हो रही हैं। बहरहाल,कीटों की गिरती संख्या न केवल पारिस्थितिकी तंत्र(इको सिस्टम) के लिए, बल्कि मानव जीवन के लिए भी खतरे की घंटी है, क्योंकि ये परागण, पोषक चक्रण और खाद्य श्रृंखला के महत्वपूर्ण हिस्से हैं। इसलिए, हमारे देश में विशेषकर पश्चिमी घाट में कीटों की विविधता और संख्या की रक्षा के लिए तत्काल और प्रभावी संरक्षण उपायों की आवश्यकता है। आज कीटों की विभिन्न प्रजातियों के संरक्षण के लिए जरूरी कदम उठाए जाने की आवश्यकता है। मसलन, इसके लिए हमें यह चाहिए कि हम रसायनों (कीटनाशकों) के उपयोग में कटौती करें। आर्गेनिक खेती को बढ़ावा देने की दिशा में आवश्यक कदम उठाएं। जैव विविधता के संरक्षण के लिए कदम उठाए जाने आवश्यक हैं। हमें यह चाहिए कि हम शहरी और ग्रामीण क्षेत्रों में मधुमक्खी पालन को बढ़ावा दें। कीटों के प्राकृतिक आवासों की हर हाल में रक्षा करें। वैज्ञानिक अनुसंधान और नीति निर्माण इस दिशा में सकारात्मक कदम साबित हो सकते हैं। कीटों की विलुप्ति एक गंभीर पर्यावरणीय संकट है, लेकिन यदि समय रहते जागरूकता, नीति और सामूहिक प्रयास किए जाएं, तो इसे काफी हद तक रोका जा सकता है। चाहे पर्यावरण प्रेमी हों या नीति निर्माता, यह विषय सबके लिए महत्वपूर्ण है।

सुनील कुमार महला, फ्रीलांस राइटर, कालमिस्ट व युवा साहित्यकार, उत्तराखंड।

इन चीजों के साथ मिलकर नींबू बन जाता है जहर; भूलकर भी न करें खाने की गलती, पड़ जाएंगे लेने के देने

नींबू सेहत के लिए फायदेमंद होता है। यह अपने खट्टे स्वाद से न सिर्फ खाने का स्वाद बढ़ाता है बल्कि सेहत को भी दुरुस्त बनाता है। हालांकि कुछ ऐसी चीजें हैं जिसके साथ नींबू को खाना सेहत को गंभीर नुकसान पहुंचा सकता है। आज इस आर्टिकल में हम इन्हीं चीजों के बारे में जानेंगे।

नींबू के साथ कभी न खाएं ये चीजें

नींबू अपने खट्टे स्वाद की वजह से अक्सर खानपान में इस्तेमाल किया जाता है।

यह विटामिन-सी समेत कई जरूरी पोषक तत्वों से भरपूर होता है।

हालांकि, कुछ चीजों के साथ इसे खाना हानिकारक होता है।

लाइफस्टाइल डेस्क, नई दिल्ली। नींबू सेहत के लिए काफी लाभकारी माना जाता है। इसमें मौजूद विटामिन सी, एंटीऑक्सीडेंट्स और डिटॉक्सिफाइंग गुण शरीर को हेल्दी और एनर्जेटिक बनाए रखने में मदद करते हैं। यह पाचन को दुरुस्त करता है, स्किन टोन को निखारता है और वेट लॉस करने में सहायक होता है।

लेकिन नींबू को अगर कुछ खास चीजों के साथ खाया जाए, तो यह शरीर के लिए फायदेमंद नहीं बल्कि हानिकारक भी साबित हो सकता है। इसका गलत फूड कॉम्बिनेशन पूरे डाइजेस्टिव सिस्टम को बिगाड़ सकता है, एलर्जी, गैस और स्किन रिलेटेड समस्याएं पैदा कर सकता है। आइए जानते हैं उन चीजों के बारे में जिन्हें नींबू के साथ नहीं खाना चाहिए।

दूध सहित सभी डेयरी प्रॉडक्ट्स

नींबू का एसिड दूध या दही जैसे डेयरी उत्पादों को फाड़ सकता है, जिससे पाचन क्रिया गड़बड़ा सकती है। इससे गैस, एसिडिटी, पेट में भारीपन और स्किन रिएक्शन जैसे लक्षण हो सकते हैं।

अंडों के साथ न खाएं नींबू

अंडे प्रोटीन का अच्छा स्रोत हैं लेकिन नींबू के साथ सेवन करने पर यह मिश्रण कुछ लोगों के लिए एलर्जिक या डायजेस्ट करने में परेशआनी का कारण बन सकता है। खासतौर पर कच्चे या अध पके अंडों में इसका प्रभाव अधिक होता है।

खट्टी फलियों (आम और इमली) के साथ नींबू न खाएं

नींबू, आम और इमली सभी खट्टी तासीर के होते हैं। एक साथ सेवन करने से अत्यधिक एसिडिटी पैदा होती है जो पेट दर्द, और छाले का कारण बन सकती है।

मीठे फलों के साथ नींबू न खाएं

नींबू का एसिड और मीठे फलों की शुगर आपस में मिलकर फर्मेंटेशन की प्रक्रिया शुरू कर सकते हैं, जिससे गैस, अपच और ब्लोटिंग जैसी समस्याएं हो सकती हैं।

सिरका, खीरा और टमाटर के साथ न खाएं नींबू

इन सभी की तासीर ठंडी होती है और इनमें से सिरका और टमाटर में पहले से ही एसिड होता है। ऐसे में इनके साथ नींबू मिलाने से एसिडिटी की समस्या बढ़ सकती है और पेट में जलन या सीने में जलन की परेशानी हो सकती है।

स्पाइसी फूड्स के साथ नींबू न खाएं

मसालेदार खाने में नींबू मिलाने से पाचन तंत्र पर एक्स्ट्रा प्रेशर पड़ता है। इससे गैस, जलन और अल्सर जैसी स्थितियां उत्पन्न हो सकती हैं।

हल्दी के साथ नींबू न खाएं

हल्दी और नींबू दोनों ही शक्तिशाली प्राकृतिक औषधियां हैं, लेकिन साथ लेने पर कुछ लोगों को स्किन एलर्जी, जलन या पेट की समस्याएं हो सकती हैं।

नींबू का सेवन तभी लाभकारी होता है जब इसे सही समय और सही खाद्य पदार्थों के साथ लिया जाए। गलत फूड कॉम्बिनेशन से इसके लाभ की जगह नुकसान उठाना पड़ सकता है।

कासगंज बेखौफ भूमाफिया, 15 बीघा ज़मीन पर काटी कॉलोनी, पेड़ काटकर वन विभाग की जमीन पर निकाला रास्ता

अंकित गुप्ता कासगंज

कासगंज योगी सरकार की सख्ती और कानून का डर कागजी घोडा बनकर जनमानस के अंदर दौड रहा हो, लेकिन भूमाफिया की हिम्मत कम नहीं हो रही है। कासगंज के सहावर रोड स्थित गोरहा क्षेत्र में प्रॉपर्टी डीलरों ने वन विभाग की जमीन पर अवैध कब्जा कर 'बांके बिहारी कॉलोनी' बसा दी। पेड़ काटकर और तारबंदी हटाकर कॉलोनी के लिए रास्ता निकाल लिया गया है। इस कॉलोनी को अभी तक प्रशासनिक स्वीकृति भी नहीं मिली है, फिर भी दर्जनों प्लॉट बिक चुके हैं।

वन भूमि पर कब्जा, नियमों की उड़ाई धज्जियां

गोरहा से नहर के किनारे सहावर मार्ग पर लगभग एक किलोमीटर दूर स्थित क्षेत्र में शहर के एक दर्जन से अधिक प्रॉपर्टी डीलरों ने करीब 15बीघा जमीन पर कॉलोनी विकसित कर दी है। खेत के सामने वन विभाग की जमीन है, जहां पहले तारबंदी और पेड़ थे। आरोप है कि डीलरों ने तार हटवाकर वन भूमि पर रास्ता निकाल लिया और दर्जनों पेड़ भी कटवा दिए।

बिना मंजूरी हो रही प्लॉटिंग और बिक्री

कॉलोनी की न तो कोई आधिकारिक मंजूरी है और न ही इसे आबादी क्षेत्र घोषित किया गया है। बावजूद इसके कॉलोनी के मुख्य गेट से दर्जनों प्लॉट बेचे जा चुके हैं। इस तरह की अनियमितता से न सिर्फ पर्यावरण को नुकसान हो

रहा है, बल्कि सरकारी भूमि पर अवैध कब्जे की प्रवृत्ति भी बढ़ रही है।

प्रशासन और वन विभाग की भूमिका सवालों के घेरे में

जब इस मामले में एसडीएम संजीव सिंह से बात की गई तो उन्होंने कहा कि, "यह कॉलोनी अभी अधिकारिक रूप से प्रमाणित नहीं है। कॉलोनी बसाने से पहले अनुमति और जरूरी प्रक्रियाएं पूरी करना अनिवार्य है।" वहीं, वन अधिकारी संजीव कुमार ने बताया कि मामला संज्ञान में लिया गया है और रेंजर विपिन यादव को जांच के लिए भेजा गया है। उन्होंने कहा, "अगर अवैध कब्जा पाया गया तो विधिक कार्रवाई की जाएगी। कॉलोनी के लिए वन विभाग की भूमि से रास्ता नहीं दिया जा सकता।

वरिष्ठ कवि आनंद जैन "अकेला" कटनी का सम्मान जोधपुर राजस्थान में किया गया

हरिहर सिंह चौहान

साहित्यिक संस्था उड़ान साहित्य मंच जोधपुर राजस्थान के सौजन्य से ,हिंदी दिवस के अवसर पर,एक समृद्ध काव्य गोष्ठी व सम्मान समारोह आयोजित किया गया ।

कवि आनंद जैन अकेला जी को माला ,जोधपुरी साफा,शाल पहनाकर सम्मानित किया गया ।तत्पश्चात प्रारंभ हुई काव्य गोष्ठी में पधारे जोधपुर राजस्थान शहर के, अनेक रचनाकारों ने एक से बढ़कर एक रचनाएं सुनाई ।

इस अवसर पर मेहमान साहित्यकार कवि श्री आंनद जैन ₹अकेला₹ कटनी मध्यप्रदेश का, हिंदी में उनके योगदान के लिए, साहित्यकारों ने ₹अकेला₹ जी का, तहेदिल से स्वागत व सम्मान किया ।

कवि आंनद जैन ₹अकेला₹ जी कटनी ,साहित्य के क्षेत्र में शीर्ष स्थान प्राप्त समरस संस्थान साहित्य सृजन भारत अहमदाबाद के राष्ट्रीय महा मंत्री पद पर आसीन हैं।

इस अवसर पर उन्होंने अपनी गजलें पढ़ते हुए कहा कि जुगनुओं की

तरह ,टिमटिमाते रहो ।
तीरगी ज़िंदगी से,मिटाते रहो ।।
ज़ख्म भी हैं बहुत ,
दर्द भी कम नहीं ।
अश्क पीते रहो, मुस्कुराते रहो ।।
फिसलन भरी हैं राहें ,चलना सम्भल- सम्भल के।
लोगों से दिल की बातें,करना सम्भल- सम्भल के।।

इन ग़ज़लों को तरन्नुम में सुनकर खूब दाद लूटी। शायर खुर्शीद खैराडी ने उलझा है इस चराग मचलतीं हवा में आज, कवियित्री दीपा टाक ने ओ मेरी पूजा तेरे सिवा नहीं है मेरा दुनिया में दूजा। अशफाक फौजदार ने तुझसे करुं तकरार ना बाबा ना बाबा, शायरा डॉ. संजीदा ख़ानम शाहीन ने फिर से टूटा ख्वाब सजाकर देखूंगी, अपनी नींदें आज उड़ाकर देखूंगी। प्रशांत सोऊ ने हार सिर्फ एक अवसर है। अरुण जोशी ने मेरी आंखों में तूं रहतीं हैं, काजल की तरह तथा वरिष्ठ शायर मनशाह नायक ने जैसे कि जून मिल गया हो जनवरी के साथ, ऐसा ही कुछ हुआ मेरी जिंदगी के साथ। ग़ज़ल पढ़ कर समां बांध दिया। यह जानकारी उड़ान कला साहित्य मंच की राखी पुरोहित जोधपुर व मध्यप्रदेश इन्दौर के स्वतंत्र लेखक व साहित्यकार हरिहर सिंह चौहान ने प्रेस विज्ञप्ति में दी है।

दिनदहाड़े लाखों की चोरी....

बदायूं: थाना बिनावर क्षेत्र के गांव घटपुरी में गुरुवार दोपहर एक घर में दिनदहाड़े लाखों की चोरी हो गई। चोरों ने घर के ताले तोड़कर लाखों रुपए के जेवर और नकदी पार कर दी। घटना की जानकारी तब हुई जब परिवार के सदस्य वापस लौटे। यह घटना बिनावर थाना क्षेत्र के गांव घटपुरी की है। शैलेंद्र सिंह का परिवार जयपुर में कार्यरत है, जबकि उनकी पत्नी मंजू देवी अपने दो बेटों और एक बेटी के साथ यहां रहती हैं। चोरी उस समय हुई जब परिवार के सदस्य घर से बाहर थे। बेटे आर्यन के अनुसार, उनकी मां मंजू देवी छोटी बहन के साथ दवा लेने बदायूं गई थीं, जबकि एक भाई स्कूल गया था और आर्यन भी घर से बाहर थे। दोपहर लगभग दो बजे जब आर्यन वापस लौटे, तो उन्होंने देखा कि मुख्य द्वार का ताला तो सही था, लेकिन अंदर के कमरों के ताले टूटे हुए थे और एक कमरे का दरवाजा भी उखड़ा पड़ा था। अलमारी भी खुली मिली। तत्काल पुलिस को सूचना दी गई। मौके पर पहुंची पुलिस और फील्ड यूनिट की टीम ने घटनास्थल का मुआयना किया और फिंगर प्रिंट सहित अन्य साक्ष्य जुटाए। टीम ने लगभग दो घंटे तक जांच की। फिलहाल, भुक्तभोगी परिवार चोरी हुए सामान की गणना कर रहा है। दिनदहाड़े हुई इस वारदात ने इलाके में सुरक्षा व्यवस्था पर सवाल खड़े कर दिए हैं।

वक्त और राजनीति का पहिया- वक्त की अनंत शक्ति-राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय संदर्भों में एक गहन विश्लेषण

एडवोकेट किशन सनमुखदास भावनानीं गोंदिया महाराष्ट्र

वैश्विक स्तरपर मानव इतिहास गवाह है कि वक्त कभी किसी का स्थायी साथी नहीं रहा ।वक्त हमेशा से मनुष्य की समझ और नियंत्रण से परे रहा है। यह किसी का सगा नहीं होता, यह न रुकता है और न ही किसी के लिए ठहरता है। राजनीति में वक्त का महत्व और भी बढ़ जाता है क्योंकि सत्ता,नेतृत्व और जनमत समय की धाराओं पर ही टिका रहता है ।आज जब हम राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय राजनीति के हालात देखते हैं, तो साफ प्रतीत होता है कि वक्त ने कई बड़े नेताओं, दलों और विचारधाराओं को शिखर तक पहुँचाया और फिर उसी वक्त ने उन्हें ज़मीन पर ला दिया। यही कारण है कि वक्त का पहिया हमेशा करवट बदलता रहता है। मैं एडवोकेट किशन सनमुखदास भावनानीं गोंदिया महाराष्ट्र ने अपने जीवन में देखा हूं कि जो साम्राज्य कभी अजेय माने जाते थे, वे धराशायी हो गए। जो नेता कभी अमर समझे जाते थे, वे इतिहास के पन्नों में फीके पड़ गए। राजनीति और सत्ता का हर खेल वक्त की ही मेहरबानी या बेरुख़ी पर आधारित है। वर्तमान राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय राजनीति में यह कहावत और भी सटीक बैठती है कि "वक्त कभी किसी का सगा नहीं होता, यह करवट बदलते ही शिखर को जमीन और जमीन को शिखर बना देता है।"

साथियों बात अगर हम वक्त कभी किसी का सगा नहीं किस पर अनुभव का राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय राजनीति का विश्लेषण करें तो (1)भारतीय राजनीति का दृष्टिकोण -भारतीय राजनीति इसका सबसे बड़ा उदाहरण है। आज़ादी के बाद कांग्रेस का वर्चस्व इतना मजबूत था कि उसे "नेचुरल पार्टी ऑफ गवर्नेंस" कहा जाने लगा। जवाहरलाल नेहरू से लेकर इंदिरा गांधी और राजीव गांधी तक, कांग्रेस ने दशकों तक सत्ता पर एकछत्र शासन किया। परंतु वक्त ने करवट ली और 2014 के बाद कांग्रेस सत्ता से दूर होती चली गई ।आज वही भारतीय जनता पार्टी,जो 1980-90 के दशक में सीमित सीटों तक सिमटी थी, राष्ट्रीय राजनीति की धुरी बन चुकी है। नरेंद्र मोदी का नेतृत्व आज भारतीय राजनीति की सबसे बड़ी ताकत है। लेकिन यह भी सच है कि वक्त कभी किसी का सगा नहीं होता। जिस तरह कांग्रेस सत्ता से गिर गई, उसी तरह भविष्य में भाजपा को भी यही चुनौती झेलनी पड़ सकती है। (2) अंतरराष्ट्रीय राजनीति-अमेरिका में डोनाल्ड ट्रंप का उदाहरण बेहद प्रासंगिक है। 2016 में उन्होंने सबको चौंकाते हुए राष्ट्रपति पद जीता और खुद को अमेरिका का 'परम नेता' मान बैठे। लेकिन 2020 में वे हार गए और उन्हें सत्ता छोड़नी पड़ी। यही नहीं,6 जनवरी 2021 को कैपिटल हिल पर उनके समर्थकों की हिंसा ने उनकी छवि को और धूमिल कर दिया ।लेकिन आज 2025 में ट्रंप फिर से वापसी कर रहे हैं। यही वक्त की असली तस्वीर है -यह न तो स्थायी हार देता है और न स्थायी जीत। (3) रूस-यूक्रेन युद्ध भी इस कथन को चरितार्थ करता है। व्लादिमीर पुतिन ने 2022 में युद्ध छेड़ा था, उम्मीद थी कि कुछ ही दिनों में यूक्रेन रूस के सामने घुटने टेक देगा। लेकिन वक्त ने करवट ली और वही युद्ध रूस के लिए दलदल बन गया। रूस की अर्थव्यवस्था को प्रतिबंधों ने कमजोर किया और पुतिन की छवि पर भी गहरा असर पड़ा।(4) मध्य-पूर्व का परिप्रेक्ष्य- इज़राइल-फ़िलिस्तीन संघर्ष भी दिखाता है कि वक्त कभी किसी का नहीं होता। कभी इज़राइल को अजेय माना जाता था,लेकिन 2023-24 के गाज़ा संघर्ष ने उसकी छवि को धक्का पहुँचाया। वहीं फ़िलिस्तीनी मुद्दा जो अंतरराष्ट्रीय स्तर पर दब चुका था,आज फिर से प्रमुख हो गया।

साथियों बात कर हम वक्त का पहिया हमेशा एक जैसा नहीं रहता राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय नेताओं से विश्लेषण अनुभव के आधार पर करें तो(1)भारत के नेताओं का उत्थान-पतन-भारत में लाल बहादुर शास्त्री का अचानक प्रधानमंत्री बनना और 'जय जवान जय किसान' के नारे से अमर हो जाना दर्शाता है कि वक्त का पहिया कब किसे उठाए, कहा नहीं जा सकता। वहीं इंदिरा गांधी का 'आयरन लेडी' बनना और फिर आपातकाल में गिरती लोकप्रियता दिखाती है कि सत्ता का समय सदा समान नहीं रहता ।नरेंद्र मोदी का वर्तमान वक्त सुनहरा है। वे न केवल भारत बल्कि दुनियाँ के सबसे लोकप्रिय नेताओं में शुमार हैं ।अभी उनका हाल ही में 17 सितंबर 2025 को 75वें जन्मदिवस पर दुनिया भर से शुभकामनाएं आईं. आम जनता से लेकर अंतरराष्ट्रीय नेताओं और आध्यात्मिक गुरुओं तक, सभी ने प्रधानमंत्री को दीर्घायु और स्वस्थ जीवन की कामना करते हुए उनके नेतृत्व की सराहना की है ।लेकिन राजनीति में यह स्थायी नहीं। विपक्ष का उभार, जनमत का बदलाव और वैश्विक परिस्थितियाँ भविष्य में उनकी चुनौती बन सकती हैं।(2)अंतरराष्ट्रीय राजनीति में उदाहरण- बराक ओबामा का दौर 'येस वी कैन' और उम्मीद का प्रतीक था। परंतु उसी अमेरिका ने 2016 में ट्रंप को चुना, जिन्होंने बिल्कुल उलटी नीतियाँ अपनाईं। यह वक्त के पहिए का सटीक उदाहरण है ।ब्रिटेन में बोरिस जॉनसन कभी ब्रेक्ज़िट के नायक माने गए, लेकिन कोविड-19 की अव्यवस्था और पार्टीगेट स्कैंडल ने उनका राजनीतिक करियर खत्म कर दिया ।जर्मनी में एंजेला मर्केल का 16 साल का लंबा शासन खत्म हुआ

और एक नए युग की शुरुआत हुई। यह दर्शाता है कि सत्ता कितनी भी मज़बूत क्यों न लगे, वक्त का पहिया उसे बदल ही देता है।

साथियों बात अगर हम वक्त का पहिया कैसे करवट बदल लेता है,अतीत और वर्तमान का तुलनात्मक विश्लेषण करें तो(1)भारत का बदलाव- 1950 -70 के दशक का भारत गरीबी, विदेशी तकनीक और आयात पर निर्भर था। लेकिन 1991 की आर्थिक उदारीकरण की करवट ने भारत को बदल दिया। आज वही भारत दुनिया की तीसरी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बनने की ओर है ।नेहरू के भारत और मोदी के भारत में फर्क यही वक्त का खेल है। पहले पंचवर्षीय योजनाएँ राजनीति की धुरी थीं, आज डिजिटल इंडिया, स्टार्टअप इंडिया और मेक इन इंडिया नए भारत की पहचान हैं।(2)विश्व राजनीति का बदलाव-(अ) सोवियत संघ कभी महाशक्ति था, लेकिन 1991 में उसका विघटन हो गया। अमेरिका, जो वियतनाम युद्ध में हार चुका था, वही शीत युद्ध का विजेता बन गया। चीन, जो 1970 में पिछड़ा हुआ था, आज अमेरिका को चुनौती दे रहा है।(ब)अरब देशों का तेल साम्राज्य भी वक्त के पहिए का शिकार हो रहा है। कभी पेट्रोलियम उनकी शक्ति था, आज नवीकरणीय ऊर्जा और इलेक्ट्रिक वाहन उनके प्रभुत्व को चुनौती दे रहे हैं।(स)आधुनिक युग में वक्त की गति-21वीं सदी में वक्त का बदलाव और तेज़ हो गया है। सोशल मीडिया, 24×7 न्यूज़ और कृत्रिम बुद्धिमत्ता ने राजनीति को पल-पल बदलने वाला खेल बना दिया है ।आज एक ट्वीट या वायरल वीडियो किसी नेता का राजनीतिक करियर बना सकता है या बिगाड़ सकता है। 2024-25 के चुनावों में हमने देखा कि डिजिटल कैंपेन और सोशल मीडिया ट्रेंड्स ने नीतियों से बहुत ज्यादा असर डाला।

साथियों बात अगर हम वक्त के पहिए का हम खुद अपने पुराने और आज के वक्त का ही विश्लेषण कर ले कि कुछ साल या दशक पूर्व हम क्या थे और अब क्या हैं, तो हमें पता चल ही जाएगा कि वक्त कभी एक सा नहीं रहता, इतना ही नहीं अगर हम अपने ही समाज या पीढ़ियों का विश्लेषण करें तो हमें अंदाज लग जाएगा कि वक्त का पहिया कैसे घूमकर बदलते रहता है इसलिए ही बड़े बुजुर्गों का कहना हैं, समय-समय की बात है आज तुम्हारा समय है कल हमारा समय भी आएगा। हम हमारे शहर जिले राज्य या राष्ट्र की स्थिति देखें, तो हमें ऐसे कई उदाहरण मिल जाएंगे, अपने को बड़े शहंशाह, तीरंदाज कहने मानने वाले लोगों को भी हमने लाचार, तारतार होते देखा होगा, जिनके पास बेशुमार, दौलत पावर था और सबकुछ खरीद सकते थे परंतु वक्त का पहिया ऐसा फिसला कि उनका पैसा, पावर सब कुछ जमींदोज़ हो गया और पैसे पैसे को मोहताज हो गए,हमने सुना ही नहीं अपनी आंखों से देखा भी जरूर होगा या फिर हमें यह अपने उम्र के बढ़ते चढ़ाव पर देखने को जरूर मिल जाएगा।

अतः अगर हम उपरोक्त पूरे विवरण का अध्ययन कर इसका विश्लेषण करें तो हम पाएंगे कि राजनीति में वक्त ही असली निर्णायक है। वक्त कभी किसी का सगा नहीं होता। यह शिखर को ज़मीन और ज़मीन को शिखर बना देता है। भारत, अमेरिका, रूस, चीन, यूरोप, मध्य-पूर्व—हर जगह यह सिद्धांत समान रूप से लागू होता है नेताओं और राष्ट्रों को यह समझना चाहिए कि सत्ता और लोकप्रियता क्षणिक हैं। स्थायी केवल परिवर्तन है। इसीलिए यह याद रखना ज़रूरी है कि वक्त का पहिया हमेशा घूमता है और राजनीति का हर समीकरण उसी के हिसाब से बदलता है।

बीवाईडी का कमाल: 472.41km/h की टॉप-स्पीड से दौड़ी इलेक्ट्रिक कार

बीवाईडी की YANGWANG U9 Track Edition सुपरकार ने जर्मनी के ऑटोमोटिव टेस्टिंग ट्रैक पर 472.41 किमी/घंटा की टॉप स्पीड से नया इलेक्ट्रिक कार रिकॉर्ड बनाया। यह कार e4 प्लेटफॉर्म और DiSus-X आर्किटेक्चर पर बनी है जिसमें क्वाड-मोटर सिस्टम है। ड्राइवर मार्क बासेंग ने यह रिकॉर्ड बनाया जिन्होंने कहा कि नई तकनीकों के साथ इसे संभव बनाया गया। YANGWANG अब दुनिया की सबसे फ़ास्ट इलेक्ट्रिक कार बन गयी है।

नई दिल्ली। हाल ही में BYD की YANGWANG ने जर्मनी के AYP ऑटोमोटिव टेस्टिंग पापेनबर्ग टेस्ट ट्रैक पर 472.41 किमी/घंटा की स्पीड का नया ग्लोबल इलेक्ट्रिक कार के टॉप-स्पीड का रिकॉर्ड बनाया है। इस टॉप स्पीड को YANGWANG U9 Track Edition सुपरकार ने हासिल की है, जो दुनिया की सबसे फास्ट ईलेक्ट्रिक कार बन गई है।

परफॉर्मेंस रहा काफी शानदार

YANGWANG U9 Track Edition को उसी e4 प्लेटफॉर्म और DiSus-X कोर आर्किटेक्चर पर बनाया गया है, जिस पर चीन में बिक रही YANGWANG U9 बेस्ड है। इसके अलावा, समें दुनिया का पहला बड़े पैमाने पर उत्पादित 1200V अल्ट्रा-हाई-वोल्टेज वाहन प्लेटफॉर्म है, जिसे एक्सट्रीम स्थितियों के लिए अनुकूलित थर्मल-मैनेजमेंट सिस्टम के साथ जोड़ा गया है।

YANGWANG U9 ट्रैक एडिशन में e4 प्लेटफॉर्म दिया गया है, जो 30,000rpm हाई-परफॉर्मेंस मोटर्स वाला दुनिया का पहला क्वाड-मोटर सिस्टम है। यह सिस्टम प्रति मोटर 555kW की पावर जनरेट करता है, जिससे संयुक्त सिस्टम आउटपुट 3,000PS से ज्यादा हो जाता है। यह कार को 1,217PS प्रति टन का पावर-टू-वेट रेशियो देता है, जो ग्लोबल ऑटोमोटिव उद्योग में शीर्ष पर रखता है।

इसके अलावा, e4 प्लेटफॉर्म का क्वाड-मोटर इंडिपेंडेंट टॉर्क-वेक्टरिंग सिस्टम लगातार सड़क से मिलने वाली जानकारी पर नजर रखता है और प्रति सेकंड 100 से अधिक बार की अल्ट्रा-हाई फ्रीक्वेंसी पर प्रत्येक पहिये के टॉर्क को एडजस्ट करता है। इसकी वजह से यह हाई स्पीड पर भी बॉडी पोस्चर पर पूरा कंट्रोल बनाए रखता है, जिससे हिया फिसलने या ट्रैक्शन खोने का कोई मौका नहीं रहता है।

YANGWANG U9 Track Edition के फीचर्स

इसे e4 प्लेटफॉर्म + DiSus-X तकनीकी आर्किटेक्चर पर डेवलप किया गया है, जो रेसट्रैक पर बॉडी पोस्चर कंट्रोल में रखने का काम करता है। इससे ड्राइवर को अच्छी सेफ्टी मिलने के साथ ही कार को कंट्रोल में रखने में भी मदद मिलती है। इसके अलावा, यांगवांग U9 ट्रैक एडिशन वर्तमान यांगवांग U9 के एयरोडायनामिक डिज़ाइन को बरकरार रखता है और इसमें एक उन्नत, वैकल्पिक कार्बन-फाइबर फ्रंट स्प्लिटर लगा है, जो पहले से ही बड़े पैमाने पर उत्पादन में है। व्हील-रिम इंटरफ़ेस पर एक अभिनव नलिंग ट्रीटमेंट, हाई-विस्कोसिटी लुब्रिकेंट के साथ मिलकर, हार्ड एक्सीलरेशन या ब्रेकिंग के दौरान टायर और रिम के बीच सापेक्ष स्लिप को कम करता है।

ड्राइवर मार्क बासेंग ने बनाया ये रिकॉर्ड

इस रिकॉर्ड को जर्मन पेशेवर ड्राइवर मार्क बासेंग के जरिए बनाया गया है, जो 2024 में पिछले ग्लोबल EV स्पीड रिकॉर्ड के पीछे थे। यांगवांग के लिए हाई-स्पीड परीक्षण पूरा करने के बाद, उन्होंने कहा कि पिछले साल, मैंने सोचा था कि मैं अपने शिखर पर पहुँच गया हूँ। मैंने कभी उम्मीद नहीं की थी कि मैं इतनी जल्दी अपना खुद का रिकॉर्ड तोड़ दूंगा, लेकिन हम यहाँ हैं, उसी ट्रैक पर, नई तकनीकों के साथ जिन्होंने इसे संभव बनाया है।

नई स्कोडा ऑक्टेविया इलेक्ट्रिक का आया नया टीजर; इस माह में होगी पेश, जानें क्या होगा खास

परिवहन विशेष न्यूज

स्कोडा सितंबर 2025 यानि इस माह में म्यूनिख IAA शो में विजन ओ वैगन कॉन्सेप्ट पेश करेगी जो नेक्स्ट-जनरेशन इलेक्ट्रिक ऑक्टाविया की झलक है। टीजर से इंटीरियर और एक्सटीरियर की हल्की झलक मिलती है जिसमें कनेक्टेड विंडस्क्रीन पैनोरमिक रूफ और मिनिमलिस्ट थीम शामिल हैं। टिकाऊ पाट्र्स के इस्तेमाल पर जोर दिया गया है जिसमें 3D-प्रिंटेड हेडरेस्ट भी शामिल हैं। इलेक्ट्रिक स्कोडा ऑक्टाविया को डेवलप करने के लिए SSP प्लेटफॉर्म का इस्तेमाल किया जाएगा।

नई दिल्ली। इस माह सितंबर 2025 में म्यूनिख IAA शो होने वाला है। इस शो में Skoda अपने कई नए प्रोडक्ट और कॉन्सेप्ट मॉडल को दिखाने वाली है। इनमें Vision O wagon कॉन्सेप्ट भी होगी, जो जो नेक्स्ट-जनरेशन इलेक्ट्रिक ऑक्टाविया की झलक देगा। हाल ही में इसका एक टीजर जारी किया गया है, जिसमें इंटीरियर और एक्सटीरियर की हल्की झलक दिखाई गई है।

क्या मिलेगा नया?

नई जनरेशन Skoda Octavia इलेक्ट्रिक में कनेक्टेड विंडस्क्रीन और पैनोरमिक रूफ देखने के लिए मिला है। इसमें मिनिमलिस्ट थीम भी देखने के लिए मिली है। यह भी लगता है कि कॉन्सेप्ट के बीच में एक बड़ी डिजिटल स्क्रीन लगी हुई है। इसके टीजर में टिकाउ पाट्र्स के इस्तेमाल पर भी जोर दिया गया है। इसमें 3D-प्रिंटेड हेडरेस्ट देखने के लिए मिला है। स्कोडा का कहना है कि ये हेडरेस्ट खाद बनाने योग्य, पौधों पर आधारित सामग्रियों से बने हैं। यह ब्रांड के पर्यावरणीय संरक्षण और कार्बन फुटप्रिंट को कम करने के प्रयासों के अनुरूप है।

इससे पहले की गई जारी टीजर में इस कॉन्सेप्ट के बाहरी झलक देखने के लिए मिली थी। इससे पता चलता है कि नेक्स्ट-जनरेशन इलेक्ट्रिक ऑक्टाविया का डिजाइन और स्टाइलिंग पूरी तरह से अलग होगा। इसमें एक पीछे की ओर झुकी हुई विंडशील्ड, हल्की ढलान वाली रूफलाइन, एक ज़्यादा झुकी हुई रियर विंडशील्ड और स्पोर्टी टेल लाइट्स शामिल हैं।

इसके अलावा, इसमें शार्प एलईडी DRL, टर्न सिग्नल वाले ORVM और एक रूफ-माउंटेड स्पॉइलर भी दिया जा सकता है। इसका ओवरऑल प्रोफाइल बेहतर एयरोडायनामिक्स के हिसाब से बनाया गया है, जो इसकी अपील को बढ़ाता है और संभावित रूप से वाहन की रेंज को भी बेहतर बना सकता है। स्कोडा के अनुसार, यह कॉन्सेप्ट कार निर्माता की नई 'मॉडर्न सॉलिड' डिज़ाइन भाषा की झलक देता है, जिसका उपयोग इसकी अगली पीढ़ी की इलेक्ट्रिक कारों में किया जाएगा।

इस प्लेटफॉर्म पर होगी डेवलप

इलेक्ट्रिक Skoda Octavia को डेवलप करने के लिए SSP प्लेटफॉर्म का इस्तेमाल किया जाएगा, जिसका पहले इस्तेमाल Volkswagen ID.Golf में भी किया जाएगा। दोनों को 2029 तक बिक्री के लिए उपलब्ध कराने की योजना है। SSP प्लेटफॉर्म, VW के PPE प्लेटफॉर्म की तुलना में छोटा है। हालांकि, नई ऑक्टाविया का व्हीलबेस VW ID.Golf से लंबा होगा। इससे इसके इंटीरियर में ज़्यादा जगह और संभावित रूप से बड़ा बूट स्पेस मिल सकता है। SSP प्लेटफॉर्म 800-वोल्ट चार्जिंग आर्किटेक्चर का उपयोग करता है, जिससे तेज चार्जिंग मिलती है।

किआ सेल्टोस की नई जेनरेशन जल्द होगी लॉन्च, भारत में पहली बार दिखी, क्या होंगे बदलाव

किआ सेल्टोस वाहन निर्माता किआ की ओर से भारत में कई सेगमेंट मे एमपीवी और एसयूवी को ऑफर किया जाता है। मीडिया रिपोर्ट्स के मुताबिक एसयूवी की नई जेनरेशन को जल द लॉ न्च करने की तैयारी की जा रही है। इसके पहले इसे टेस्टिंग के दौरान देखा गया है। एसयूवी की नई जेनरेशन को लेकर क या जानकारी सामने आई है। आइए जानते हैं।

नई दिल्ली। भारत में कई वाहन निर्माताओं की ओर से कई सेगमेंट में वाहनों की बिक्री की जाती है। किआ की ओर से भी एसयूवी सेगमेंट में सेल्टॉस को ऑफर किया जाता है। इस एसयूवी की नई जेनरेशन को लॉन्च करने की तैयारी की जा रही है। मीडिया रिपोर्ट्स के मुताबिक एसयूवी की नई जेनरेशन की क्या जानकारी सामने आई है। हम आपको इस खबर में बता रहे हैं।

Kia Seltos की नई जेनरेशन होगी लॉन्च

मीडिया रिपोर्ट्स के मुताबिक किआ की ओर से सेल्टॉस की नई जेनरेशन को भारतीय बाजार में जल्द लॉन्च किया जा सकता है। निर्माता की ओर से इसे लॉन्च करने से पहले टेस्ट किया जा रहा है।

मिली क्या जानकारी

रिपोर्ट्स के मुताबिक एसयूवी के लॉन्च से पहले इसे टेस्ट किया जा रहा है। जिस दौरान इसे पहली बार भारत के हैदराबाद में देखा गया है। जबकि इसके पहले कई देशों में भी इसे देखा गया है। नई जेनरेशन सेल्टॉस को नई एलईडी हेडलाइट्स, ब्लैक रूफ रेल, ब्लैक अलॉय व्हील्स, ड्यूल टोन ओआरवीएम, ट्रिपल स्क्रीन, ईवी9 की तरह सीट्स, ड्यूल जोन ऑटो एसी, पावर्ड सीट्स, पैनोरमिक सनरूफ, वायरलैस फोन चार्जर, छह एयरबैग, 360 डिग्री कैमरा, Level-2 ADAS, टीपीएमएस और कई फीचर्स को दिया जा सकता है।

मिलेंगे इंजन के विकल्प

रिपोर्ट्स के मुताबिक किआ की ओर से सेल्टॉस की नई जेनरेशन को कई इंजन विकल्पों के साथ लॉन्च किया जा सकता है। इसमें पेट्रोल और डीजल के साथ ही हाइब्रिड तकनीक को भी दिया जा सकता है। जिसके साथ मैनुअल और ऑटोमैटिक ट्रांसमिशन के विकल्प दिए जा सकते हैं।

कब होगी लॉन्च

अभी किआ की ओर से इस बारे में कोई जानकारी नहीं दी गई है। लेकिन उम्मीद की जा रही है कि एसयूवी को भारतीय बाजार में 2026 तक लॉन्च किया जा सकता है।

किनसे मिलेगी चुनौती

किआ की सेल्टॉस को मिड साइज एसयूवी सेगमेंट में ऑफर किया जाता है। इस सेगमेंट में इसे Honda Elevate, Maruti Grand Vitara, MG Hector, Mahindra Scorpio जैसी एसयूवी से चुनौती मिलती है।

ओला इलेक्ट्रिक के सभी सात जेन 3 स्कूटरों को मिला पीएलआई सर्टिफिकेशन, कंपनी को बिक्री पर मिलेगा 13-18% का प्रोत्साहन

ओला इलेक्ट्रिक को जेन 3 स्कूटर पोर्टफोलियो के लिए PLI स्कीम के तहत कंप्लायंस सर्टिफिकेशन मिला है। ARAI ने यह सर्टिफिकेशन ओला के सात S1 जेन 3 इलेक्ट्रिक स्कूटरों के सभी मॉडलों के लिए दिया है। इस सर्टिफिकेशन के बाद कंपनी को बिक्री मूल्य के अनुसार प्रोत्साहन राशि मिलेगी जिससे लागत और मार्जिन को मज़बूती मिलेगी। ओला इलेक्ट्रिक के Gen 2 और Gen 3 दोनों स्कूटर अब PLI-प्रमाणित हैं।

नई दिल्ली। ओला इलेक्ट्रिक को जेन 3 स्कूटर पोर्टफोलियो के लिए ऑटोमोबाइल और ऑटो कंपोनेंट के लिए प्रोडक्शन लिंक्ड इंसेंटिव PLI) स्कीम के तहत कंप्लायंस सर्टिफिकेशन मिला है। भारी उद्योग मंत्रालय के तहत काम करने वाली ऑटोमोटिव रिसर्च एसोसिएशन ऑफ इंडिया (ARAI) ने यह सर्टिफिकेशन दिया है, जो ओला के सात S1 Gen 3 इलेक्ट्रिक स्कूटरों के सभी मॉडलों के लिए मान्य है। इस सर्टिफिकेट के मिलने के बाद इलेक्ट्रिक टू-व्हीलर निर्माता कंपनी को निर्धारित बिक्री मूल्य के 13 से 18 प्रतिशत तक की प्रोत्साहन राशि मिलेगी। इसके साथ, ओला इलेक्ट्रिक के Gen 2 और Gen 3 दोनों स्कूटर पोर्टफोलियो अब PLI-प्रमाणित हो गए हैं।

Gen 3 स्कूटर के मॉडल

Ola Electric के Gen 3 पोर्टफोलियो में 7 इलेक्ट्रिक स्कूटर शामिल है। इस पोर्टफोलियों के तहत ग्राहकों को S1 Pro 3 kWh, S1 Pro 4 kWh, S1 Pro+ 4 kWh, S1 X 2 kWh, S1 X 3 kWh, S1 X 4 kWh, और S1 X+ 4 kWh इलेक्ट्रिक स्कूटर को ऑफर किया जाता है।

लागत और मुनाफे पर प्रभाव

ओला इलेक्ट्रिक मोबिलिटी लिमिटेड के प्रवक्ता ने कहा कि हमारे Gen 3 स्कूटरों के लिए PLI सर्टिफिकेशन हासिल करना, जो हमारी अधिकांश बिक्री का हिस्सा हैं, मुनाफे की ओर एक महत्वपूर्ण कदम है। यह सीधे तौर पर हमारी लागत संरचना और मार्जिन को मज़बूत करेगा, जिससे हमें स्थिर विकास हासिल करने में मदद मिलेगी। हमारे ऑटो व्यवसाय के EBITDA सकारात्मक होने के लक्ष्य के साथ, यह सर्टिफिकेशन उस लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए एक मजबूत उत्प्रेरक का काम करता है।

क्या है PLI सर्टिफिकेशन?

यह भारत सरकार द्वारा कंपनियों को कुछ उत्पादों के उत्पादन में वृद्धि के लिए दी जाने वाली वित्तीय प्रोत्साहन योजना का हिस्सा है। इसका मुख्य लक्ष्य भारत में मैन्युफैक्चरिंग को बढ़ावा देना, आयात कम करना, और रोजगार के अवसर पैदा करना है। जब कोई कंपनी, जैसे ओला इलेक्ट्रिक, अपनी उत्पादन प्रक्रिया को सरकार की इस योजना के नियमों के अनुसार ढालती है, और उसके उत्पाद पात्रता मानदंडों को पूरा करते हैं, तो उसे यह सर्टिफिकेशन मिलता है। यह सर्टिफिकेशन मिलने के बाद, कंपनी को सरकार से वित्तीय लाभ या इंसेंटिव मिलता है, जिससे उसे मुनाफा बढ़ाने में मदद मिलती है। यह ऑटोमोबाइल, इलेक्ट्रॉनिक्स, खाद्य प्रसंस्करण, और सोलर पीवी निर्माण जैसे कई सेक्टरों के लिए उपलब्ध है।

नई रेनॉल्ट डस्टर की कीमतों का जल्द होगा एलान, जानें क्या होंगे खास फीचर्स

रेनॉल्ट जल्द ही भारत में नई Duster SUV लॉन्च करने वाली है। इसका निर्माण चेन्नई में होगा और इसे 2025 के अंत तक पेश किया जा सकता है। शुरुआत में यह पेट्रोल इंजन के साथ आएगी जिसके बाद हाइब्रिड वर्जन लॉन्च किया जाएगा। नई डस्टर में कई आधुनिक फीचर्स होंगे और इसकी कीमत 10 लाख से 17 लाख रुपये के बीच होने की उम्मीद है।

नई दिल्ली। हाल ही में Renault ने भारतीय बाजार में नई ट्राइबर और अपग्रेडेड काइगर को लॉन्च कियाय है। अब कंपनी अपनी सबसे पॉपुलर SUV, Renault Duster की कीमत की घोषणा को पक्की कर दी है। इसकी कीमतों का एलान आने वाले महीनों में किया जाएगा। इसे पहले से ज्यादा कई बेहतरीन फीचर्स के साथ लेकर आया जाएगा, जो इसे बाकी SUV से अलग बनाने का काम करेगा।

नई Duster लॉन्च की टाइमलाइन हुई कन्फर्म

तीसरी जनरेशन की Renault Duster SUV का प्रोडक्शन सितंबर 2025 से शुरू होगा। इसका निर्माण Renault के चेन्नई में स्थित प्लांट में होगा। हाल ही में Renault ने निसान इंडिया से 51 प्रतिशन हिस्सेदार खरीदकर इस प्लांट का पुरा कंट्रोल अपने पास ले लिया है।

उम्मीद है कि भारत के लिए नई-जनरेशन Renault Duster को फेस्टिव सीजन यानी अक्टूबर-नवंबर 2025 के आसपास पेश किया जा सकता है। कीमतों का एलान इस साल के अंत तक होने की उम्मीद है, जबकि इसकी डिलीवरी जनवरी 2026 से शुरू हो सकती है।

पहले पेट्रोल, फिर हाइब्रिड में होगी लॉन्च

नई-जनरेशन Renault Duster को शुरुआत में केवल पेट्रोल इंजन के साथ लेकर आया जाएगा। इसके पेट्रोल इंजन को लॉन्च करने के कुछ महीनों के बाद हाइब्रिड वर्जन को लाया जाएगा। इसके हाइब्रिड वर्जन को साल 2026 के अंत या 2027 के शुरुआत में लॉन्च किया जा सकता है। उम्मीद है कि यह एसयूवी 1.3-लीटर, 4-सिलेंडर, टर्बोचार्ज्ड पेट्रोल इंजन दिया जाएगा, जो 151bhp की पावर और 250Nm का टॉर्क जनरेट करेगा। ट्रांसमिशन ऑप्शन के रूप में 6-स्पीड मैनुअल और एक डुअल-क्लच ऑटोमैटिक दिया जा सकता है। इसके बेस मॉडल में 1.5-लीटर NA पेट्रोल या 1.0-लीटर 3-सिलेंडर टर्बो पेट्रोल इंजन मिल सकता है।

नई-जनरेशन Renault Duster को कंपनी के नए CMF-B मॉड्यूलर प्लेटफॉर्म पर डिजाइन और डेवलप किया गया है। यह एसयूवी आधुनिक इंटीरियर और कई सुविधा फीचर्स के साथ आएगी। इसमें 0.1-इंच का टचस्क्रीन इंफोटेनमेंट यूनिट (वायरलेस एंड्रॉइड ऑटो और एप्पल कारप्ले के साथ), एक डिजिटल ड्राइवर डिस्प्ले, पावर्ड ड्राइवर सीट, वेंटिलेटेड फ्रंट सीट्स और ऑटोमैटिक क्लाइमेट कंट्रोल जैसे फीचर्स दिए जा सकते हैं। सेफ्टी के लिए लेवल 2 ADAS तकनीक, 360-डिग्री सराउंड व्यू कैमरा, 6 एयरबैग, ESP, ट्रैक्शन कंट्रोल, और हिल लॉन्च/डिसेंट कंट्रोल दिए जा सकते हैं।

कितनी होगी कीमत?

नई-जनरेशन Renault Duster को 10 लाख रुपये से 17 लाख रुपये की एक्स-शोरूम कीमत के बीच लॉन्च किया जा सकता है। भारतीय बाजार में इसका मिड-साइज एसयूवी सेगमेंट मुकाबला, Hyundai Creta, Kia Seltos, Maruti Grand Vitara से देखने के लिए मिलेगा।

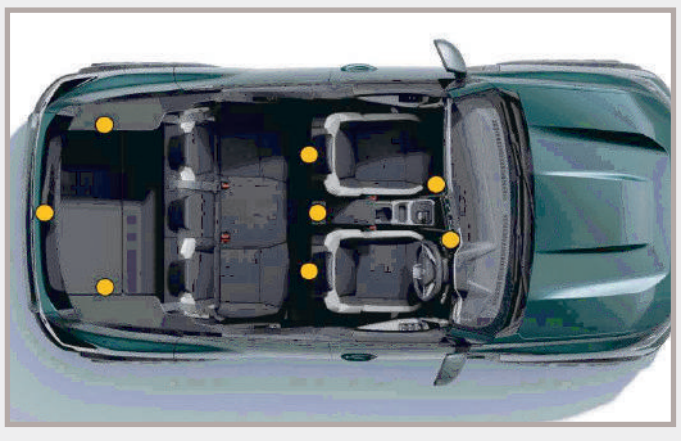

एक महान सूर्यवंशी (इक्ष्वाकु) क्षत्रिय राजा

महाराजा अग्रसेन का जीवन

विजय गर्ग

महाराजा अग्रसेन एक महान सूर्यवंशी (इक्ष्वाकु) क्षत्रिय राजा थे, जिनका जन्म 15 सितंबर 3082 ईसा पूर्व को द्वापर युग के अंतिम चरण के दौरान भगवान राम (विष्णु अवतार) की 34 वीं पीढ़ी में हुआ था, वे भगवान कृष्ण के समकालीन थे। वह राजा वल्लभ देव के पुत्र थे जो कुश (भगवान राम के पुत्र) के वंशज थे। राजा मंधाता के दो बेटे थे, गुनाधी और मोहन। महाराजा अग्रसेन प्रताप नगर (आज के राजस्थान में) के मोहन के वंशज राजा वल्लभ और रानी भगवती देवी के सबसे बड़े पुत्र थे। महाराजा वल्लभ ने राजकुमार अग्रसेन के नाम पर एक शहर का नाम 'आगरा' (आज के उत्तर प्रदेश में) रखा। महाराजा अग्रसेन के 18 बच्चे थे, जिनसे अग्रवाल गोत्र अस्तित्व में आए।

प्रिंस अग्रसेन अपनी करुणा के लिए बहुत अच्छी तरह से जाने जाते थे और कभी भी किसी के साथ भेदभाव नहीं करते थे, और विषय बचपन में खुद को संचालित करने के तरीके से बहुत खुश थे। दुर्भाग्य से, महाराजा वल्लभ महाभारत युद्ध के दौरान शहादत थे, जो 22 नवंबर 3067 ईसा पूर्व हस्तिनापुर के सिंहासन के लिए पांडव के संघर्ष के लिए शुरू हुआ था। राजा वल्लभ ने पांडव पक्ष के लिए लड़ाई लड़ी। पांडव के पक्ष का नेतृत्व 55-56 वर्ष के भगवान कृष्ण कर रहे थे। महाराजा वल्लभ की शहादत के दौरान प्रिंस अग्रसेन की उम्र 15 साल थी. सबसे बड़े बेटे होने के नाते, राजकुमार अग्रसेन को उत्तराधिकारी के रूप में ताज पहनाया गया।

महाराजा अग्रसेन ने अपने लोगों के लाभ के लिए वनिका धर्म को अपनाया। उन्होंने उत्तर भारत में व्यापारियों के अग्रोहा नाम का एक राज्य स्थापित किया और यज्ञों में जानवरों का वध करने से इनकार करने में उनकी करुणा के लिए जाना जाता है। देवी महालक्ष्मी क्षत्रिय राजा की कुल देवी (प्रधान देवी) हैं, और उन्होंने अपने और अपने वंशजों के लिए वहां समृद्धि प्रदान करने का वचन दिया।

महाराजा अग्रसेन का विवाह जब अग्रसेन एक युवा व्यक्ति बने, तो उन्होंने राजकुमारी माधवी के राजा नागराज की बेटी के स्वयंवर में भाग लिया। देवों के राजा इंद्र सहित दुनिया भर के कई राजाओं ने भाग लिया। स्वयंवर में, राजकुमारी माधवी ने राजकुमार अग्रसेन को माला डालकर चुना। इस शादी के कारण दो अलग-अलग पारिवारिक संस्कृतियों का एक साथ आना हुआ, प्रिंस अग्रसेन एक सूर्यवंशी थे, और राजकुमारी माधवी नागवंशी थीं। इंद्र, देवताओं के राजा को राजकुमारी माधवी की सुंदरता से पीटा गया था और उसने उससे शादी करने की योजना बनाई थी। हालांकि, अब जब वह उससे शादी करने में असमर्थ था, तो वह अग्रसेन से बहुत ईर्ष्या और नाराज हो गया। अग्रसेन, इंद्र के खिलाफ बदला लेने के लिए - जैसा कि वह वर्षा के भगवान भी थे, ने सुनिश्चित किया कि प्रताप नगर में कोई वर्षा नहीं हुई। परिणामस्वरूप, प्रताप नगर राज्य में एक भयावह अकाल पड़ा।

भगवान शिव और देवी महालक्ष्मी को गंभीर तपस्या अपने लोगों को हर संकट से बचाने के लिए नारद ऋषि के सुझाव पर, महाराजा अग्रसेन ने काशी शहर में भगवान

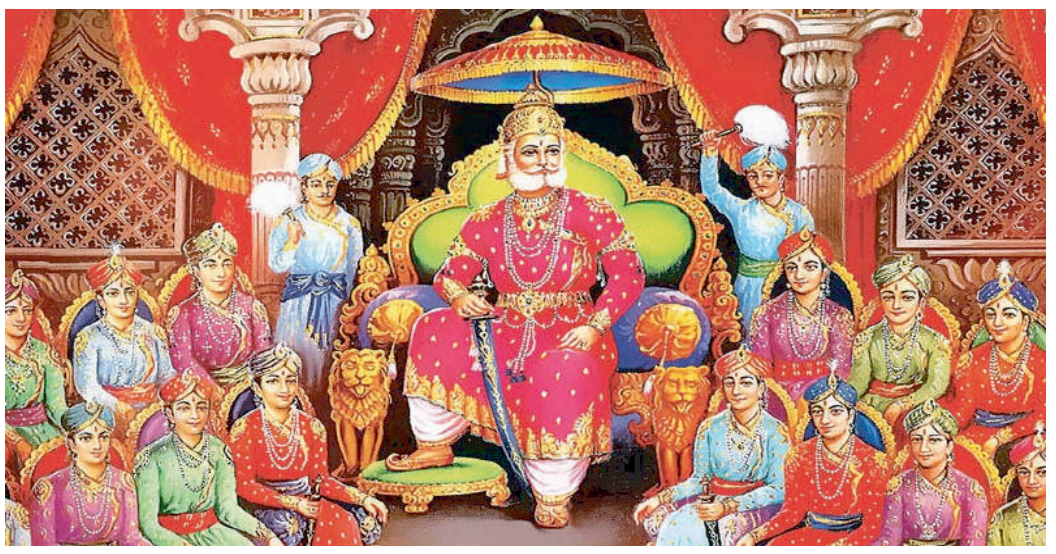

शिव को प्रेरित करने के लिए एक गंभीर तपस्या शुरू की। महाराजा अग्रसेन की तपस्या से प्रसन्न होकर, भगवान शिव ने प्रकट होकर उन्हें अपनी कुल देवी (प्रधान देवी), देवी महालक्ष्मी का प्रचार करने की सलाह दी। महाराज अग्रसेन ने फिर से देवी महालक्ष्मी पर ध्यान देना शुरू किया, जो उनके सामने दिखाई दीं। देवी महालक्ष्मी ने तब महाराजा अग्रसेन को आशीर्वाद दिया और सुझाव दिया कि वह अपने लोगों की समृद्धि के लिए व्यापार की वैश्य परंपरा का पालन करें। फिर उसने उसे एक नया राज्य खोजने के लिए कहा और उसने उसे और उसके वंशजों के लिए समृद्धि प्रदान करने का वचन दिया। इसलिए, उन्होंने अपनी क्षत्रिय परंपरा को छोड़ दिया और अपने लोगों के लाभ के लिए वनिका धर्म को अपनाया।

नए राज्य की स्थापना अपनी रानी (माता माधवी) के साथ देवी महालक्ष्मी महाराजा अग्रसेन के आशीर्वाद से नए राज्य की स्थापना के लिए एक जगह का चयन करने के लिए पूरे भारत की यात्रा शुरू हुई। अपनी यात्रा के दौरान, एक स्थान पर उन्हें कुछ बाघ शावक और भेड़िया शावक एक साथ खेलते हुए मिले। महाराजा अग्रसेन और रानी माधवी के लिए, यह एक शुभ संकेत था कि यह क्षेत्र वीर भूमि (बहादुर की भूमि) था और उन्होंने अग्रोहा नाम के उस स्थान पर अपना नया राज्य खोजने का फैसला किया। कृषि के रूप में अग्रोहा समृद्ध हो गया और व्यापार फला-फूला।

पशु और पक्षियों की हत्या का निषेध महाराज अग्रसेन ने अपने लोगों की समृद्धि के लिए कई यज्ञ (बलिदान) किए। उन दिनों यज्ञ करना समृद्धि का प्रतीक था। ऐसे ही एक यज्ञ के दौरान, महाराज अग्रसेन ने देखा कि एक घोड़ा जिसे बलिदान करने के लिए लाया गया था, बलिदान वेदी से दूर जाने के लिए कड़ी मेहनत कर रहा था। यह देखकर महाराज अग्रसेन दया से भर गए और फिर सोचा कि मूक जानवरों का त्याग करके क्या समृद्धि प्राप्त की जा सकती है। अहिंसा के विचार ने महाराज अग्रसेन का मन पकड़ लिया। राजा ने तब अपने मंत्रियों के साथ इस पर चर्चा की। इसके बाद मंत्रियों ने कहा कि अगर महाराज अग्रसेन अहिंसा की ओर मुड़े, तो पड़ोसी राज्य इसे कमजोरी का संकेत मान सकते हैं और अग्रोहा पर हमला कर सकते हैं। इस पर महाराज अग्रसेन ने उल्लेख किया कि हिंसा और अन्याय को समाप्त करने का अर्थ कमजोरी नहीं है। इसके बाद उन्होंने घोषणा की कि उनके राज्य में कोई हिंसा और जानवरों की हत्या नहीं होनी चाहिए।

हालांकि, अहिंसा में उनके विश्वास का मतलब उत्पीड़न के प्रति गैर-प्रतिरोध नहीं था, बल्कि उन्होंने आत्मरक्षा को बढ़ावा दिया। स्वयं के अनुसार सुरक्षा और राष्ट्रीय रक्षा केवल क्षत्रिय - योद्धा जाति के कार्य नहीं थे, बल्कि प्रत्येक नागरिक का कर्तव्य है कि वह अपनी मातृभूमि की रक्षा और सुरक्षा करे।

5,000 साल पहले महाराज अग्रसेन द्वारा प्रतिपादित समानता, समाजवाद और अहिंसा के विचार भारत के वर्तमान संविधान की भावना का निर्माण करते हैं।

₹एक ईंट और एक सिक्का अद्भुत, वास्तव में अद्वितीय कल्याण नीति।

इसे ₹एक ईंट, एक रुपये₹ नीति के रूप में भी जाना जाता है, महाराजा अग्रसेन द्वारा परंपरा पर विचार करने लायक एक कल्याणकारी गतिविधि बहुत लोकप्रिय रही है। यह प्रत्येक नागरिक द्वारा एक ईंट और एक रुपये की सुविधा की नीति थी और हर निवासी अप्रवासी जो उस स्थान पर बसना चाहता है ताकि उसके पास घर के निर्माण के लिए लाखों ईंटें और अपना नया व्यवसाय शुरू करने के लिए रुपये हो सकें।

इसलिए उनके शासन में कोई बेरोजगार नहीं था और सभी के अपने घर थे। इससे बेहतर मानवता के समाजवाद का कोई और व्यावहारिक सिद्धांत नहीं हो सकता। ये सिद्धांत उनके राज्य में व्यावहारिक हो गए, जैसा कि देना और लेना हर साधारण निवासी के जीवन का सूत्र था। न तो रिसीवर को शर्म महसूस हुई और न ही दाता को गर्व महसूस हुआ।

अगर हम आज के युग में इस तरह के विचार को अपनाते हैं, तो निश्चित रूप से यह दुनिया का सबसे बड़ा देश बनाएगा, और कोई भी गरीब नहीं रहेगा।

अग्रोहा धाम

18 महा यज्ञ और 18 गोत्र उचित प्रबंधन के लिए, महाराजा अग्रसेन ने इसे 18 भागों में विभाजित करके अपने राज्य का आयोजन किया। उन्होंने 18 महा यज्ञ की व्यवस्था की, अपने बच्चों के गुरुओं के नाम पर 18 गोत्र स्थापित किए, और उनमें से प्रत्येक को वितरित किया।

इन सभी 18 गोत्रों के नाम अलग-अलग हैं, फिर भी वे एक भगवद गीता के 18 अलग-अलग अध्यायों में से एक हैं।

सामाजिक कल्याण और भाईचारे की भावनाएं सिद्धांत की बुनियादी बातें थीं। राज्य में स्वार्थ पर भ्रष्टाचार के लिए कोई जगह नहीं थी। लोगों के राज्य और जीवन का विकास पूरी तरह से कृषि, व्यापार और डेयरी पर आधारित था।

वनप्रस्थ आश्रम महाराजा अग्रसेन जी ने अपने राज्य का विस्तार किया और बिना किसी युद्ध या रक्तपात के 108 वर्षों तक खुशी से शासन किया। एक दिन महाराजा अग्रसेन जी के परिवार देवता महालक्ष्मी ने उन्हें पृथ्वी की विदाई देने के लिए कहा, तब महाराजा अग्रसेन जी ने अपने बड़े बेटे विधु को अग्रिया गणराज्य का शासन सौंप दिया और तपस्या करने गए और उसी तपस्या के दौरान उन्होंने अपना पार्थिव शरीर छोड़ दिया और सर्वोच्च निवास स्थान पर चले गए। के पास गया। तब से, महाराजा अग्रसेन जी के जन्मदिन को अश्विन शुक्ला एकम यानी उनकी जयंती के रूप में बहुत धूमधाम से मनाया जाता है। नवरात्रि का पहला दिन।

सेवानिवृत्त प्रिंसिपल, शैक्षिक स्तंभकार, प्रख्यात शिक्षाविद्, गली कौर चंद एमएचआर मलोट पंजाब

टिटहरी: प्रकृति की मौन चेतावनी

"जहाँ विज्ञान चूक जाता है, वहाँ टिटहरी पहले चेताती है"

टिटहरी कोई साधारण पक्षी नहीं, बल्कि प्रकृति का मौन प्रहरी है। किसान उसके अंडों की संख्या, स्थान और समय देखकर बारिश, बाढ़ या अकाल का अनुमान लगाते रहे हैं। विज्ञान भी मानता है कि ऐसे पक्षी "इकोसिस्टम इंडिकेटर" होते हैं, जो पर्यावरणीय बदलावों का पहले से संकेत दे देते हैं। आज शहरीकरण और रसायनों के प्रयोग से इनका आवास खतरे में है। यदि हम टिटहरी जैसे पक्षियों की चेतावनी अनसुनी कर देंगे, तो भविष्य में आपदाओं के प्रति हमारी संवेदनशीलता और भी घट जाएगी। इसलिए ज़रूरी है कि हम इन्हें बचाएँ और इनके संदेश को गंभीरता से सुनें।

- डॉ सत्यवान सौरभ

भारत का ग्रामीण जीवन सदियों से प्रकृति के साथ गहरे संवाद में रहा है। खेत, मौसम और जीव-जंतु मिलकर किसान की दिनचर्या और भविष्य दोनों को प्रभावित करते हैं। इन सबके बीच टिटहरी एक ऐसा छोटा-सा पक्षी है, जो सामान्य आँखों से मामूली दिखता है, लेकिन किसानों और लोकजीवन की स्मृतियों में यह मौसम की सटीक भविष्यवाणी करने वाला प्रहरी माना जाता है। यह केवल एक पक्षी नहीं, बल्कि धरती और आकाश के बीच संवाद का माध्यम है, एक मौन दूत है जो संकट और समृद्धि दोनों की आहट पहले ही दे देता है।

ग्रामीण अनुभव बताते हैं कि टिटहरी का व्यवहार मौसम और कृषि की दिशा तय करने में अहम संकेत देता है। यदि वह चार अंडे देती है तो चार महीने अच्छी वर्षा होने का विश्वास किया जाता है। जब वह ऊँचाई पर अंडे देती है, तो लोग मानते हैं कि सामान्य से अधिक वर्षा होगी। यदि कभी वह मजबूरी में छत या पेड़ पर अंडे दे, तो यह भीषण बाढ़ का संकेत माना जाता है। वहीं, यदि वह अंडे न दे तो यह सबसे डरावनी स्थिति होती है, क्योंकि लोग इसे अकाल का दूत मानते हैं। किसान कहते हैं कि जिस खेत में टिटहरी अंडे देती है, वह खेत खाली नहीं रहता। वहाँ फसल ज़रूर होती है। इस तरह यह पक्षी न केवल वर्षा और मौसम से जुड़े संकेत देता है बल्कि उपजाऊपन और अकाल जैसी चरम स्थितियों की चेतावनी भी बन जाता है।

लोकजीवन में एक और मान्यता है कि टिटहरी का मृत शरीर कुरुक्षेत्र के अलावा कहीं दिखाई नहीं देता। चाहे यह तथ्य हो या प्रतीकात्मक कल्पना, लेकिन यह विश्वास उसे जीवन और अस्तित्व की रक्षा का प्रतीक बना देता है। टिटहरी को देखने वाला किसान समझ जाता है कि यह पक्षी उसकी मिट्टी, फसल और भविष्य का पहरेदार है। यही कारण है कि ग्रामीण लोकगीतों और कहावतों में भी टिटहरी का उल्लेख मिलता है। यह उन जीवों में से है जिनकी गतिविधियों पर पीढ़ियाँ भरोसा करती रही हैं।

अब सवाल उठता है कि जब विज्ञान मौसम की भविष्यवाणी के लिए उपग्रह, राडार और कंप्यूटर मॉडल जैसे अत्याधुनिक साधन लेकर आया है, तब टिटहरी जैसे पक्षियों की भूमिका क्या रह जाती है। वास्तव में इसका उत्तर यही है कि विज्ञान और लोकअनुभव एक-दूसरे के पूरक हैं, विरोधी नहीं। वैज्ञानिक दृष्टि से देखा जाए तो टिटहरी जैसे पक्षी पर्यावरणीय परिवर्तनों के प्रति अत्यधिक संवेदनशील होते हैं। हवा की नमी, तापमान का उतार-चढ़ाव, भूमि की नमी, जल स्तर का बढ़ना या घटना – इन सबका असर उनके व्यवहार पर पड़ता है। यही कारण है कि वैज्ञानिक भाषा में इन्हें "इकोसिस्टम इंडिकेटर" कहा जाता है। यानी ऐसे जीव जो अपने आचरण के माध्यम से हमें पर्यावरणीय बदलावों की समय रहते जानकारी दे देते हैं।

हमारे पूर्वजों ने विज्ञान के औज़ारों का सहारा लिए बिना ही इन संकेतों को अनुभव के आधार पर समझा और उनका लाभ उठाया। सदियों से किसान टिटहरी की गतिविधियों पर नज़र रखते आए हैं। अगर वह अंडे देने का समय टाल दे तो किसान पहले से ही सतर्क हो जाते थे। यदि वह ज़मीन छोड़कर ऊँचाई पर चली जाए, तो वे अधिक वर्षा और संभावित जलभराव को लेकर चौकन्ने हो जाते थे। इस प्रकार लोकानुभव ने जो बातें कही हैं, वे वास्तव में वैज्ञानिक कारणों से जुड़ी हुई हैं। फर्क सिर्फ इतना है कि किसानों ने इन्हें अपनी भाषा और प्रतीकों में व्यक्त किया।

आज जब हम शहरीकरण और औद्योगिकीकरण की चमक में डूबे हैं, तब सबसे बड़ा संकट यही है कि हमने प्रकृति की इस मौन भाषा को सुनना लगभग छोड़ दिया है। शहरों में रहने वाला इंसान यह नहीं जानता कि कब कोई पक्षी अपनी आदत बदल रहा है, कब उसकी संख्या घट रही है या कब उसका स्वर बदल रहा है। यही लापरवाही हमें अचानक आने वाली आपदाओं के सामने असहाय बना देती है। यदि हम टिटहरी और अन्य पक्षियों के संदेशों को गंभीरता से लें तो आपदा प्रबंधन की हमारी क्षमता कई गुना बढ़ सकती है।

टिटहरी के बारे में यह भी कहा जाता है कि यह पक्षी खेत को कभी खाली नहीं छोड़ता। उसका वहाँ अंडे देना किसानों के लिए आश्वासन का प्रतीक है। यह विश्वास अपने आप में गहरा संदेश है कि प्रकृति मनुष्य को निराश नहीं करती, बशर्ते हम उसका सम्मान करें। लेकिन जब हम प्रकृति के नियम तोड़ते हैं, उसके साथ छेड़छाड़ करते हैं, तब उसके प्रहरी पक्षी भी अपने संकेत बदलने को मजबूर हो जाते हैं। यही वजह है कि कई बार बाढ़ या अकाल जैसी स्थिति का पूर्वाभास हमें टिटहरी के व्यवहार से पहले ही मिल जाता है।

इस पक्षी का महत्व केवल ग्रामीण जीवन तक सीमित नहीं है। यह हमें याद दिलाता है कि जीवन का हर रूप पर्यावरण के विशाल ताने-बाने से जुड़ा है। जब एक छोटा-सा पक्षी अपने अंडों के ज़रिए भविष्य की तस्वीर दिखा सकता है, तब यह हमारे लिए चेतावनी भी है कि हम इस तंत्र के साथ खिलवाड़ न करें। विज्ञान भी यही कहता है कि पर्यावरण में सूक्ष्मतम बदलाव का सबसे पहले असर पक्षियों और छोटे जीवों पर दिखाई देता है। यदि हम समय रहते उन्हें सुन लें, तो बड़ी त्रासदियों से बच सकते हैं।

संपादकीय दृष्टि से यह कहना उचित है कि टिटहरी कोई साधारण पक्षी नहीं है। यह हमें यह समझाती है कि ज्ञान केवल प्रयोगशालाओं और उपग्रहों से नहीं आता, बल्कि खेत-खलिहानों और जीव-जंतुओं के आचरण से भी आता है। आधुनिक विज्ञान जहाँ आँकड़ों और तकनीक पर आधारित है, वहीं टिटहरी सहज संवेदना और प्राकृतिक जुड़ाव पर आधारित चेतावनी देती है। दोनों के बीच पुल बनाना ही आज की सबसे बड़ी ज़रूरत है।

आज की स्थिति में सबसे महत्वपूर्ण प्रश्न संरक्षण का है। यदि टिटहरी जैसे पक्षी हमारे बीच से लुप्त हो जाएँगे तो न केवल लोकविश्वास टूट जाएगा, बल्कि पर्यावरणीय चेतावनी प्रणाली का एक अहम हिस्सा भी खो जाएगा। इसके संरक्षण के लिए हमें खेतों में अत्यधिक कीटनाशकों का उपयोग कम करना होगा, प्राकृतिक आवासों को सुरक्षित रखना होगा और जलस्रोतों को बचाना होगा। यह केवल एक पक्षी का संरक्षण नहीं होगा, बल्कि अपने भविष्य और अस्तित्व की रक्षा भी होगी।

निष्कर्ष यही है कि जहाँ विज्ञान आँकड़ों और मशीनों पर भरोसा करता है, वहीं टिटहरी जैसी पक्षियाँ सहज चेतावनी देती हैं। विज्ञान देर से अलर्ट करता है, लेकिन टिटहरी पहले से सावधान कर देती है। हमारे लिए सबसे बड़ी चुनौती यही है कि हम इस मौन संवाद को सुनें और उसके अनुसार कदम उठाएँ। यदि हमने इस आवाज़ को नज़रअंदाज़ किया, तो आने वाले समय में न केवल टिटहरी गायब हो जाएगी, बल्कि उसका दिया हुआ संदेश भी हमारे जीवन से खो जाएगा।

प्रकाशन के लिए एक रचना, गाँव और बचपन की स्मृतियाँ, आज भी वे यादें आत्मा को नम्रता और सरलता की ओर आकृष्ट करती हैं

गाँव और बचपन की स्मृतियाँ,
आज भी वे यादें आत्मा को नम्रता
और सरलता की ओर आकृष्ट
करती हैं,

डॉ. मुश्ताक अहमद शाह

मनुष्य चाहे कितना ही आधुनिक क्यों न हो जाए, उसका हृदय बार-बार उस भूगोल की ओर लौटता है जहाँ उसने अपनी पहली साँस ली थी, जहाँ बचपन के सपनों ने आकार लिया था। मेरे लिए वह स्थान है—गाँव। मिट्टी की उस सोंधी खुशबू से शुरू होती स्मृतियाँ, आज भी आत्मा के साथ गहराई में जुड़ी हुई हैं।गाँव का जीवन सरल और सहज था। सुबह मुर्गे की बाँग से दिन की शुरुआत होती और खेत-खलिहानों की हरियाली मन को ताजगी देती। बैलगाड़ियों की चरचराहट, कुएँ से रस्सी खींचने की आवाज़, और बच्चों की हँसी-मज़ाक से पूरा वातावरण जीवंत हो उठता। यही वह दुनिया थी, जिसमें बचपन के सुनहरे दिन बीते और जीवन की पहली सीखें मिलीं।गाँव की आत्मा थे वहाँ के बुजुर्ग। दादा-दादी, नाना-नानी, चाचा-ताऊ सभी की उपस्थिति घर को पूरा बनाती थी। उनकी कहानियाँ—चाहे पंचतंत्र की हो, इतिहास की गाथा हो या गाँव के वीरों की स्मृति,हमारे व्यक्तित्व को गढ़ने वाली धरोहर थीं। उनके अनुभव जीवन की कठिनाइयों को सहने का बल देते और संस्कारों की गहराई वहीं से प्राप्त होती।गाँव की असली पहचान थे खेत। ऋतु के परिवर्तन के साथ फसलों की हरियाली और सुनहरी बालियाँ आँखों में आज भी झिलमिलाती हैं। धान की रोपाई के समय पानी में खेलते हुए नन्हे पाँव और गेहूँ की कटाई में सबका जुट जाना, श्रम के साथ उत्सव-सा लगता। श्रम और आनन्द का यह संयोग गाँव में जीवन का अभिन्न अंग था।गाँव का जीवन त्यौहारों के बिना अधूरा है। सावन का महीना आते ही घर-आँगन झूलों से सज उठते और तीज पर स्त्रियाँ रंग-बिरंगे वस्त्र पहन कर गीत गातीं, झूमतीं। दीपावली की रात जब घर-घर दीप जलते, तो लगता जैसे पूरा गाँव प्रकाश में स्नान कर रहा हो। होली में रंग और उमंग का ऐसा उत्सव होता कि कोई भेद-भाव शेष न रहता। ये त्यौहार केवल पर्व नहीं थे, बल्कि भाईचारे का जीवंत प्रतीक थे।गाँव का स्कूल मिट्टी की फर्श और खपरैल की छत वाला भले ही साधारण हो, पर वहाँ का वातावरण असाधारण था। गुरुजन अध्यापक से बढ़कर अभिभावक थे। वे डाँटते भी स्नेह से और पढ़ाई के साथ जीवन का अनुशासन भी सिखाते। प्रार्थना सभा की सामूहिक वंदना, तख्तियों पर लिखावट सुधारने का अभ्यास और कक्षा के बाद खेलकूद ने शिक्षा को मनोरंजन में बदल दिया। आज भी वे यादें आत्मा को नम्रता और सरलता की ओर आकृष्ट करती हैं।

बाल्यकाल की सबसे प्रगाढ़ स्मृतियाँ माता-पिता से जुड़ी हैं। पिता की अनुशासनप्रियता और माता का वात्सल्य ऐसा संतुलन था, जिसमें जीवन की नींव पड़ी। दादा-दादी की ममता और भाई-बहनों के साथ छोटी-छोटी खुशियाँ, शरारतें और मेल-मिलाप ने बचपन को रंगीन बनाया। झगड़े भी हुए, रूठना-मनाना भी हुआ, पर हर दिन के अंत में प्रेम ही बंधन को और गहरा करता था।आज जब मैं आधुनिक जीवन की आपाधापी में उलझा हूँ, तब बार-बार मन लौटकर उन्हीं पन्नों को पलटता है। वे गाँव, वे दोस्त, वे खेत-खलिहान, बुजुर्गों के उपदेश, तीज-त्यौहारों का उल्लास, विद्यालय का अनुशासन और परिवार का अटूट स्नेह,ये केवल स्मृतियाँ नहीं, बल्कि जीवन की वह पूँजी हैं जो मुझे कठिनाइयों में भी शक्ति देती हैं।बचपन के वे अनमोल पल आज भी जीवित हैं,यादों की ज्योति बनकर, जो हृदय को गरमाहट देती है और आत्मा को संस्कारों की शक्ति से भर देती है।

बदली पहनावे की संस्कृति

विजय गर्ग

अब जिधर नजर डालिए—दफ्तरों में, बसों में, सड़क पर, बाजार में, एयरपोर्ट पर, चैनल्स पर लड़कियों, स्त्रियों की प्राथमिक पसंद वे कपड़े नजर आते हैं, जिन्हें सामान्य भाषा में वैस्टर्न कहते हैं। कपड़े तो कपड़े, बाल बनाने के तौर-तरीके भी लगभग एक जैसे हैं।

हाल ही में इटली के मशहूर फैशन डिजाइनर अरमानी का इक्यानवें वर्ष की उम्र में निधन हो गया। वह उम्र के इस पड़ाव पर भी बहुत काम करते थे। उनके बारे में कहा जाता है कि उन्होंने फैशन की दुनिया को बदल दिया। विश्व के मशहूर लोग जिनमें अभिनेता, अभिनेत्रियां, उद्योगपति आदि शामिल हैं, उनके लिए अरमानी के ब्रांड्स जरूरी माने जाते थे। अरमानी के बारे में कहा जाता है कि उन्होंने पुरुषों के कपड़े बनाने में जिन कपड़ों का इस्तेमाल किया वे महिलाओं में पसंद किए जाते थे, और महिलाओं के लिए पुरुषों द्वारा पसंद किए जाने वाले कपड़ों का उपयोग किया।

उनका मशहूर उद्धरण है कि मैंने स्त्रियों को पुरुषों के कपड़े पहनना सिखा दिया। वे यह भी कहते थे कि उन्होंने पुरुषों के लिए ऐसे कपड़े तैयार किए, जिनसे उनकी छवि कुछ मासूम दिखे और स्त्रियों के लिए ऐसे कपड़े बनाए जिन्हें पहनकर वे कठोर दिखें। यानी कि उन्होंने सारी पारंपरिक छवियों को तोड़ दिया। स्त्रियों के लिए बनाए कपड़ों को वे पावर सूट कहते थे। कुल मिलाकर यह कि शक्तिशाली या एम पावर्ड वुमैन जिन्हें कहते हैं, वे खास कपड़े पहनकर ही हो सकती हैं। यह अपने उत्पाद को बेचने की एक रणनीति ही थी, जो बहुत सफल रही। आपने देखा होगा कि स्त्रियों की छवि तमाम धारावाहिकों, फिल्मों, टीवी कार्यक्रमों ने कपड़ों के आधार पर ही तय कर रखी है। इसमें वैस्टर्न पहनने और अंगरेजी बोलने वाली लड़की ताकतवर दिखाई जाती है, दूसरे कपड़े पहनने वाली कमजोर।

अंग्रेज इतने लम्बे शासनकाल में चाहकर भी स्त्रियों की वेशभूषा में इतना परिवर्तन नहीं कर सके थे, जो भूमंडलीकरण ने कर दिया। धार जैसे छोटे कस्बे में दो लड़कियां मुझसे जींस पहनकर मिलने आई थीं। उनसे असहमत होने वाले कह सकते हैं कि आखिर जींस पहनने में क्या बुराई है। सचमुच कोई नहीं है। लेकिन यह भी सच है कि वस्त्रों से किसी स्त्री की ताकत को नहीं आंका जा सकता। अन्यथा अमेरिका या यूरोप में स्त्रियों के प्रति इतनी बड़ी संख्या में अपराध न होते। वहां की आबादी को देखते हुए इतने अपराध वाकई चकित करते हैं। वर्ना वे तो पश्चिमी देश ही हैं। वहां तो स्त्रियां अरसे से ऐसे कपड़े पहनती हैं, जिन्हें शक्ति का प्रतीक बताया जाता है।

दुनिया में हर सत्ता चाहे वह पैसे की हो, राजनीति की हो, धन की हो, छवि के खेल से चलती है। इन छवियों को बहुत चालाकी से बनाया जाता है और किसी न किसी विमर्श से जोड़ दिया जाता है। वैस्टर्न कपड़ों को भी स्त्री विमर्श के तमाम नारों से जोड़ दिया गया। और सिर्फ कपड़ों को ही क्यों, जितने भी उत्पाद

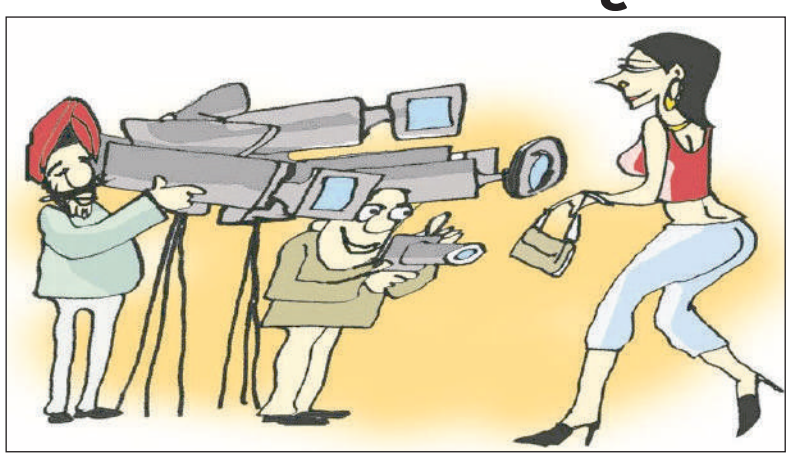

हैं, वे कहीं न कही ये पाठ पढ़ाते रहते हैं कि इस उत्पाद के उपयोग से ही तुम ताकतवर और आजाद स्त्री कहला सकती हो। आपको एक कपड़े धोने की मशीन का वह विज्ञापन शायद याद हो, जिसमें कहा जाता था कि तुम आजाद स्त्री हो, इस मशीन का इस्तेमाल करके अपनी आजादी का जश्न मनाओ। कारों के भी ऐसे ही विज्ञापन आते रहे हैं। अनेक उत्पादों के भी।

दरअसल, पिछले पचास सालों का दौर, पूरी दुनिया में ऐसा रहा है जहां स्त्रियों की शिक्षा बढ़ी है। वे बड़ी संख्या में नौकरीपेशा बनी हैं। उनकी वेशभूषा एकदम बदल गई है। रहन-सहन बदल गया है। इस बदले हुए रहन-सहन, जीवनशैली ने स्त्रियों के सोच को भी खूब बदला है। एक समय में स्त्री के पढ़ने-लिखने को उसके वैवाहिक जीवन से जोड़ा जाता था। अब यह सीधा उसकी आत्मनिर्भरता से जुड़ा है। यह एक अच्छी बात भी है। लेकिन मात्र वेशभूषा के आधार पर किसी को ताकतवर कहना और किसी को कमजोर दिखाना ठीक नहीं है।

पहले उत्तर भारत में आम तौर पर स्त्रियां साड़ी पहनती थीं। लेकिन अब साड़ी कभी-कभार पहनने की चीज रह गई है। काम-काजी स्त्री की वह आखिरी पसंद है। कुछ साल पहले साड़ी की एक बड़ी दुकान के मालिक ने इस लेखिका से कहा था कि अब उनका व्यवसाय खत्म होने के कगार पर है, क्योंकि अब कोई साड़ी नहीं पहनना चाहता। अपने यहां अनेक प्रदेशों में एक से एक सुंदर साड़ियां बनती रही हैं। ये दुनियाभर में मशहूर भी रही हैं। इन्हें बनाने वाले अद्भुत कलाकार होते हैं। लेकिन जब साड़ियां पहनने वालियां ही नहीं बचेंगी तो उनका बनना बंद हो जाएगा। मिलना भी।

वैसे भी अपने यहां हर प्रदेश की स्त्री अलग-अलग तरह के कपड़े पहनती रही है। कहीं सलवार, कुर्ता, कहीं लम्बे घाघरे। कहीं लहंगे। साड़ियां पहनने के भी तरह-तरह के तरीके रहे हैं और तरह-तरह की लम्बाई की साड़ियां भी। लेकिन अब जिधर नजर डालिए—दफ्तरों में, बसों में, सड़क पर, बाजार में, एयरपोर्ट पर, चैनल्स पर लड़कियों, स्त्रियों की प्राथमिक पसंद वे कपड़े नजर आते हैं, जिन्हें सामान्य भाषा में वैस्टर्न कहते हैं। कपड़े तो कपड़े बाल बनाने के तौर-तरीके भी लगभग एक जैसे हैं। जबकि भारत में वेणी गूंथने की कला के तरीके मौजूद रहे हैं। इस एकरसता को देखकर कई बार बोरियत भी होती है।

नब्बे के दशक में जब टीवी चैनल्स का बोलबाला भारत में बढ़ा, टीवी लगभग गांव के हर घर तक जा पहुंचा, तो वेशभूषा में भी एकरूपता दिखाई देने लगी। यों विविधता को हम अक्सर सेलिब्रेट करते रहते हैं, उसे किसी भी देश की शक्ति बताते हैं, लेकिन वेशभूषा में यह खत्म होती जा रही है। पुरुषों के कपड़ों की विविधता तो पहले ही खत्म हो गई। अब अधिकांश पुरुष चाहे वे कहीं के भी हों, पैंट, शर्ट या पैंट टीशर्ट पहने दिखाई देते हैं। लेकिन स्त्रियों की वेशभूषा में भी अब एकरूपता आ गई है। किसी भी प्रदेश की स्त्री या लड़की को देखें, अधिकांश पैंट और शर्ट पहने ही दिखेंगी। इस तरह अरमानी अपने प्रयास में कामयाब भी हुए। ये बात अलग है कि उनके ब्रांड्स इतने महंगे होते हैं कि वे आम आदमी की पहुंच से बहुत दूर हैं। लेकिन हम उन्हीं जैसे तो बनना चाहते हैं, जो हम जैसे न हों। जो हमसे अधिक ताकतवर और साधन-सम्पन्न हों। और अरमानी वैसे भी सिर्फ कपड़े नहीं बनाते थे, तमाम तरह के परफ्यूम्स, चमड़े का सामान, प्रसाधन सामग्री के लिए मशहूर थे। यहां तक कि उनके होटल्स भी हैं।

अरमानी तक उन्हीं लोगों की पहुंच रही, जिनकी जेब में बहुत पैसे हैं। ये पैसे वाले ही इन दिनों हर देश के युवाओं के आदर्श हैं। इन बड़े आदमियों की जीवन शैली को अक्सर अखबार-पत्रिकाएं छापते हैं। चैनल्स दिखाते हैं। युवा इन्हें देखकर ही इनकी जीवनशैली की नकल करते हैं। दिलचस्प ये है कि दुनिया के अमीर इन दिनों हर बात के विशेषज्ञ बन बैठे हैं। वे लेखक हैं। स्तम्भकार हैं। राजनीति में हैं। अभिनय में हैं। पर्यावरण विशेषज्ञ हैं। कवि हैं। चित्रकार हैं। इनके बारे में छापने वाले गौरव महसूस करते हैं। इनसे एक बार अपाइंटमेंट मिलने के लिए लोग लाइन लगाकर खड़े रहते हैं। तो आखिर युवा भी क्या करें। वे वही तो सीखते हैं, जो उन्हें सिखाया जाता है।

विजय गर्ग सेवानिवृत्त प्रिंसिपल मलोट पंजाब

राजनीतिक दलों को कार्यस्थल पर पॉश एक्ट, 2013 से प्राप्त वैधानिक छूट एक नैतिक विडंबना नहीं तो क्या?

कमलेश पांडेय

राजनीतिक दलों को महिलाओं की कार्यस्थल सुरक्षा संबंधी कानून प्रोटेक्शन ऑफ सेक्सुअल हरासमेंट एक्ट (पॉश एक्ट), 2013 से प्राप्त वैधानिक छूट किसी नैतिक विडंबना से कम नहीं है, चाहे इसका विधिक कारण कुछ भी हो ! यह हमारी संसद और सर्वोच्च न्यायालय दोनों की नैतिक लापरवाही या खामोशी दोनों का नतीजा है ? ऐसे में सुप्रीम कोर्ट का यह तर्क कि राजनीतिक दल और उनके सदस्यों के बीच पारंपरिक नियोक्ता-कर्मचारी का संबंध नहीं होता है, किसी के गले नहीं उतरता है। यह अनुभव की व्यवहारिक कसौटी पर भी खरा नहीं उतरता है।

यह ठीक है कि उनके बीच पारंपरिक नियोक्ता-कर्मचारी का सम्बन्ध नहीं होता लेकिन दफ्तर और कार्यसंस्कृति दोनों होती है। यहां तक कि टूर के दौरान ठहरने वक्त नेताओं और महिला कार्यकर्ताओं का कमरा आसपास ही रखा जाता है। इसलिए यह कहना गलत नहीं होगा कि इससे राजनीतिक दलों व उनके नेताओं को कार्यकर्ताओं के शोषण का अंतहीन अधिकार मिल जाता है ! खासकर, जब केंद्र और विभिन्न राज्यों की सत्ता पर काबिज भारतीय जनता पार्टी और मुख्य विपक्षी पार्टी कांग्रेस आदि दल किसी कॉरपोरेट शैली से संचालित होती हों, उनके जनसंपर्क यानी प्रचार-प्रसार व कार्यसंचालन का तरीका लगभग वही हो, जब निर्वाचित राजनेताओं के धन भी पांच वर्ष में ही दुगुने-तिगुने से ज्यादा बढ़ जाते हों, जब राजनेताओं व उनके करीबी संगठन के नेताओं पर महिलाओं के शारीरिक शोषण के अनेक आरोप लगते आए हों, वैसे परिदृश्य में सियासी दलों और सियासतदानों को प्राप्त विधिक छूट उनके गलत इरादों को लीगल प्रश्रय नहीं देना है तो क्या है, यह यक्ष प्रश्न है ?

भारत के अधिकांश लोगों को पता है कि देश की कानून निर्मात्री संस्था 'संसद', विधानसभा मंडलों में बैठे राजनेतागण खुद को 'अभिजात्य प्राणी' समझते हैं और खुद के फंसने वाला कानून कभी नहीं बनाते। वहीं, अपना सियासी हित साधने के लिए प्रायः द्विअर्थी कानून बनाते हैं। वाकई एक ही प्रवृति के विषयों में अस्पष्ट कानूनों की वजह से ही देश अमेरिका की भांति वकीलों का स्वर्ग बन चुका है। कोई भी नेता दो जगह से चुनाव लड़ सकता है लेकिन दो जगहों की मतदाता सूची में नाम निकल जाने पर जानबूझकर बखेड़ा खड़ा किया जाता है। भूमि-भवन-स्वर्ण निवेश सम्बन्धी चीजों, शिक्षा-स्वास्थ्य-कारोबार आदि में अस्पष्ट कानूनों की वजह से निवेशक मालामाल और उपभोक्ता फटेहाल रहते हैं, आदि।

सबसे बड़ी विडंबना तो यह कि निर्वाचित होते ही अपराधी/दुष्कर्मी भी 'माननीय' करार दिए जाते हैं। यह स्थिति प्रशासनिक अधिकारियों व न्यायपालिका के लिए भी शर्मनाक है। साथ ही भारतीय बुद्धिजीवियों, सफल पेशेवर समूहों, विश्वविद्यालयों की पवित्र सोच पर करारा तमाचा है। ऐसे में सुलगता हुआ सवाल है कि जब सुप्रीम कोर्ट आरक्षण सम्बन्धी कानून और वक्फ बोर्ड कानून आदि में तो संशोधन करने का अधिकार रखता है लेकिन नेताओं से जुड़े मामलों में उसकी बुद्धिमत्ता/प्रबुद्ध सोच को 'जंग' लग जाती है, सांप सूंघ जाता है जो वैधानिक 'सामाजिक टेंटनस/मानसिक विष' जैसे 'जानलेवा रोगों' की वजह बन जाते हैं।

स्वाभाविक सवाल है कि हमारे राजनेता जेल से चुनाव लड़ सकते हैं, चुनाव प्रचार कर सकते हैं, अपनी सैलरी व भत्ता खुद ही बेहिसाब बढ़ा सकते हैं, राजनीतिक चंदा के लिए 'चोर दरवाजे' छोड़ सकते हैं, संसद के भीतर-बाहर कुछ भी अनाप-शनाप बोल सकते हैं जिससे सामाजिक-राष्ट्रीय हितों पर चोट पहुंचती है, आदि। इनके कार्यकर्ता पाकिस्तान-बंगलादेश का झंडा लहरा सकते हैं लेकिन इस पर कभी तर्कसंगत बहस नहीं होती ! बेलगाम सोशल मीडिया इनका आधुनिक प्रचार हथियार बन चुका है। क्रिप्टो करेंसी इनके अवैध लेन-देन का साधन बन चुका है लेकिन एक समान कानून की याद इन्हें कतई नहीं आती। इससे आम व्यवसायियों के कारोबारी हित भी प्रभावित होते हैं।

कोढ़ में खाज यह कि अब सुप्रीम कोर्ट भी मान चुका है कि ₹राजनीतिक दलों में सदस्यता रोजगार जैसी नहीं है- इसमें न तो नियमित वेतन है और न ही संविदात्मक/नौकरी संबंधी अनुबंध।₹ सवाल है कि कार्यकर्ता दिन-रात पार्टी की सेवा में लगे रहते हैं या नहीं ? इनको मानदेय क्यों नहीं दिया जाता ? क्या इसी वजह से ये प्रशासनिक या सामाजिक 'दलाली' करते हैं और किसी तरह निर्वाचित नेताओं के लोकल एजेंट बनकर अपना गुजारा करते हैं। क्या इसी वजह से भ्रष्टाचार, शिष्टाचार नहीं बन गया है ? यह कौन नहीं जानता कि अधिकारियों-जनप्रतिनिधियों/मंत्रियों के बीच दलाली करने वाले राजनीतिक कार्यकर्ताओं का ही नेटवर्क 'गर्म गोश्त' की भी दलाली करता है, इसलिए इन्हें भी पॉश एक्ट 2013 के दायरे में लाए जाने की जरूरत है।

संक्षिप्त मुठभेड़ के बाद दो आरोपी गिरफ्तार , दो पिस्टल 30 बोर और एक मोटरसाइकिल बरामद

अमृतसर, 18 सितम्बर (साहिल बेरी)

रिकवरी: 1. 02 पिस्टल 30 बोर
2. एक स्प्लेंडर मोटरसाइकिल
गिरफ्तार आरोपी:
1. संदीप उर्फ जॉनी पुत्र सुखदेव सिंह
2. हरी कुमार उर्फ हैरी पुत्र सिकंदर कुमार निवासी काला संघा, जिला कपूरथला

श्री मनिंदर सिंह आई.पी.एस., वरिष्ठ कप्तान पुलिस, अमृतसर देहाती के दिशा-निर्देशों के अनुसार, श्री गुरविंदर सिंह डी.एस.पी. अजनाला और श्री गुरिंदरपाल सिंह डी.एस.पी. (डी) की अगुवाई में अमृतसर देहाती पुलिस ने बड़ी सफलता हासिल करते हुए, डॉ. कुलविंदर सिंह पर जानलेवा हमले के मामले में वांछित खतरनाक अपराधियों संदीप उर्फ जॉनी और हरी कुमार उर्फ हैरी निवासी काला संघा, जिला कपूरथला को 02 पिस्टल 30 बोर और एक स्प्लेंडर मोटरसाइकिल सहित गिरफ्तार किया है।

गौरतलब है कि मेजर सिंह पुत्र मुख्तार सिंह निवासी माकोवाल (हाल अड्डा सुधार) ने थाना रामदास पुलिस को सूचना दी थी कि कुछ अज्ञात व्यक्तियों ने उसके भाई डॉ. कुलविंदर सिंह को मारने की नीयत से गोलियां चलाईं, जिसमें डॉ. कुलविंदर सिंह घायल हो गए। इस संबंध में

थाना रामदास में मुकदमा नंबर 141, दिनांक 12.09.2025, अपराध धारा 48,111,109,61(2),324(4),3(5)-BNS, 25,27,54-59 Arms Act के तहत दर्ज कर, एस.आई. आग्यापाल सिंह मुख्य अधिकारी थाना रामदास, इंस्पेक्टर मनमीत सिंह इंचार्ज सी.आई.ए और इंस्पेक्टर अमनदीप सिंह इंचार्ज AGTF की अगुवाई में अलग-अलग टीमों द्वारा आरोपियों की तलाश शुरू की गई।

आज एस.आई. आग्यापाल सिंह को सूचना मिली कि उक्त घटना के आरोपी संदीप उर्फ जॉनी और हरी कुमार उर्फ हैरी रायां नहर के पास देखे गए हैं। जिस पर थाना रामदास पुलिस टीम ने मौके पर पहुँचकर उनका पीछा किया। इस दौरान रायां नहर के पास आरोपियों की मोटरसाइकिल फिसल गई और वे गिर पड़े। भागने की कोशिश में आरोपियों ने थाना रामदास पुलिस पार्टी पर फायरिंग की, जिसमें एक गोली एस.आई. आग्यापाल सिंह की बाईं बांह को छूती हुई निकल गई, जिससे वह घायल हो गए। जवाबी कार्रवाई में पुलिस टीम की फायरिंग के दौरान दोनों आरोपी घायल हो गए। उनकी टांगों में गोली लगी, जिसके बाद उन्हें इलाज के लिए अस्पताल में भर्ती करवाया गया।

उक्त घटना के संबंध में आरोपियों संदीप उर्फ जॉनी और हरी कुमार उर्फ हैरी के खिलाफ थाना खलचियां में मुकदमा नंबर 102, दिनांक 18.09.2025, अपराध धारा 109,226,184 BNS के तहत दर्ज कर जांच की जा रही है।

दिल्ली पुलिस का झारखंड में रेड, गिरफ्तार आतंकियों के निशानदेही पर भारी मात्रा विस्फोटक जप्त

दानिश नेटवर्क पर कार्रवाई से खुलासा कभी भी दहला सकते थे दिल्ली

कार्तिक कुमार परिच्छा, स्टेट हेड -झारखंड

रांची । दिल्ली पुलिस की स्पेशल सेल ने आतंकी संगठन आईएसआईएस से जुड़े नेटवर्क पर बड़ी कार्रवाई करते हुए झारखंड में छापेमारी की है। हाल ही में गिरफ्तार किए गए पांच आतंकियों से पूछताछ के बाद यह रेड की गई। कार्रवाई के ये दौरान पुलिस ने भारी मात्रा में विस्फोटक बरामद किया। खासकर पोटेशियम नाइट्रेट मिला है, जो आतंकी गतिविधियों में इस्तेमाल होने वाला आईईडी विस्फोटक में अहम रसायन माना जाता ।

पुलिस ने यह भी पुष्टि की है कि यह बरामदगी आतंकी दानिश के ठिकाने से हुई है। दिल्ली पुलिस ने दानिश समेत पांच आतंकियों को कुछ दिन पहले गिरफ्तार किया था। दानिश को 10 सितंबर को लोअर बाजार थाना क्षेत्र के न्यू तबारक लॉज से पकड़ा गया था। इसके बाद अदालत से दिल्ली पुलिस की स्पेशल सेल को 12 दिनों तक पूछताछ की अनुमति मिली।

दानिश की गिरफ्तारी के बाद उसके नेटवर्क और योजनाओं का पता लगाने के लिए लगातार छानबीन की जा रही है

इस मामले पर झारखंड पुलिस की आतंकवाद निरोधक दस्ता (एटीएस) भी पूरी तरह से सक्रिय है। एटीएस दानिश के झारखंड में फैले नेटवर्क और सहयोगियों की जानकारी जुटाने में लगी है। इसके लिए एटीएस दिल्ली पुलिस की स्पेशल सेल से लगातार संपर्क में है। साथ ही टेक्निकल और ह्यूमन इनपुट को भी खंगाला जा रहा है, ताकि इस आतंकी नेटवर्क की गहराई तक जानकारी मिल सके।

दानिश के रांची स्थित ठिकाने से भारी मात्रा में विस्फोटक सामग्री, जिसमें पोटेशियम नाइट्रेट, नाइट्रिक एसिड, हाइड्रोक्लोरिक एसिड, धातु और बैल बेयरिंग्स बरामद हुईं. यह सामग्री आईईडी (इम्प्रोवाइज्ड एक्सप्लोसिव डिवाइस) बनाने के लिए इस्तेमाल होती है. दानिश के संपर्कों की जांच पूर्व में पकड़े गए आतंकियों से भी की जा रही है। इसमें लोहरदगा का आतंकी फैजान उर्फ फैज, रांची से गिरफ्तार अलकायदा इंडिया सब-कॉन्टिनेंट का मास्टरमाइंड डॉ. इश्तियाक और उसके सहयोगी शामिल हैं। डॉ. इश्तियाक को पहले दिल्ली पुलिस ने झारखंड एटीएस के सहयोग से दिल्ली रेलवे स्टेशन से पकड़ा था , आग्नेयास्त्र जप्त हुई थी फिर उस दौरान भी एक बड़ी आतंकी साजिश का खुलासा हुआ था।

उस समय पता चला था कि आतंकी झारखंड में अपना प्रशिक्षण केंद्र खोलने की योजना बना चुके थे। दिल्ली पुलिस और झारखंड एटीएस की संयुक्त कार्रवाई से साफ है कि आतंकी संगठनों की जड़ें न केवल दिल्ली आस पास वल्कि राजधानी झारखंड तक फैली हुई हैं। ताजा बरामदगी और पूछताछ से इस नेटवर्क के कई राज खुलने की उम्मीद है, जिससे आने वाले दिनों में बड़ी साजिशों को नाकाम करने में मदद मिल सकती है।

असम से सिमकार्ड लाकर साईबर अपराधियों को देने वाला अकबर हुसैन जामताड़ा से गिरफ्तार

असम से बंगाल- झारखंड तक नेटवर्क, 377 सिम, आधार ,एटीएम कार्ड, मोबाइल जप्त

कार्तिक कुमार परिच्छा, स्टेट हेड -झारखंड

रांची , झारखंड के जामताड़ा में पुलिस ने साइबर अपराध पर बड़ी कार्रवाई करते हुए एक युवक को गिरफ्तार किया है। आरोपी का नाम अकबर हुसैन बताया जा रहा है। पुलिस ने उसके पास से 377 सिम कार्ड, मोबाइल फोन, एटीएम कार्ड, आधार कार्ड और अन्य दस्तावेज बरामद किए हैं। पुलिस ने मामले में कई खुलासे भी किए हैं ।जानकारी के अनुसार, आरोपी असम से ट्रेन के जरिए बड़ी संख्या में सिम कार्ड लाता था और इन्हें जामताड़ा समेत अन्य राज्यों में साइबर अपराधियों को सप्लाई करता था। पुलिस ने बताया कि हुसैन इन सिम और एटीएम कार्ड का खुद भी इस्तेमाल करता था, साथ ही इन्हें 1,500 से 2,500 रुपये प्रति कार्ड के हिसाब से बेचता था।

अकबर हुसैन को बड़ियारपुर–कलझरिया रोड के पास

छापेमारी के दौरान पकड़ा गया। उसके पास से एक आधार कार्ड और इंडिगो की फ्लाइट टिकट भी बरामद हुई है। पुलिस जांच में खुलासा हुआ है कि आरोपी का नेटवर्क असम और पश्चिम बंगाल तक फैला हुआ है। आरोपी इन सिम कार्ड्स को ट्रेन के जरिए असम से जामताड़ा लाता और फिर यहां से दूसरे राज्यों तक सप्लाई करता था।

जामताड़ा एसपी राजकुमार मेहता ने इस कार्रवाई को बड़ी सफलता बताते हुए कहा, "इस गिरफ़्तारी ने साइबर अपराधियों के बड़े नेटवर्क का पर्दाफाश किया है। जामताड़ा पुलिस लगातार ऐसी कार्रवाई कर रही है और भविष्य में और भी कड़े कदम उठाए जाएंगे।"पुलिस अब आरोपी से पूछताछ कर रही है, ताकि इस पूरे नेटवर्क से जुड़े अन्य सदस्यों तक पहुंचा जा सके। प्रशासन ने लोगों से अपील की है कि किसी भी संदिग्ध गतिविधि या साइबर फ्रॉड की जानकारी तुरंत।

सारंडा के मामले में सुप्रीम कोर्ट ने मुख्य सचिव को जेल भेजने की दी चेतावनी

अरबों -खरबों अयस्क तो प्रकृति का, नकी सरकार या माफियाओं का !!

कार्तिक कुमार परिच्छा, स्टेट हेड -झारखंड

रांची , सुप्रीम कोर्ट ने झारखंड सरकार पर सख्ती दिखाते हुए राज्य के मुख्य सचिव को 8 अक्तूबर को व्यक्तिगत रूप से कोर्ट में पेश होने का आदेश दिया है. अदालत ने यह कदम इसलिए उठाया क्योंकि सरकार ने सरंडा वन्यजीव अभयारण्य (एसडब्ल्यूएल) और ससंगदाबुरु संरक्षण रिजर्व (एससीआर) को संरक्षण आरक्षित क्षेत्र घोषित करने के उसके पहले के आदेश का पालन नहीं किया.सनद रहे कि इसी सारंडा झारखंड सरकार को मोटी कमाई देती है चाहे लौह अयस्क हो या मैंगनीज अयस्क.

सुप्रीम कोर्ट ने झारखंड सरकार को कड़ी फटकार लगाते हुए कहा है कि सारंडा वन को अभयारण्य घोषित न करना अदालत की घोर अवमानना है। कोर्ट ने चेतावनी दी है कि अगर तब तक अधिसूचना जारी नहीं हुई तो मुख्य सचिव को जेल जाना पड़ेगा.

मुख्य न्यायाधीश बीआर गवई और जस्टिस के. विनोद चंद्रन की पीठ ने कहा, 'झारखंड सरकार हमारे 29 अप्रैल, 2025 के आदेश की खुली अवमानना कर रही है. मुख्य सचिव को 8 अक्तूबर सुबह 10.30 बजे कोर्ट में पेश होकर बताना होगा कि उनके खिलाफ अवमानना की कार्यवाही क्यों न शुरू की जाए.'

29 अप्रैल को सुप्रीम कोर्ट ने झारखंड सरकार को फटकार लगाई थी कि वह जानबूझकर फाइलें एक विभाग से दूसरे विभाग में भेजकर प्रक्रिया को टाल रही है. नवंबर 2024 में वन्यजीव विभाग के प्रमुख मुख्य वन संरक्षक ने प्रस्ताव भेजा था. मार्च 2025 में इसे और टिप्पणियों के लिए वापस भेज दिया गया, जिससे काम अटक गया. बाद में विभाग के सचिव अबु बकर सिद्दीकी कोर्ट में पेश हुए और बिना शर्त माफी मांगी. कोर्ट ने माफी स्वीकार कर ली और आगे उनकी व्यक्तिगत पेशी से छूट दे दी थी.

राज्य सरकार ने अब सरंडा अभयारण्य का क्षेत्र 31,468.25 हेक्टेयर से बढ़ाकर 57,519.41 हेक्टेयर कर दिया है. इसके साथ ही, 13,603.806 हेक्टेयर (136.038 वर्ग किमी) अतिरिक्त भूमि ससंगदाबुरु संरक्षण रिजर्व के लिए चिन्हित की गई है. यह प्रस्ताव वन्यजीव संस्थान ऑफ इंडिया (डब्ल्यूआईआई), देहरादून को विशेषज्ञ राय के लिए भेजा गया है.

भारतीय वन्यजीव संस्थान, देहरादून ने इस संबंध में एक अनुकूल रिपोर्ट दी. इसके बावजूद राज्य सरकार ने अधिसूचना जारी करने के बजाय खनन और अन्य हितों की जांच के लिए एक नई समिति बना दी.

एमिकस क्यूरी और वरिष्ठ अधिवक्ता के. परमेश्वर ने अदालत को बताया कि सरकार ने जानबूझकर कोर्ट के आदेश की अनदेखी की है. उन्होंने कहा कि राज्य ने सीमा निर्धारण का बहाना बनाकर अधिसूचना टाल दी और सुप्रीम कोर्ट के आदेश को लागू करने से बचा.

मामले पर सुनवाई करते हुए मुख्य न्यायाधीश बी. आर. गवई और न्यायमूर्ति के. विनोद चंद्रन की पीठ ने कहा कि, 'ऐसा प्रतीत होता है कि झारखंड सरकार न केवल टालमटोल कर रही है, बल्कि न्यायालय के साथ छल भी कर रही है. हमारा मानना है कि राज्य सर्वोच्च न्यायालय के 29 अप्रैल के आदेश की स्पष्ट अवमानना कर रहा है.' पीठ ने कहा, 'हम झारखंड के मुख्य सचिव को निर्देश देते हैं कि वे 8 अक्टूबर को अदालत में उपस्थित होकर कारण बताएं कि उनके खिलाफ अवमानना के लिए कार्रवाई क्यों न की जाए.'

सरंडा जंगल झारखंड के पश्चिमी सिंहभूम जिले में स्थित है. यह क्षेत्र अपनी जैव विविधता, हाथी कॉरिडोर और लोहे के अयस्क के बड़े भंडार के लिए जाना जाता है. सुप्रीम कोर्ट ने साफ कर दिया कि और देरी बर्दाश्त नहीं की जाएगी और आदेशों का सख्ती से पालन होना चाहिए. पीठ ने राज्य के वकील से कहा कि अगर 8 अक्टूबर तक सारंडा वन को अभयारण्य घोषित करने संबंधी अधिसूचना जारी नहीं की जाती है तो मुख्य सचिव जेल जाएंगे और सुप्रीम कोर्ट वन को अभयारण्य घोषित करने के लिए परमादेश जारी करेगा।

क्या है L-Arginine?

- यह एक अर्ध-आवश्यक अमीनो एसिड है, जिसका मतलब है कि शरीर इसे खुद बना सकता है, लेकिन कभी-कभी इसे आहार या सप्लीमेंट के माध्यम से लेना आवश्यक हो सकता है।

- यह नाइट्रिक ऑक्साइड के उत्पादन में मदद करता है, जो रक्त वाहिकाओं को चौड़ा करने में सहायक होता है।

स्वास्थ्य लाभः

1. हृदय स्वास्थ्यः

- L-Arginine रक्त प्रवाह को बेहतर बनाता है, जिससे हृदय की सेहत में सुधार होता है।

- यह उच्च रक्तचाप को नियंत्रित करने में मदद कर सकता है।

2. एथलेटिक प्रदर्शनः

- यह सहनशक्ति को बढ़ाने में मदद करता है, जिससे व्यायाम के दौरान थकान कम होती है।

- मांसपेशियों की रिकवरी में भी सहायक होता है।

3. विकास और मरम्मतः

- यह मांसपेशियों के विकास और मरम्मत में मदद करता है, खासकर व्यायाम के बाद।

4. प्रतिरक्षा प्रणालीः

- L-Arginine प्रतिरक्षा प्रणाली को मजबूत करने में मदद कर सकता है।

सेवन की विधिः

- कब लेना है ?

- आमतौर पर, L-Arginine को खाली पेट लेना सबसे अच्छा होता है, ताकि इसका अवशोषण बेहतर हो सके।

- इसे सुबह या व्यायाम से पहले लिया जा सकता है, लेकिन सही समय आपके व्यक्तिगत लक्ष्यों और दिनचर्या पर निर्भर करता है।

- डोज़ः

- सामान्यतः 3-6 ग्राम प्रतिदिन की खुराक होती है, लेकिन यह व्यक्तिगत स्वास्थ्य स्थिति पर निर्भर करता है।

संभावित साइड इफेक्ट्सः

- कुछ लोगों को पेट में दर्द, दस्त, या मिचली जैसी समस्याएं हो सकती हैं।

- यदि कोई व्यक्ति हृदय रोग, उच्च रक्तचाप, या अन्य स्वास्थ्य समस्याओं से ग्रस्त है, तो उन्हें इसे लेने से पहले डॉक्टर से सलाह लेनी चाहिए।

सावधानियाँः

- गर्भवती या स्तनपान कराने वाली महिलाओं को इसे लेने से पहले डॉक्टर से परामर्श करना चाहिए।

- यदि कोई व्यक्ति अन्य दवाएं ले रहा है, तो L-Arginine के साथ संभावित इंटरैक्शन के लिए डॉक्टर से बात करें।

निष्कर्षः

L-Arginine एक प्रभावी सप्लीमेंट है जो हृदय स्वास्थ्य और एथलेटिक प्रदर्शन में सुधार कर सकता है। लेकिन इसे लेने से पहले व्यक्तिगत स्वास्थ्य स्थिति और जरूरतों के अनुसार डॉक्टर से सलाह लेना हमेशा बेहतर होता है।

डिप्टी कमिश्नर साक्षी साहनी को माननीय सुप्रीम कोर्ट के चार्टर्ड अकाउंटेंट और वरिष्ठ वकीलों ने स्कूली विद्यार्थियों के लिए 1500 से अधिक किटें भेंट कीं

अमृतसर, 18 सितंबर (साहिल बेरी)

बीते कुछ दिन पहले ज़िला अमृतसर के कुछ क्षेत्रों में रावी नदी के साथ लगते गांवों में आई भयानक बाढ़ के कारण सरकारी स्कूलों में शिक्षा प्राप्त कर रहे विद्यार्थियों के स्कूल बैग, किताबें और कॉपियां पूरी तरह से नष्ट हो गई थीं, जिसके चलते विद्यार्थियों को शिक्षा प्राप्त करने में कठिनाई हो रही थी। इस स्थिति को देखते हुए डिप्टी कमिश्नर अमृतसर श्रीमती साक्षी साहनी ने बाढ़ प्रभावित क्षेत्रों के सभी सरकारी स्कूलों के विद्यार्थियों को स्कूल बैग किटें उपलब्ध करवाने का ऐलान किया।

इस दौरान बाढ़ प्रभावित क्षेत्रों के सरकारी स्कूलों का ज़मीनी स्तर पर किए गए सर्वेक्षण के बाद ज़िला शिक्षा अधिकारी (सीनियर सेकेंडरी) अमृतसर श्री राजेश कुमार शर्मा तथा ज़िला शिक्षा अधिकारी (एलीमेंट्री) अमृतसर सरदार कंवलजीत सिंह संधू द्वारा दी गई रिपोर्ट के अनुसार बाढ़ के कारण 10 हज़ार से अधिक विद्यार्थियों को स्कूल बैग किटों की आवश्यकता बताई गई। इस संबंध में कार्रवाई करते हुए डिप्टी कमिश्नर मैडम साक्षी साहनी ने सरकारी स्कूलों के विद्यार्थियों को स्कूल बैग किटें प्रदान करने के लिए रेड क्रॉस अमृतसर के सचिव श्री सैमसन मसीह को समाजसेवी संस्थाओं के साथ तालमेल कर आवश्यक संख्या में स्कूल बैग किटें खरीद कर जरूरतमंद विद्यार्थियों तक पहुंचाने के आदेश दिए, ताकि किसी भी विद्यार्थी को शिक्षा प्राप्त करने में कोई कठिनाई न हो।

उल्लेखनीय है कि बाढ़ के कारण सरकारी स्कूलों के हज़ारों विद्यार्थी स्कूल बैग नष्ट होने की वजह से शिक्षा प्राप्त करने में मुश्किलों का सामना कर रहे हैं। इसी कड़ी में ज़िला प्रशासन और रेड क्रॉस के प्रयासों से माननीय सुप्रीम कोर्ट के चार्टर्ड अकाउंटेंट और वरिष्ठ वकीलों की ओर से स्कूली विद्यार्थियों के लिए 1500 से अधिक किटें (जिनमें स्कूल बैग, कॉपियां, पेंसिलें, रंग, शार्पनर, रबर, पानी की बोतल और अन्य शैक्षिक सामग्री शामिल है) भेजी गईं। इन किटों को डिप्टी कमिश्नर अमृतसर मैडम साक्षी साहनी के दिशा-निर्देशों अनुसार श्री राजेश कुमार शर्मा डी.ई.ओ. (सीनियर सेकेंडरी), सरदार कंवलजीत सिंह डी.ई.ओ. (एलीमेंट्री), राजेश खन्ना डिप्टी डी.ई.ओ. को श्री सैमसन मसीह सचिव रेड क्रॉस, मैडम रश्मि जैन चार्टर्ड अकाउंटेंट माननीय सुप्रीम कोर्ट, एडवोकेट एच.सी. भाटिया, एडवोकेट सुशील वर्मा, एडवोकेट राजमणि जिंदल, एडवोकेट नरेंद्र आहूजा और मैडम वर्सा जैन (सभी सदस्य दिल्ली जी.एस.टी. प्रोफेशनल ग्रुप) की ओर से स्कूली विद्यार्थियों को वितरित करने के लिए भेंट किया गया।

इस अवसर पर श्री परमिंदर सिंह ज़िला मीडिया कोऑर्डिनेटर, सुपरिंटेंडेंट विनोद कुमार, सिशपाल सिंह सीनियर क्लर्क, मुकुल कुमार, मिस नेहा समेत अन्य उपस्थित रहे।

कांग्रेस ने मोहन सरकार के खिलाफ अविश्वास प्रस्ताव पेश किया: क्या बीजद इसका समर्थन करेगा?

मनोरंजन सासमल, स्टेट हेड ओड़िशा

भुबनेश्वर : कांग्रेस ने सरकार के खिलाफ अविश्वास प्रस्ताव ला रही है। इस संबंध में, कांग्रेस विधायकों ने एक पत्र सौंपकर मोहन सरकार के खिलाफ अविश्वास प्रस्ताव पेश किया है। हालाँकि, कांग्रेस नेताओं का दावा है कि 15 विधायकों ने इस अविश्वास प्रस्ताव का समर्थन किया है। दूसरी ओर, बीजद ने अभी तक अविश्वास प्रस्ताव के प्रति अपना समर्थन व्यक्त नहीं किया है।इस संबंध में, विपक्षी नेता सचेतक प्रमिला मलिक ने कहा, ₹कांग्रेस नेताओं ने बीजद के साथ इस पर चर्चा नहीं की है। लेकिन हम विधानसभा में अपना मुद्दा उठाएँगे।₹ इस बीच, कांग्रेस विधायक रामचंद्र कदम और जयपुर विधायक तारा प्रसाद बहिनीपति ने मोहन सरकार के खिलाफ अविश्वास प्रस्ताव लाने की जानकारी दी है। वहीं, अगर कांग्रेस अविश्वास प्रस्ताव लाती है तो यह हंसी का पात्र बनेगा। भाजपा विधायक जय नारायण मिश्रा ने कहा कि बिना संख्याबल के अविश्वास प्रस्ताव लाना कांग्रेस का केवल मीडिया में चर्चा में रहने का हथकंडा है।

निगम द्वारा पी.एम. स्वनिधि योजना के तहत रेहड़ी-फड़ी वालों को सब्सिडी सहित लोन देने के लिए लोक कल्याण मेले का आयोजन

अमृतसर, 18 सितंबर (साहिल बेरी)

स्थानीय सरकार विभाग के निर्देशों के अनुसार और पी.एम. स्वनिधि योजना को केंद्र में रखते हुए, नगर निगम अमृतसर द्वारा लोक कल्याण मेला आयोजित किया गया है। यह मेला नगर आयुक्त बिक्रमजीत सिंह शेरगिल और संयुक्त आयुक्त डॉ. जय इंदर सिंह की अगुवाई में 17 सितंबर 2025 से 2 अक्टूबर 2025 तक लगाया जा रहा है।

इस मेले के माध्यम से शहर में काम कर रहे रेहड़ी-फड़ी वालों को सब्सिडी के साथ लोन प्रदान किया जा रहा है:

- पहला लोन: ₹15,000
- दूसरा लोन: ₹25,000
- तीसरा लोन: ₹50,000

यह मेला नगर निगम, अमृतसर के रणजीत एवेन्यू कार्यालय में लगाया जा रहा है। 18 सितंबर 2025 तक लगभग 200 रेहड़ी-फड़ी वालों के फॉर्म भरे जा चुके हैं। जिन लोगों ने पहले लिए गए लोन की किस्तें चुका दी हैं, उन्हें अब ₹30,000 की क्रेडिट लिमिट दी जा रही है।

साथ ही, रेहड़ी-फड़ी वालों के परिवारों को निम्न योजनाओं से भी जोड़ा जा रहा है:

- बीमा योजनाएं
- प्रधानमंत्री आवास योजना (PMAY)
- जननी सुरक्षा योजना
- पेंशन योजनाएं
- डिजिटल सेवाएं

एनयूएलएम (NULM) के तहत कार्यरत तरनप्रीत कौर, हरिंदर सिंह और जसप्रीत सिंह इस मेले में लोगों की सहायता कर रहे हैं।

नगर निगम ने शहर के सभी रेहड़ी-फड़ी वालों से अपील की है कि वे इस सरकारी योजना का अधिक से अधिक लाभ उठाएं।

पराली जलाए बिना गेहूं की बुवाई के लिए किसानों की सहायता करने हेतु जिला प्रशासन ने खोला किसान सहायता केंद्र

जिले में पराली प्रबंधन के लिए हर तरह की मशीनरी उपलब्ध – डिप्टी कमिश्नर

अमृतसर, (साहिल बेरी)

धान की कटाई शुरू होते ही जिला प्रशासन ने पराली को जलाए बिना अगली फसल की बुवाई करने के लिए किसानों की सहायता हेतु विशेष पहल शुरू कर दी है। इसके तहत जो किसान मंडी में धान लेकर आ रहे हैं, उन्हें फोन पर पराली प्रबंधन के लिए खेती उपकरण उपलब्ध कराने की पेशकश की जा रही है। इसके साथ ही जिला प्रशासकीय कॉम्प्लेक्स में किसान सहायता केंद्र खोला गया है।

यह जानकारी देते हुए डिप्टी कमिश्नर श्रीमती साक्षी साहनी ने बताया कि इस सहायता केंद्र का फोन नंबर 0183-2220159 है, जिस पर फोन कर कोई भी किसान पराली प्रबंधन के लिए मदद मांग सकता है। उन्होंने कहा कि हमारे अधिकारी गांव स्तर पर भी पराली को जलाए बिना फसल की बुवाई को बढ़ावा देने के लिए मौजूद हैं। उन्होंने बताया कि इस बार जिले में पराली प्रबंधन के लिए हर तरह की मशीनरी उपलब्ध है, ताकि किसानों को किसी तरह की परेशानी न हो।

मुख्य कृषि अधिकारी श्री बलजिंदर सिंह भुल्लर ने बताया कि हम किसानों से संपर्क कर रहे हैं ताकि उनकी जरूरत के अनुसार मशीनरी उपलब्ध करवाई जा सके। उन्होंने कहा कि जिन किसानों ने पिछले वर्षों में पराली नहीं जलाई, उनके खेतों में फसलों की पैदावार लगातार बढ़ रही है। उन्होंने अन्य किसानों से भी अपील की कि वे इस बार यह कदम उठाकर इसके चौंकाने वाले नतीजे देखें।

सहायक कृषि इंजीनियर मनदीप सिंह ने बताया कि जिले में पराली की गांठें बनाने के लिए 72 बेलर और पराली एकत्र करने के लिए 62 रेक उपलब्ध हैं। इसके अलावा खेत में पराली को मिलाने या पराली के साथ ही गेहूं की बुवाई करने के लिए 4290 इन-सीटू मशीनें उपलब्ध हैं, जिनमें 2730 सुपर सीडर, 671 ज़ीरो टिल ड्रिल, 5 स्मार्ट सीटर, 119 हैपी सीडर, 41 सरफेस सीडर, 124 पलटावे हल, 106 मल्चर, 236 पैडी स्ट्रॉ चॉपर आदि मशीनें जिले में सब्सिडी पर दी गई हैं। उन्होंने बताया कि यह सारी मशीनरी अब पराली प्रबंधन के लिए उपयोग में लाई जा रही है।

इस मौके पर अतिरिक्त डिप्टी कमिश्नर श्री रोहित गुप्ता, अतिरिक्त डिप्टी कमिश्नर श्रीमती परमजीत कौर, जिला फूड सप्लाई कंट्रोलर श्री अमनजीत सिंह, जिला मंडी अधिकारी श्री अमनदीप सिंह और अन्य अधिकारी उपस्थित थे।

बाढ़ पीड़ितों को महंगे इलाज के लिए प्राथमिकता के आधार पर 10 लाख रुपये तक का मुफ्त स्वास्थ्य बीमा 2 अक्टूबर से शुरू होगी मुहिम: धालीवाल

कतार में खड़े हर अंतिम बाढ़ पीड़ित को फसलें, घर और पशुओं का मुआवजा देने के लिए मान सरकार वचनबद्ध : धालीवाल

धालीवाल ने बाढ़ पीड़ितों की सेहत और मुआवजे को लेकर उठाई गई शंकाओं को सुनकर किया समाधान

अमृतसर/अजनाला, (साहिल बेरी)

रावी दरिया में आई भयंकर बाढ़ के कारण धुसी बांध में हुए कटाव से सबसे पहले पानी की मार झेलने वाले हल्का अजनाला के अंतिम गांव ₹घोहनवाला₹ में आज हल्का विधायक एवं पूर्व कैबिनेट मंत्री सरदार कुलदीप सिंह धालीवाल ने बाढ़ प्रभावितों की प्राथमिक स्वास्थ्य सेवाएं बहाल करने हेतु खुद सिविल डिस्पेंसरी की सफाई करवाई। स्वास्थ्य सुरक्षा के मद्देनजर घोहनवाला के नजदीकी गांव ₹गग्गड़₹ में मच्छर मारने की दवा की मशीन से खुद फॉगिंग भी की।

जब बाढ़ पीड़ितों द्वारा संभावित बीमारियों के महंगे इलाज की चिंता उठाई गई, तो श्री धालीवाल ने उन्हें भरोसा दिलाया कि पहले तो वे खुद प्रभु से अरदास करते हैं कि किसी भी बाढ़ पीड़ित को कोई गंभीर बीमारी न हो। लेकिन अगर कोई गंभीर रोग होता भी है, तो महंगे निजी अस्पतालों में इलाज के लिए किसी व्यक्ति को पैसों की कमी नहीं आने दी जाएगी।

उन्होंने घोषणा की कि अगले महीने *2 अक्टूबर से पंजाब के हर परिवार को – चाहे वह निजी या सरकारी नौकरी में हो, पेंशनर, इनकम टैक्स देने वाला, अमीर व्यापारी या दुकानदार हो – 10 लाख रुपये तक का **मुफ्त इलाज बीमा* देने के लिए "मुख्यमंत्री पंजाब मुफ्त इलाज बीमा योजना" की औपचारिक शुरुआत की जा रही है।

इस योजना के तहत हल्का अजनाला के 100 बाढ़ प्रभावित गांवों समेत पंजाब भर के 2303 चिन्हित बाढ़ प्रभावित गांवों को प्राथमिकता के आधार पर इस योजना में शामिल किया जाएगा और उनके बीमा कार्ड बनाए जाएंगे।

पूर्व मंत्री धालीवाल ने यह भी भरोसा दिलाया कि स्वास्थ्य सुरक्षा के तहत हरेक बाढ़ प्रभावित गांव को मजबूत करने के लिए फॉगिंग शुरू की जा चुकी है और मुफ्त इलाज के लिए मेडिकल कैंप भी लगातार लगाए जा रहे हैं। आपातकालीन परिस्थितियों में मरीजों को दूर-दराज के शहरों या महानगरों में इलाज के लिए ले जाने हेतु *550 मेडिकल एंबुलेंसों की तैनाती* की गई है। उन्होंने यह भी स्पष्ट किया कि आज से अगले 5 दिनों तक गांवों, खेतों, नहरों, स्वास्थ्य केंद्रों, स्कूलों और अन्य सरकारी इमारतों को *24 सितंबर तक गंदगी और मलबे से मुक्त करने का लक्ष्य* रखा गया है।

बाढ़ पीड़ितों की छोटी-बड़ी शंकाओं को दूर करते हुए उन्होंने स्पष्ट किया कि *मुख्यमंत्री पंजाब श्री भगवंत सिंह मान* की अगुवाई में *आम आदमी पार्टी की सरकार* इस कठिन समय में बाढ़ पीड़ितों के साथ एक मजबूत चट्टान की तरह खड़ी है।

फसलों की बर्बादी, पशुओं का नुकसान, और टूटे हुए घरों का मुआवजा देने के लिए सरकार कतार में खड़े अंतिम पीड़ित व्यक्ति तक हर हाल में मुआवजा पहुंचाने के लिए वचनबद्ध है।

पुलिस अपनी ही सुरक्षा नहीं कर सकती, तो क्या राज्य की जनता की सुरक्षा करेगी?

मनोरंजन सासमल, स्टेट हेड ओड़िशा

भुवनेश्वर:- महिलाओं पर अत्याचार जंगल की आग की तरह बढ़ रहे हैं। महिलाओं के साथ सामूहिक बलात्कार और हत्या आम घटनाएँ हो गई हैं। बलिहारचंडीपुर में हुए सामूहिक बलात्कार के बाद, भुवनेश्वर से महिला ट्रैफिक कांस्टेबल शुभमित्रा के लापता होने और क्योंझर में उसका शव मिलने के संबंध में प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष के निर्देश पर श्रीमती जयश्री पटनायक की अध्यक्षता में एक तथ्यान्वेषी समिति का गठन किया गया। इस तथ्यान्वेषी समिति की ओर से कांग्रेस भवन में एक प्रेस वार्ता आयोजित की गई।

मीडिया को संबोधित करते हुए अध्यक्ष पटनायक ने कहा कि राज्य में महिलाओं पर हो रहे अत्याचारों को शब्दों में बयां नहीं किया जा सकता। राज्य में हर दिन सामूहिक बलात्कार, हत्या, अपहरण आदि जैसी जघन्य घटनाएँ हो रही हैं। लेकिन सरकार इन सबको रोकने में पूरी तरह विफल रही है, पुलिस बल की महिलाओं को न्याय नहीं दिला पा रही है। लेकिन कांग्रेस देश की सभी महिलाओं के लिए लड़ रही है और लड़ती रहेगी। अध्यक्ष ने कहा कि कांग्रेस महिला मोर्चा मृतक कांस्टेबल शुभमित्र के परिवार के लिए सरकार से 50 लाख रुपये और परिवार के एक सदस्य को नौकरी देने की मांग कर रहा है।

एक अन्य कांग्रेस नेता निरुपमा पात्रा ने महिला विरोधी रवैये के लिए सरकार की कड़ी आलोचना की और कहा कि किसी भी पीड़ित महिला को, चाहे वह सामान्य हो या गरीब छात्रा, आज तक न्याय नहीं मिला है। जैसे बेटा पाकर बेटा प्यार में पागल हो जाता है, सत्ताधारी दल सत्ता में आने के बाद उसी तरह उसका इस्तेमाल कर रहा है। उनके लिए पैसा कमाने के अलावा और कुछ महत्वपूर्ण नहीं है। यहाँ तक कि महिलाएँ भी सुरक्षित नहीं हैं। दिनदहाड़े, आबादी वाले इलाकों और पर्यटन स्थलों पर सामूहिक बलात्कार हो रहे हैं। खोड़ पुलिस विभाग की एक महिला ट्रैफिक कांस्टेबल 11 दिनों से लापता है और अगले दिन उसका शव मुख्यमंत्री के जिले क्योंझर में जमीन के नीचे मिला। उसकी हत्या उसके ही विभाग के कर्मचारियों द्वारा की जा रही है। पुलिस सुरक्षित नहीं है, वे आम महिलाओं की सुरक्षा कैसे कर सकते हैं? पुलिस वर्तमान सरकार का हथियार बन गई है। कांग्रेस ने हमेशा महिलाओं के लिए संघर्ष किया है। हमारी सरकार के दौरान, अंजना की घटना को लेकर भाजपा और बीजद के बीच मतभेद हो गए थे, जिसने पूरे राज्य को हिलाकर रख दिया था। हमारे तत्कालीन मुख्यमंत्री जानकी बल्लभ पटनायक ने नैतिकता के आधार पर इस्तीफा दे दिया था। अब भाजपा सरकार की नैतिकता कहाँ चली गई है, श्रीमती पात्रा ने सरकार की कड़ी आलोचना की है।

वरिष्ठ कांग्रेस नेता प्रणति मिश्रा ने कहा कि भाजपा सरकार जनता का विश्वास पूरी तरह खो चुकी है। इसलिए सरकार को तुरंत इस्तीफा दे देना चाहिए। इस प्रेस कॉन्फ्रेंस में तथ्यान्वेषी समिति की अध्यक्ष जयश्री पटनायक के साथ समिति की अन्य सदस्य प्रणति मिश्रा, सुनीता विशाल, कुसुम प्रधान, अमिता विशाल, निरुपमा पात्रा, गीतांजलि मोहंती, शिली सेठी और श्रेयस्मिता पांडा मौजूद थीं।

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी की लंबी आयु के लिए एक समाज श्रेष्ठ समाज संस्था ने पौधारोपण किया

परिवहन विशेष न्यूज

नई दिल्ली। एक समाज श्रेष्ठ समाज संस्था अध्यक्ष योगेन्द्र कुमार साहू सदस्य सुनीता तिवारी के नेतृत्व में संस्था के माध्यम से प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के जन्मदिन के अवसर पर संस्था पदाधिकारियों ने हल्द्वानी आर्मी कैंट में पौधारोपण कर प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी की लंबी आयु के लिए भगवान से प्रार्थना की

इस दौरान एक समाज श्रेष्ठ समाज संस्था मार्गदर्शक पूर्णिमा रजवार सदस्य मनीष साहू ने संयुक्त रूप से कहा कि प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने भारत देश को विश्वगुरु बनाने के लिए अपने आपको भारत माता को समर्पित कर आस्था निष्ठा श्रद्धा भाव से दृढ़ संकल्प शक्ति के साथ रात दिन कड़ी मेहनत कर भारत देश को लगातार हर क्षेत्र में प्रगती उन्नति की ओर आगे बढ़ाने का कार्य कर रहे है जिससे पूरी दुनिया में भारत देश का मान सम्मान बहुत तेजी से बढ़ रहा है क्योंकि प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्व में भारत ने विश्व मित्र की भावना से भारतहित कार्य करते हुए पूरी दुनिया का ध्यान अपनी ओर आकर्षित किया है इसलिए अब पूरी दुनिया हर क्षेत्र में भारत देश का लोहा मान रही है जिससे विश्व के पटल पर प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने शक्तिशाली भारत के रूप में देश को एक नई पहचान दिलाकर अनेक कीर्तिमान स्थापित किए है जो हम सभी भारतीयों के लिए बहुत गर्व की बात है और इससे यह बात भी साबित होती है की जो व्यक्ति राष्ट्र और समाज के प्रति सेवा करने का अपना लक्ष्य निर्धारित करके आगे बढ़ता है तो वही व्यक्ति इतिहास रचता है और प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के द्वारा किए जा रहे राष्ट्रहित कार्यों को देखकर हम सभी को धर्महित समाजहित भारतहित में कार्य करने की प्रेरणा के साथ नई ऊर्जा मिलती है

इस दौरान पौधारोपण करने में सैन्य अधिकारियों सहित भारतीय सेना के जवानों के साथ संस्था अध्यक्ष योगेन्द्र कुमार साहू कोषाध्यक्ष बलराम हालदार मार्गदर्शक पूर्णिमा रजवार धर्मपाल सिंह मनीष साहू दिव्यांशी जोशी रेनू कांडपाल सुनीता तिवारी जया जोशी मीरा श्रोत्रिय नमन तिवारी सूरज मिस्त्री अंशिका साहू निखिल कुमार अमन कुमार सुशील राय दीपक कुमार सूरज कुम्हार मुकेश कुमार आदि लोग उपस्थित रहे

एक शाम गौमाता के नाम जागरण 23 को

बालाजी नगर, जवाहर नगर स्थित श्री आईजी गौशाला में 'एक शाम गौमाता के नाम' विशाल जागरण का आयोजन आगामी 23 सितंबर को किया जाएगा। आज यहाँ श्री आईजी गौशाला के अध्यक्ष मंगलाराम पंवार व सचिव हुक्माराम सानपुरा द्वारा जारी प्रेस विज्ञप्ति के अनुसार, अवसर पर महाप्रसादी का आयोजन किया जाएगा। जागरण में राजस्थान के प्रसिद्ध गायक अनिता जांगिड़ , रमेश सुथार एण्ड पार्टी द्वारा भजन प्रस्तुत किए जाएँगे। कार्यक्रम राठौड़ साउंड व सीधा प्रसारण बीआर एस राजस्थानी मीडिया द्वारा किया जाएगा। सभी गौभक्तों से कार्यक्रम में अधिक से अधिक संख्या में भाग लेने का आग्रह किया गया।

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक एवं संपादक संजय कुमार बाटला द्वारा इम्प्रेशंस प्रिंटिंग एंड पैकेजिंग लिमिटेड, सी-18,19,20 सेक्टर 59, नोएडा (उत्तर प्रदेश) से मुद्रित एवं 3, प्रियदर्शनी अपार्टमेंट ए-4, पश्चिमी विहार, नई दिल्ली- 110063 से प्रकाशित। सम्पर्क : 9212122095, 9811902095. newstransportvishesh@gmail.com

(इस अंक में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं संपादन पी.आर.बी. एक्ट के अंतर्गत उत्तरदायी) किसी भी कानूनी विवाद की स्थिति में निपटारा दिल्ली के न्यायालय के अधीन होंगे। RNI No :- DELHIN/2023/86499. DCP Licensing Number F.2 (P-2) Press/2023